॥ सू.मा ॥ री ॥ जे कमला उर तें न हिं टारे ॥ ४८ ॥ जे पद परसि सुरसरी आई ॥ ति
॥ १०२ हूं लोक कहूं वंदन बडाई ॥ ४९ ॥ ते पद वरुण हाथ लें धोए ॥ जन्म
जन्म के पातक खोए ॥ ५० ॥ कृपासिंधु अब मरण तुम्हारे ॥ इ
हि कारण अपराध विचारे ॥ ५१ ॥ अब चलियें हरि नंद हि दे
खन ॥ वैठे नंदराय वरभेखन ॥ ५२ ॥ नयरांनी सब आगें ठाढी
मुख मुख तें सब अस्तुति काढी ॥ ५३ ॥ पाइन परी कृष्ण के रां
नी ॥ धन्य जन्म सब हूनि कहि वांनी ॥ ५४ ॥ धन्य नंद धनि ध
न्य जसोदा ॥ धनि धनि तुमें खिलावत गोदा ॥ ५५ ॥ धनि व्रज
धनि गोकुल की नारी ॥ पूरन ब्रह्म जहां वपुधारी ॥ ५६ ॥ शेषस
हस्र मुख वरनी न जाई ॥ सहस रूप की करें बडाई ॥ ५७ ॥ देषि
नंद तब करत विचारा ॥ यह कोऊ आहि बडो अवतारा ॥ ५८
नंद हि मन प्रति हरख बढायो ॥ कृपासिंधु मेरे घर आयो ॥
५९ ॥ वरुण हि हरि दीनी लोक बडाई ॥ तुमही हो पाताल के राई ॥
६० ॥ कह्यो रे तमो हि लोक बडाई ॥ वृंदावन राज करों सदाई
६१ ॥ वरुण थांपि नंद हि घर ल्याए ॥ व्रज हि गोप सब देखन ।
आये ॥ ६२ ॥ नंद हि पूछत सब मिलि वाता ॥ हम प्रति दूखित
भए सुनि गाथा ॥ ६३ ॥ कालिंदि कादशि व्रत में कीनो ॥ निशिजा
गरन नें मम में लीनो ॥ ६४ ॥ तीनि पहर निसि जागि विहाई ॥ तब
लीनी में महरि बुलाई ॥ ६५ ॥ एक रहें उद्धार शी सुनाई ॥ ताका
रन में करी बडाई ॥ ६६ ॥ रेनि अछत में गयो जमुन जल ॥ एक
हें उद्धार दशी कियो पल ॥ ६७ ॥ गयो जमुन भीतर कटि लों भरि
वरुण दूत मोहि तब लें गये धरि ॥ ६८ ॥ तहां तें कृष्ण जाय मो
हि ल्यायो ॥ यह कोउ बडो पुरुष है आयो ॥ ६९ ॥ इहि की महिमा
कोउ न जांनें ॥ वरुण की स्तुति मुख इन हि वखानें ॥ ७० ॥ रांनी स
हित पहो वरणन तर ॥ वंदन बार बांधि महलन घर ॥ ७१ ॥ मे
टीं कह्यों सत्य करि मांनों ॥ इनको नर देही जिनि जांन्यो ॥ ७२ ॥
जसोमति सुनि चक्रत यह वांनी ॥ कहत कहां यह अकथक
हांनी ॥ ७३ ॥ व्रजनरनारि सुनत यह गाथा ॥ इहि तें हम सब भ
ए सनाथा ॥ ७४ ॥ माया मोह का रिसवें भुलाए ॥ नंद हि वरुण लो
क तें ल्याए ॥ ७५ ॥ नंद एकादशी वरुण सुनाई ॥ कहत सुन
त सब के मन भाई ॥ ७६ ॥ जो पद कों यह सुनें सुनावें ॥ सो ई ए
कादशी को फल पावें ॥ ७७ ॥ यह प्रताप नंद हि दिखरायो ॥ सूर

www.vallabhacharyakrupa.org

दासप्रभुगोकुलरायो ॥ ९ ॥ राग कान्हरो ॥ नंदराइकहुनिजसोदा
रांनी मोवस्रजननिसिगयेअकेलेपेंठेजाइजमुनकेपांनी ॥ १ ॥
अवकेंकुसलपरीपुन्पननेंद्विजनकरोंकछुदांन ॥ वोलिले
हुवाजनेवजावेंदेंहुमिठाईपांन ॥ २ ॥ गावहुमंगलनारिव
धाईवाजतनंददुवार ॥ सुनोसूरयहकहुनिजसोदानंदव
चेयावार ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ कहतनंदजसोमतिसुनिवात
अवअपुनमनसोचकरतिकतिजाकेत्रिभुवनपतिसेंता
त ॥ १ ॥ गर्गमुनाइकहीजोवांनी सोईसोईप्रगटहोतिहेंजा
त ॥ मायारूपमोहनीलाईडगरिभुलेंसवेंएवात ॥ २ ॥ इहितेंओ
रनहीकोऊसमरथएईहेंसवहूनिकेनाथ ॥ सूरस्यांमखेला
ततेआएमांगतमांखनदेंमाहाथ ॥ ३ ॥ नंदजूकोपूजासमय
वर्णनं ॥ राग रामकली ॥ कपिअस्नाननंदघरआए ॥ लेंजल
जमुनाकोंभरिझारीकुंजसुमनवहुल्याए ॥ १ ॥ पाइधोयमंदि
रपगधारेप्रभुपूजाजियजांनि ॥ अस्थललीपिपात्रसवधो
एकाजदेवकीकांनि ॥ २ ॥ वेंठेनंदकरतहरिपूजाविधिव
तसोंवहुभांति ॥ सूरस्यांमखेलतआएदेखतपूजाकांति
॥ ३ ॥ राग गूजरी ॥ नंदकरतपूजाहरिदेखत ॥ घंटावजायदेवअन्ह
वायोंचंदनलेंभेटत ॥ १ ॥ पटअंतरदेंभोगलगायोंआरतिक
रीवनाइ ॥ कहतकांन्हवावातुमअरप्योंदेवनहीकछुषात ॥ २ ॥
चितेंरहेतवनंदमहरिमुखसुनोंकांन्हकीवात ॥ सूरस्यांम
देवनकरजोंरोंकुसलरहेंजिहिगात ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ जसो
दादेखतहीढिगठाढी ॥ वालकदिसाअविलोकिस्यांमकी
प्रेममगनचितवाढी ॥ १ ॥ पूजाकरतनंदरहेंवेंठेध्यानसमा
धिलगाई ॥ सालिगरांमभेलिमुखभीतरवेंठिरहेंजदुराई ॥ २ ॥
घोजततनंदचकृतचहूंदिसतेंआचिरजसोंकछुभाइ ॥ कहांग
योंमेरइष्टदेवताकोलेंगयोंउठाइ ॥ ३ ॥ जवहीकांन्हअपने
मुखमेंल्योंदेखोंदेववडाई ॥ तवजसुमतिसुतमुखहिवताव
तदेखोंवदनकन्हाई ॥ ४ ॥ देखेंनंदसिलानहिंआगेंतवमन
अचरजपाए ॥ मुखकितमेलिदेवताराखेवकहालेंसवेंनसा
ए ॥ ५ ॥ वदनपसारिसिलाजवदेख्योंतीन्योंभवनदिखाए ॥
सूरनिरखिमुखवंदचकृतभएकछुवचननहिंआए ॥ ६ ॥
राग धनाश्री ॥ हसतगोपालनंदकेआगेंनंदसरूपनजांन्यों ॥

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा॥ निर्गुन ब्रह्म सगुन लीला धरि सोई सुत करि मांन्यों ॥१॥ एकस
॥१०२॥ में पूजा के औसर नंद समाधि लगाई ॥ सालिग्राम मेलि मु-
ख भीतर बैठि रहे जदुराई ॥२॥ ध्यांन विसर्जन कियों नंद जू मू-
रति आगें नाहीं ॥ कहैं गुपाल देखवतां कहां भए यह विसमा-
य मन मांहीं ॥३॥ मुख तें लेहु काढि बाबा जू कह्यौ नंद पुनि गा-
या ॥ सूरदास मैं लीला देखी राई अव गति ब्रजनाथ ॥४॥
॥६२५॥ अथ पनघट लीला वर्णनं ॥ राग अडानो ॥ चटकीलो प-
ट लपटानो कटि तट बंसी बट जमुना के तट नागर नवल
नट ॥ मुकट लटक औ भ्रकुटी मटक लोल कुंडलन नैंन आ-
छे मुख बरन की लकुट ॥१॥ टटकीली बनमाल कर द्रुम डार ग-
हें ठाढे नंदलाल छबि छाय रही घट घट ॥ सूरदास प्रभु के
नैंन देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत लें निपट सोंधे की लपट
॥२॥ राग गौरी ॥ पनघट रोकें रहत कन्हाई ॥ जमुना जल कोऊ
भरन न पावे देखत हीं फिरि जाई ॥१॥ तब ही स्याम एक बुद्धि
उपाई आपुन रहे छिपाई ॥ तट ठाढे जो सखा संग के तिन कों
लियों बुलाई ॥२॥ बैठायौ ग्वालिन कूं द्रुम तर आपुन द्रुम तर
देखत ॥ बड़ी बार भई कोउ न आई सूर स्याम मन लेखत ॥३॥
राग धनाश्री ॥ ब्रज गोउ कोऊ चलन न पावत ॥ ग्वाल सखा ली-
नें संग डोलत रोकें जहां तहां धावत ॥१॥ काहू कूं गारी दें
भाजत काहू कों अंक मभरि लावत ॥ काहू की इंडुरी फटका-
रत काहू की गागरी ढरकावत ॥२॥ काहूं नहीं मानत ब्रज भी-
तर नंद सुवन कों पूत कहावत ॥ सूरस्याम पीतांबर कांछे
जमुना के तट मुरली बजावत ॥३॥ राग देवगंधार ॥ जुवती ए-
क आवत देखी स्यांम ॥ द्रुम की ओट रहे हरि आपुन जमुना
तट गई बांम ॥१॥ जल हिलोरि गागरि ना गरि भरि जब हीं सीस
उठायों ॥ घर कों चली जाय ता पाछें सिर ते घट ढरकायों ॥२॥
चतुर ग्वालि कर गह्यौ स्याम को कनक लकुटिया पाइ ॥ औ-
रनि सों करि हैं लंगराई मो सों लगत कन्हाई ॥३॥ गागरि लें हं-
सि देन ग्वालि करि रीतों घट नहिं लैंहों ॥ सूरस्याम यहां देहु औ-
नि भरि तबें लकुट कर देहों ॥४॥ राग कल्यान ॥ कर की लकु-
ट तबें हों देहों ॥ घट मेरों ढरकाय दियों जब फेरि नीर भरि लें
हों ॥१॥ कहा भयो जो नंद बडे वृषभान कहा घटि हम तुम सें

www.vallabhacharyakrupa.org

हूं॥जसुमतिकीरानिवलीश्रीरांमा॥वारवाररानिव्रजमेंजै
सेहूं॥२॥समसरगोधनगोरससवगुनएकगाउंइकठांव॥
पसुपंछीहूतिवडेकहावतइनवाननननउराव॥३॥वसिवो
एकठौरहमतुमकोंकैयोंग्राधिकापसहों॥सूरस्यांमतुमसेन
डरेहैंज्वावकोंज्वावाहिदेहों॥४॥रा॥ग॥कल्यान॥घरभरिदेहु
लकुटतवदेहों॥हांहूंवडेमहरिकीवेटीतुमसेंनहींडरैहों
॥२॥मेरीकनकलकुटियादैरीमैंभरिदेहोंनीर॥विसरिगईसु
धितादिनकीतुहिहरेसवनकेचीर॥२॥पहचांनीसुनिग्वारि
विवसभईतनकीसुधिविसराई॥सूरलकुटकरिगिरितन
जांनीस्यांमठगौरीलाई॥३॥रा॥ग॥हमीर॥घरभरिदियोंस्यांम
उठाइनेकतनकीसुधिनताकोंचलीव्रजहिसुहाइ॥२॥स्यांम
सुंदरनैंनभीतररहेआंनिसमाइ॥जहांतहांभरिदृष्टिदेखोंत
हांतहांकन्हाइ॥२॥उनहिनैंएकसखीआईकहतिकहाभुला
इ॥सूरअववहिहसतआईचलीकहांगवांइ॥४॥रा॥ग॥टोडी॥
श्रीहोस्यांममोहनीघाली॥गईजलभरननदनंदनकीदृष्टि
सुमोउरसाली॥२॥कहांकरूंकछुकहतनआवेलगीमरमा
कीभाली॥सूरदासप्रभुमनहरिलीनोंविवसभईकामोंक
हूंआली॥२॥रा॥ग॥धनाश्री॥आनयहवातसखीअनुरांनी॥ना
हिवाहगहिघरपहुचाईआपुचलीजमुनाकेपांनी॥२॥देखे
आइतहांहरिनागरचितवतजहांतहांचितततांनी॥जलभरि
ठठकिचलीनिसंग्रहकोंवारवारहरिकोंपाछितांनी॥२॥ग्वारि
नविकलदेखिप्रभुप्रगटेहरखभयोंतनतपनिवुझानी॥
सूरस्यांमअंकमभरिलीनीगोपीअंतरगतिकीजांनी॥३॥
रा॥ग॥आसावरी॥मिलिहरिसुखदीयोंनिहिकाल॥तपनिमि
टिगईप्रेमछाकीभईरसवेहाल॥२॥मगनहीउवाधरतिना
गरिभवनगईभुलाइ॥जलभरनव्रजनारिआवतदेखिना
हिंवुलाइ॥२॥जातकितहूंडगरछाडेकहोंइतकोंआइ॥
सूरप्रभुकेरंगराचीरहीहितचितलाइ॥३॥रा॥ग॥धनाश्री॥
काहूतोहिठगौरीलाई॥पूछतसखीसुनतनहिंनेंकहूंने
हीकिधोंठगमूरीखाई॥२॥चौंकिपरीसुपनेजनुजागीतव
वानीकहिसखीनसुनाइ॥स्यांमवरनएकमिल्योढोना
तिनमोकोंमोहनीलगाइ॥२॥मैंजलभरेंइतहिकोंआवत

॥ सू.सा. आनि अचानक अंक मिलाय। सूरदास स्वियन के आगें बा
॥ ३ तक हूत सवला जगवाय ३॥ राग धनाश्री॥ नेंक न मन ते टरत
कन्हाई॥ इक तो मैं छकि रही स्यांम रस ता पर इक यह बात सु
नाई॥ १॥ वाकों सावधांन पठ्यों चलि आप जल कों अतुराई॥
मोरमुकट पीतांवर कांछें देख्यों कुवर नंदको नाई॥ २॥ कुंडल
झलक ललित कपोलनि सुंदर नैंन विसाल सुहाई॥ कहैं
सूर प्रभु एरंग तुम रे ठगत फिरत हो नारि पराई॥ ३॥ राग ध
नाश्री॥ कहां ठग्यों तुमरों ठगि लीनों। कौंन हि धों आप रस
हूं ठगि हों उरही के ठग तुम कों चीनों॥ १॥ कहों नाउ धरि क
हीं ठगायों सुनि सुनि मनराखे यह वात॥ ठग के लछन मोहि
वतावत के सें ठग के घात॥ २॥ ठग के लछन हम सों सुनियें
मृदु मुसकनि चितचोरत॥ नैंनसैंनदें चलत सूर प्रभु तनत्रि
भंग करि मोरत॥ ३॥ राग सूहो विलावल॥ अनीही करत तुम
स्यांम अचगरी॥ काहू की छीनत हो इडुरा काहू की फोरत हो ग
गरी॥ १॥ भरन देहु जमुना जल हम कों दूरि करों वातें वेलगरी॥
पेंडे चलनन पावत कोऊ रोकि रहत लरिकन सों पगरी॥ २॥
घाट वाट देखत सब आवत जुवती डरनि मरति हें सगरी॥ सू
रस्यांम निठ्ठि गारी दीजो जो कोऊ आवें तुमरी वगरी॥ ३॥ राग
काफी॥ नीकें देहु मोरी इंडुरी॥ लेंजे हें जसुमति के आगें आवहु री
सब मिलि एक झुरी॥ १॥ काहूं नहीं डरात कन्हाई वाट घाट तु
म करत अचगरी॥ जमुना दह इडुरी फटकारत फोरत सब
स की अरु गगरी॥ २॥ भली करी यह कुवर कन्हाई आजु मेंटि
हें तुमरी लंगुरी॥ चली सूर जसुमति के आगें उरहनें लें तुरत
व्रजसगरी॥ ३॥ राग आसावरी॥ देहु इंडुना ढीठ आनि ईंडुरी प
राई॥ तेरो कोऊ कहा करेगो हम सों लरिहें वहनी माई॥ १॥ मेर
संग की और गई लेंजल भरि धरि घर सों फिरि आई॥ सूरज
स्यांम इंडुरी नातर जसुमति सों कहें जाई॥ २॥ राग सारंग आ
पुन चोट करत परधाई॥ वरनस कोरी भोंह मरोरत हें हांक
रत हें नंद दुहाई॥ १॥ जाय कहों मैया के आगें लेहु सबें मिलि
मोहि वधाई॥ मों कों जुरि मारन जव आई तव हीं नीं इंडुरी फट
काई॥ २॥ ऐसें करि मो कुं नुम पायो मनु इनकी में रुचि राई॥ सू
रस्यांम वेरिन विसरांए जव वांधे हें ऊखल लाई॥ ३॥ राग सारं

www.vallabhacharyakrupa.org

गा ॥ इहां रहौं तौं वरौं कन्हाई ॥ आपु गाई जसुमति हि सुनावन
हैं गाई स्याम घन रहर हाई ॥ २ ॥ महरि मथति रिनस रन आपने
ग्रहि अंतस्सु वती सब आई ॥ चितै रही जुवतिन कौं आवन
कहूं आवत हैं भीर लगाई ॥ ३ ॥ मैं जानन जइन कौं हरि पीके ना
ते सब उराह नै लैं धावत ई ॥ सूरदास रस भरी ग्वारिनी एसौं
ढीठ कियौ तुम माई ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ सुनौं महरि तेरौ लाडि
लौ अति करत अचगरी ॥ जमुन भरन जल हम गई तहां रो
कत मगरी ॥ १ ॥ सिर तें नीर ढराइ कै नव फोरें सब गगरी ॥ इडुरी
दई फटकारि कैं हरि कर न हैं लंगुरी ॥ २ ॥ नित प्रति एसें ई ढ
ग करत हम सौं कहैं अगरी ॥ अब विसवास नहीं बनें यह
तौं व्रज नगरी ॥ ३ ॥ आप गए चढि कदम पर चितवत रहि स
गरी ॥ सूर स्याम एसें सदा हम सौं करें झगरी ॥ ४ ॥ राग रामक
ली ॥ सुत कौं वरजि राखौं महरि ॥ डगर चलन न देत काहू फो
रि डारत डहरि ॥ १ ॥ स्याम के गुन कछु न जानत हम सौं ठानत
गहरि ॥ परै लालच गाय दधि ली यै वसत हैं व्रज बहरि ॥ २ ॥ ज
मुन तट हरि देखि ठाढे डरनि आवें हू रि ॥ सूर स्यामहि नेंक
बरजौ करत हैं अति छहरि ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ तुम सौं कह
त सकुचत महरि ॥ स्याम के गुन नांहि जानत हम सौं ठानत ग
हरि ॥ १ ॥ नैंक हू न हि सुनत स्रवण न करत हम सौं छहरि ॥ जल
भरन कोऊ नहीं पावत जाइ राखत डहरि ॥ २ ॥ अति अचगरी
करत मोहन फटकि गिंडुरी पहरि ॥ सूर प्रभु कौं कहा सिख
यौं रिस निजु कौ हरि ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ कहा करौं कहैं मोसौं
तुमही ॥ जो पाऊं तौं तु माहि दिखाऊं हा हा करि हें अबही ॥ १ ॥ तुम
हू गुन जानत हौं हरि के ऊखल बांधे जबहीं ॥ सटिया लै मारन
जब लागी तब बरज्यौ मोहि सबही ॥ २ ॥ लरिकाई तें करत अ
चगरी मैं जानी गुण तबही ॥ सूर हाल कै सैं हौं कपि घर आ
बैंधौ हरि कबही ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मैं जानति हौं ढीठ कन्हाई ॥
आवन धौं घर दै हु स्याम कौं कैसी कैसी करौं सजाई ॥ १ ॥ मो
सौं करत ढिठाई मोहन मेरौ कीहैं माई ॥ औरन काहू कौं वह
मानत कछु सकुचत बलभाई ॥ २ ॥ अब जो जाउ कहूं तित हि पा
ऊं का सौं देहु धराई ॥ सूर स्याम दिन दिन तस करभ्यो दूरि करौं
लगराई ॥ ३ ॥ राग सूहौ ॥ जुवति बोधि सब घरहि पठाई ॥ यह अ

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा आधमोहिवकसोंरी यहैं कहतिहौंमेरीमाई ॥२॥ इतनेंवलीघर
॥२४ निमवगोपीउनतेंआवनकुवरकन्हाई ॥ वीचहिंभेटभईजुव
तिजुहरिनेंतनिजोरतिगईलजाई ॥२॥ जाउकांन्हमहतारीरि
तिवहुतवडाईकीरहुमआई ॥ सूरस्यांममुखवहुसतहैमेंकहि
होंजननीसमुझाई ॥३॥ रागनट ॥ सकुचतगएघरकोंस्यांमछ
रहितेंसिरचिरैयोंजननीलांगीकांम ॥१॥ यहैंवांनीकहतमु
खतेंकहांगयोकन्हाई ॥ आपठाढेजननिपाछेंसुननहैंचित
लाइ ॥२॥ जलभरणजुवतीनपावेंघाटरोकनजाइ ॥ सूरस
वकीफोरिगगरीस्यांमजाइपराइ ॥३॥ रागनट ॥ जसुमतियह
कहिकेंरिसपावति ॥ रोहिनिकरतरसोईभीतरकहिकहि
ताहिसुनावति ॥१॥ गारीदेतवहुवेटनकोंवेधाईतहांआव
ति ॥ हाहाकरतिसवनिसोंमेरीकैसेंखोटछुडावति ॥२॥ जां
तिपांतिसोंकहांअचगरीयहसुतगुहरावति ॥ सूरस्यांमसों
सिखवतहारीमारेंहूंलाजनआवति ॥३॥ रागसारंग ॥ म्हो
हीकोंमारनजानति ॥ उनकेचरितकहांकोउजांनेंउनहीकं
हीतूमांनति ॥१॥ कदमतीरतेंमोहिवुलायोगढिगढिवातें
वांनति ॥ मटकतगिरीगागरीसिरतेंअवऐंसीवुधिठांनति
॥२॥ फिरिचितईतूंरह्योंकहांकहि मेंनहितोकोंजांननति ॥ सूर
सुतहिदेखतहीरिसाई मुखचूवतिउनआंनति ॥३॥ रागन
ट ॥ माईमेरोवालगोविंदकछुनजांनतचोरि ॥ आहनेंलेंजु
वतीसवआवतिरूठीवनियांजोरि ॥१॥ कोउकहतिमेंडुरी
मेरीलीनीकोऊकहतिगागरीगएफोरि ॥ कोऊउरखोलिहा
रदिखरावतिकान्हुडारेतोरि ॥२॥ अवआवेंजोउराहनेलेंक
रितोपठवोमोहिंमोरि ॥ सूरकहांमेरोंननककन्हैयाआपुन
जोवनजोर ॥३॥ रागकान्हरो ॥ व्रजघरघरयहवानचलावति
जसुमतिकोंसुतकरतअचगरीजमुनाजलकोउभरनन
पावत ॥१॥ स्यांमवरननटवरवपुकाछेंमुरलीरागमलार
वजावत ॥ कुंडलछविरविकिरनहुतेंदुतिमुकटइंद्रधनुतें
सोभावत ॥२॥ मांननकाहूंनकरतअचगरीगागरिधरिज
लमुखढरकावत ॥ सूरस्यांमकोंमातपितारोऊऐसेंढंग
लेंलावति ॥३॥ रागगौरी ॥ करतअचगरीनंदमहरिकों ॥ स
खालियेंजमुनातटवेंठ्योंनिवहतनहींसवलोगडगरकों ॥१॥

www.vallabhacharyakrupa.org

कोऊ षीजें कोऊ खिजवरजों जुवतिनके मन आंन ॥ मनवच
क्रम स्यांमसुंदर तजि औरन नांनें आंन ॥ २ ॥ यह लीला सब
स्यांम करत है व्रजजुवतिनके हेत ॥ सूरप्रभ नें जिहि भाव कृष्ण
कों ताकों सोई फल देत ॥ ३ ॥ राग टोडी ॥ गोकुलके गोंडें एक
सांमरो ढोंनामाई। आंखिनके पेंडें पैठि जीके पेंडे परयो हैं ॥ १
कल न परत छिन ग्रह भयो सम वन तन मन धु[illegible]आंन सर
वस ह्वै होहें ॥ १ ॥ भवनन भावें माई आंगन रह्यौ जाइ करें हार
हार ठरें खोंकें सों हालक हो हें ॥ सूरदास प्रभुनीकें गावन म
धुर सुर मांनों मुरली में लें पियूष भर्‌यो हें ॥ २ ॥ राग नट ॥ राधा स
खियन लई बुलाय ॥ चलों जमुना जलहि जैसें सब चली सु
खपाइ ॥ १ ॥ सबन एक एक कलस लीनों तुरत पहुंची जाइ ॥
तहां देष्यो स्यांमसुंदर कुंमर मन हरखाइ ॥ २ ॥ नंदनंदन दे
खि रीझे चितें रहे चितलाइ ॥ सूरप्रभुकी पियराधा भरत ज
ल मुसिकाइ ॥ ३ ॥ राग गूजरी ॥ घरहीं चलि जमुना जल भरिकें
सखियन बीच नागरी राजति भई प्रीति उर हरिकें ॥ १ ॥ मंदमं
द गति चलत अधिक छवि अंचर रह्यो फररिकें ॥ मोहनकों
मोहनी लगाई संग गही चली सखीरिकें ॥ २ ॥ बेंनीकी छवि क
हत न आवें रही नितंबनि ढरिकें ॥ सूर स्यांम प्यारेके बस भ
ये रोमरोम रस भरिकें ॥ ३ ॥ राग जेतश्री ॥ गागरि नागरी जल
भरि ल्यावें ॥ सखियन बिच भरी घट सिर धरि तापर नैंन च
लावें ॥ १ ॥ डुलनि ग्रीवा लटकत नकवेसरि मंदमंद गति आ
वें ॥ भृकुटी धनुष कटाक्ष बान मनु पुनि पुनि हृदय लगावें
॥ २ ॥ जाकों निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग बढावें ॥ सूर
स्यांम सारी छवि निरखत आपुही धन्य कहावें ॥ ३ ॥ राग धना
श्री ॥ सखियन बीच नागरी आवें ॥ छवि निरखत रीझे नंदनं
दन प्यारी मनहि रिझावें ॥ १ ॥ कबहूंक आगें कबहूंक पाछें ना
ना भांव बचतावें ॥ राधा यह अनुमान करें हरि मेरें चितहि चुरा
वें ॥ २ ॥ आगें जाय कनक लकुटी लें पंथ सवारि बनावें ॥ निर
खत तन हीं छांह प्यारीकी तहां लें छांह छुवावें ॥ ३ ॥ छवि निरख
तत न वारि आपनों नागरि जियहिं जिवावें ॥ अपनें सिरपी
तांवर वारति ऐसी रुचि उपजावें ॥ ४ ॥ ओढि उढोंनी चलत दि
खावें दृष्टि मिसनि कटहि आवें ॥ सूर स्यांम ऐसे भांवनि सों

www.vallabhacharyakrupa.org

सू.मा. राधामनहिरिझावें ॥५॥ राग जैतश्री ॥ नागरिनागरि लेंपनघ
२०५ टनेचलिघरहीकोंआवें ॥ ग्रीवाडोलनलोचनलोलनहू
रिकेचितहिचुरावें ॥१॥ ठठकनिचलीमटकिमोहूंमोरें वि
कटभोंहूचलावें ॥ मनोंकामसेनाअंगसोभाअंचलधुजा
फहरावें ॥२॥ गतिगयंदकुचकुंभकिंकिनीमनोंघंटफहना
वें ॥ मोतिनहारजलाफलमांनोंखुभीदंतझलकावें ॥३॥ मानों
चंदमहूवनसुखवरअंकुसवेसरिल्यावें ॥ रोमावलीसूंड
त्रिवलीमगनाभिसरोवरआवें ॥४॥ पगनेहरिजंजीरन
जिकस्यौंयहूउपमाकछुपावें ॥ घरजलछलककपोलनि
कनिकामानोंमदहिचुचावें ॥५॥ वेंनीडुलतिदुहूनितंब
परमांनोंपूछहलावें ॥ गजसिरदारसूरकेस्वामीदेखिदे
खिसुखपावें ॥६॥ राग गौरी ॥ ग्वारनिघूटसिरधरेंचली ॥
झमकाइ ॥ स्यांमअचानकलटगहि कहिघरकहांचलीअ
तुराइ ॥१॥ मोंहनकरगहिनियमुखअंसकेयहउपमाअ
धिकाइ ॥ मनोंसुधाससिराहुचुरावतधस्योनाहिदरिआइ
॥२॥ कुचपरसेअंकमभरिलीनीदुहूंमिलिहरखबढाइ ॥ सूर
स्यांममनुअमनघरनिकोरषतहैंकरलाइ ॥३॥ राग क
ल्यान ॥ छांडिदेहुमेरीलटमोंहन ॥ कुचपरसतपुनिपुनिस
कुचतनहिकितआवतजिगोंहन ॥१॥ जुवतिआंनिदेखिहें
कोऊकहतवंककरिभोंहन ॥ वारवारकहिवीरदुहाईतु
ममाननतनहिसोंहन ॥२॥ इतनेहीकोंमोंहदिवावतिमेंआ
योंसुखजोंहन ॥ सूरस्यांमनागरिवसकीनीविवसचलीघ
रदोंहन ॥३॥ राग गौडी ॥ आंवतहीजमुनाभरेंपांनी ॥ स्यांमव
रनकाहूंकोढोटानिरषिवदनघरगईभुलानी ॥१॥ मेंउहिं
नउनमोतनचितयोंतबहींउनहूंप्यविकानी ॥ उरधकध
कीठगीसीलागीतनव्याकुलमुखफुरतनवांनी ॥२॥ सो
किनकहेंकाहिमोहीनेमोहिनाहिनेंसोपहचांनी ॥ सूरदा
सप्रभुमोंहनदेखततज्योंवारिधजलवूंदसमांनी ॥३॥ राग
देसाख ॥ नंदमहरिकोसांवरोमेरोंमनचोरेंजाइ ॥ रूपअनू
परिखायकेंसखिओझकिझांकोंआइ ॥१॥ मोरमुकटसिर
श्रवणनिकुंडलपीतांवरफहराइ ॥ अधरनपरमुरलीधरें
मधुरीतानबजाइ ॥२॥ वंदनकीखौरिहियेंकीयेंकटिका

www.vallabhacharyakrupa.org

छनी बनाय ॥ सूरदास प्रभु बैठे देखे जमुना नीर कन्हाइ ॥ ३ ॥ रा
ग ५ नाश्री ॥ चली भवन मन मन हरि लीनों ॥ पग द्वै जात ठठकि
फिरि हेरति जिय यह कहत कहरि कीनों ॥ १ ॥ मारग गई
भूलि जिहि आई आवन कौ नहि पावन चीनों ॥ रसिक रिसें वि
वि बिलखति कन्हैया प्रभु जनि फंद कायौ ईनों ॥ २ ॥ प्रेम सिंधु
में मगन भई तिय अंक माहि तिय लीनों ॥ सूरदास प्रभु मो वि
त अरु कौं आव जिनहि इतउत भई षीनों ॥ ३ ॥ राग गोरी ॥ घ
र गुरजन की सुधि जब आई ॥ तब मारग सूझ्यौ नैननि कछु
जिय अपने तिय गई लजाई ॥ १ ॥ पोहोंची आइ सदन ज्यों त्यों क
रि नैंक नहीं चित टरत कन्हाई ॥ सखी संग की पूछन लागी ज
मुना तट अति गहरु कराई ॥ २ ॥ औरें दिसा भई कछु तेरी कहत
नहीं हम सों समुझाई ॥ कहां कहों कछु कहत न आवै सूरदास
मम्मो हनी लगाई ॥ ३ ॥ राग गोरी ॥ मेरी गैंल न छांड़ै सांवरो मैं कै
सें पन घट जाउंरी ॥ हरि हैं संकुचि नि डर पत हूं मोहि धरें न
को उ नाउंरी ॥ १ ॥ जित देखौं तित देखियें री रसिया नंद कुमार
इत उत नैंन चुराइ कें मोहि पलक बांक करत जुहार ॥ २ ॥ लकुट
लियें आगें चलें हो पंथ्य सवारत नाइ ॥ मोहि निहोरो लाइकें
फिरि चितवत मुसिकाइ ॥ ३ ॥ जमुना जल गागरि भरों हैं ज
ब सिर धरों उठाइ ॥ मोपें मुकी अचराउ दें मेरो हीयो तन गलल
चाइ ॥ ४ ॥ गागरि मारे कांकरी हौ छरहुरी मारें लात ॥ गैल मांफ ठा
ढो रहें मोहि षुभैं आवत जात ॥ ५ ॥ हों सकुचति बोलों नहीं हो
लोक लाज की संक ॥ मो तन छ्वेकें जो चलें ता हि भरत हैं अंक
॥ ६ ॥ निकट आय मुख निरखिकें सकुचे बहु रि निहारि ॥ आरस क
आंटें ओढनी पीतांवर मो पर वारि ॥ ७ ॥ जब कछू लगन लगीं न
ही तब वाके जिय अकुलाइ ॥ तब हूं ठि मेरी छां हसों राखें छा
हछुवाइ ॥ ८ ॥ काज न कित न हूं तौ हरि घर गुरजन को सोर ॥ मे
रो जिय कान्हहि वध्यौ पीतांवर की छोर ॥ ९ ॥ अब लों सकुचि
अटकि रही प्रगट करों अनुराग ॥ हिलिमिलि कें संग खेलि
हैं मानि आपनो भाग ॥ १० ॥ घर घर ब्रज वासी सबै कोकिन
कैहें पुकारि ॥ गुपत प्रीति पर घर करों कुल की कानि निवा
रि ॥ ११ ॥ जब लों चित मिलि येंन हीं न चें चोक के नाच ॥ सूरस्या
म संग ही रहों करों मनोर थ सांच ॥ १२ ॥ राग गोरी ॥ बनी स

www.vallabhacharyakrupa.org

॥स०सा हूजलूटहू । केलि गोपिनके सुपनेहू कमलाकमलानपावें
॥१०६ निगमनिरद्धार त्रिपुरारि हू विचार रह्यौ पचिरह्यौ शेषनहि
पारपावें ॥ ॥ किन्नरी महू देवी विहुरि गंधर्वनी पन्नगी सहू
जचितवनि नहि पानपावें ॥ हेतकरतारवहि लालगोपाल
संपकरि व्रजवालकपिर्पोनचावें ॥ २ ॥ कोऊकहे ललनरे
खोमेके सेंनचें कोऊकहे भवरके सेंगुजारें ॥ कोऊकहें
पोरिलगि देहरि आवो ललनरी झिमोतीनके हारवारें ॥ ३ ॥
कोऊकहें ललनपकरायमोहि पांवरी कोऊकहें ललनच
ढिजाहु सीढी ॥ कोऊकहें ललनगहाऊं मोहि सोहनी कोऊक
हें ललनवलि ल्यावपीढी ॥ ४ ॥ जोईकछुकहें व्रजवधूसोई
सोईकरत नोतरवेंनवोलनिसुहावें ॥ रोयपरें वस्तु भारीनउ
ठें तवें चूमिमुख जननी उरसों लगावें ॥ ५ ॥ देंनकहें लोनिपुन
चाहि रहे वदनहू सतभुजभरिभरि सुलेंके लोलें ॥ धामके
कामव्रजभामसवें भूलि कांन्ह वलिपके संगडोलें ॥ ६ ॥ सर
दिधमधुचरितमधुपानके औरसमनकछु आनआमें ॥ औ
रसुखरंककी कोंनइछा करेंमुकितहू लोनसी खरी लागें ॥ ७ ॥
राग रामकली ॥ एकदिनसपुने खरिकको जानहि मिलिग
यी सांवरो हें अकेली सखि मोहि मधुरमुसिकाय लाग्यौ क
हनहूं किथौरी भोरी कनकवेली ॥ १ ॥ आनितहीं जगामगरही कुं
डीरंगभरी कानपरकुंकुचकी आनिविराजें ॥ सरदकेचंदसों
वदनफूलमलारह्यौ देखिरये रूपकोऊकहा भाजें ॥ २ ॥ नासि
कानयसुककेचुंचसों फलमलें औसोमुक्ता वडोंवहांपायो ॥
औसो मधोंनकहूं देसदेख्यौ सुन्यौ लगतहि लपरिमनलप
टि आयो ॥ ३ ॥ लंकमृगराजकी चालिगजराजकी चिवुककी
दृष्टि छबिचित विकायो ॥ वंकअवलोकनी वडी अखियांन
में कोंनकों ठगनि अंजन वनायो ॥ ४ ॥ जानतीनाहिनें लाल
तुमकोंन होंनजांनोंकछु अवहि दिनचारिभये गोनेंआई
सकुचिठाढी भई धायभुजभरिलई अधररसपानकरि उर
लगाई ॥ ५ ॥ तवहीतें लालउरमांहि रगमगरहेकलनदिन
रेंनिकछुनसुहावें ॥ सूरयहू प्रेमरसछांडिकें आंवनजिको
नकोंनीवभावें ॥ ६ ॥ अथ वसंत लीला समय वर्णनं ॥ राग वि
लावल ॥ भक्तनके सुखदायकसांम ॥ जुवती पुरुषनहीक

छुनांम ॥१॥ संकटमेंजनजहांपुकारें ॥ तहांप्रगटितिनकोंउद्धारें
॥२॥ जियतीतरजिनसुंमिरनध्यावें ॥ तिनकोंनेंकहूंविसरावें
॥३॥ चितदेंभजेंकोंनहूंभाइ ॥ ताकोंनेंसईत्रिभुवनराइ ॥४॥ कामा
तुरगोपीहरिध्यायों ॥ मनवचकर्महरिसोंचितलायों ॥५॥ घर
रितुतपकीनोंतनगारि ॥ छांड्डमारेपतिगिरधारि ॥६॥ अंतरजा
मीजांनतसबकी ॥ प्रीतिपुरातनसालीतबकी ॥७॥ [illegible]हरे
गोपिनमुसदीनों ॥ सुखदेंसबकोंदुखहरिलीनों ॥८॥ जुवति
नकेंयहध्यांनसदाई ॥ नेंकनअंतरहोइकन्हाई ॥९॥ घाटवा
टजमुनातटरोकें ॥ मारगचलतजहांतहांटोकें ॥१०॥ काहूकी
गागरिधरिफोरेंकाहूसोंहसिवदनसकोरें ॥११॥ काहूकोंअं
कमभरिभेटें ॥ कामविथातरुनीनुकीमेटें ॥१२॥ ब्रह्माकीट
आदिकेस्वामी ॥ प्रभुहेंनिर्लोभीनिष्कामी ॥१३॥ भावबस्यसंग
हिसंगडोलें ॥ खेलेंहसेंसबनसोंबोलें ॥१४॥ ब्रजजुवतीनहि
नेंकविसारें ॥ भवनकाजचितहरिसोंधारें ॥१५॥ गोरसलेंनिक
रीब्रजबाला ॥ तहांतिनेंदेखेनंदलाला ॥१६॥ अंगअंगसजि
सिंगारवरकांमिनि ॥ चलीमनोंदामिनिमिलिदांमिनि ॥१७॥
कटिकिंकिनीविछुवानूपुरधुनि ॥ मनोंमदनकेगजघंटा
सुनि ॥१८॥ जातिमारमरकोसिरधरिकें ॥ सुखसुखगांनकरति
गुनहरिके ॥१९॥ चंदवदनतनअतिसुकुमारी ॥ अपनेमनसब
कृष्णपियारी ॥२०॥ देखिसबनरीझेंबनवारी ॥ तबमनमेंएककु
छुविचारी ॥२१॥ अबदधिदांनरच्योंदधिलीला ॥ जुवतिनसंग
रचोंरसक्रीडा ॥२२॥ सूरस्यांमसंगसखाबुलाए ॥ यहलीला
कहिसुखउपजाए ॥२३॥ रागरामकली ॥ नंदनंदनएकबुद्धि
उपाई ॥ जेजेंसखाप्रकृतिकेजानेतेसबलएबुलाई ॥१॥ सु
बलसुदामाश्रीदामामिलिऔरमहरिसुतआए ॥ जोकछु
मंत्रहृदयहरिकीनोंग्वालनप्रगटसुनाए ॥२॥ ब्रजजुवती
नितप्रतिदधिवेचनबनिबनिमथुराजाति ॥ राधाचंद्राव
लिललितादिकबहुतरुनीइकभांति ॥३॥ कालिंदीतटका
ल्हिप्रातहीद्रुमचढिरहोंलुकाइ ॥ गोरसलेंसबहीजबआवें
मारगरोकोंआइ ॥४॥ भलीबुद्धियहरचीकन्हैयासखनिकों
सोंमुसिकाइ ॥ सूरदासप्रभुप्रीतिहृदयकीसबमनगईज
नाइ ॥५॥ रागरामकली ॥ प्रातहीउठेगोपकुमार ॥ घरघरखो

www.vallabhacharyakrupa.org

सू.सा. लेजहांतहांयहैंसुनिवनवारि ॥ ४ ॥ प्रथमहीउठिसखाग्राए
२०१ नंदकेदरवार ॥ ग्राइयेंउठिकेंकन्हैयाकहौवारंवार ॥ २ ॥ ग्वाल
टेरसुनततसोरकुंवरियोंजगाइ ॥ रहेंग्रापुनमोनसाधेंउ
ठौकग्रकुलाइ ॥ ३ ॥ मुकटसिरकटिपीतग्रंवरमुरलीलीनी
हाथ ॥ सूरप्रभुकालिंदीतटएसखालीनेंसाथ ॥ ४ ॥ रा ॥ वि
लावल ॥ हसतसखनयहकहतकन्हाई ॥ जायवटैतुमस
घनिद्रुमनपरजहांतहांरहोंछिपाई ॥ १ ॥ नवलौवैठिरहो
मोहींमूदेंजवजानौसवग्राई ॥ कूदिपरोगेद्रुमनिद्रुमनितें
रहोनंदरहाई ॥ २ ॥ वच्छतहोइजैसेंजुवतीगानडरिनजायग्र
कुलाई ॥ वेनुविषानमुरलीधुनिकीजोंग्रारवग्रायघहनाई
३ ॥ निजप्रतिजानतहूमारेमारगयहकहियोंसमुझाई ॥ सूरस्वा
ममोखनरधिदीनौयहसुखिनाहिनेपाई ॥ ४ ॥ रा ॥ वि ॥ ला ॥ वल
ह्यांमसखनएसेंसमुझावत ॥ व्रजवनिताराधाललिता
दिकइनकोंदेखिवहुतसुखपावत ॥ १ ॥ कालिजातइहिमा
रगदेखौतवयहवुद्धिउपाई ॥ ग्रवग्रावतनंदहैंसवहीवनि
मोहीसोचितलाई ॥ २ ॥ तुमसोंकछुद्याँवतनाहींकरतग्र
टकीवात ॥ सुनौसूरलोचनमेरेविनराधामुखललचात
३ ॥ रा ॥ जै ॥ त ॥ श्री ॥ राधिकेवचलीव्रजनारि ॥ सीसधरिधरिमाट
मटुकीवडोसोभाभारि ॥ १ ॥ निकसिव्रजकेगईगोडेंहरखिकें
सकुमारि ॥ चलीग्रावतकृष्णकेगुनहृदयध्यांनविचारि ॥ २
सवनिकेमनज्योंमेलेहरिकोउनकहतपुकारि ॥ सूरप्रभुघ
टघटरहिव्यापकजानिलईवनवारि ॥ ३ ॥ रा ॥ जै ॥ त ॥ श्री ॥ ग्रोरस
खासंगलीयेंकन्हाई ॥ ग्रापुननिकसिगएग्रागेकोंमारगा
रोकौजाई ॥ १ ॥ इहिंग्रंतरजुवतीसवग्राईवनलाग्योकछुभा
री ॥ पाछेंजुवतीरहीकोउटेरतग्रवहेंगईतुमहारी ॥ २ ॥ नारू
नीजुरीइकसंगभईसवइतउतचलीनिहारत ॥ सूरदासप्रभु
सखालियेंसंगठाढेयहोंविचारत ॥ ३ ॥ रा ॥ गो ॥ री ॥ ग्वारिनिअ
वदेखनंदनंदन ॥ मोरमुकटपीतांवरकांछेंखौरिकियेंतनचं
दन ॥ १ ॥ तवयहकह्यौंकहांग्रवजैहोंग्रागेंकुंवरकन्हाई ॥ यह
सुनिमनग्रानंदवढ्यौमुखकहैंवातडराई ॥ २ ॥ कोउकोउ
कहतचलौरीजैयेंकोउकहेफिरिघरजाहि ॥ कोउकोउकह
तिकहाकरिहैंहरीइनसोंकहांपराहि ॥ ३ ॥ कोउकोउकह

www.vallabhacharyakrupa.org

ति कालिंद्री हम कों लूटि लई नंदलाल ॥ सूरस्यांम के ऐसे गु
न हैं घर हि चली व्रजवाल ॥ ४ ॥ राग सोरठि ॥ ग्वालनि सें नंद ई
तब स्यांम ॥ कूदि कूदि सब परों द्रुमनि ते जात चले घर वांम ॥ १
सें नंद जो निज ग्वाल जहां तहां द्रुमें द्रुम डार हलाइ ॥ वेनु वि
षांन सब मुरली धुनि सब इक शब्द बजाइ ॥ २ ॥ वकुल भई
तरु जरु प्रति देखत डारनि डारनि ग्वाल ॥ कूदि कूदि सब परे
द्रुमनि ते घेरि लई व्रजवाल ॥ ३ ॥ नित प्रति जात दूध दधि बे
चन आजु पकरी हम पाई ॥ सूरस्यांम कों दान देहु तब जे हो
ने देहु हाई ॥ ४ ॥ राग जैतश्री ॥ प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब स
खा बुलाए ॥ तेई तेई लीने साथ मिले सब प्रकृति वनाए ॥ १
डगर गए अनजांन हो गहो जाय वन घाय ॥ पटु पटु नहके
लगे ठाटी ठगन को ठाठ ॥ २ ॥ इहां ग्वारिन तव निजुरी सब
सखी सहेली ॥ सिरन लिये दधि दूध सवें जोवन अलबेली
॥ ३ ॥ हसति परस्पर आपने चलि जाहि लिये भोर ॥ जवें आनि
घां जे परी छेकि लई चहुं ओर ॥ ४ ॥ देखि अचानक भीर भई
सव चकृत किसोरी ॥ जैसें मृग गर्भ के जूथ मध्य साव कनहु
ओरी ॥ ५ ॥ सकित देखि ठाटी भई ह्यां पाव न हि डोल ॥ मनो चित्र
की सी लिखी मुखे हि न आवे वोल ॥ ६ ॥ तव उठि वोले ग्वाल ड
रों जिनि कान्ह देहु हांसे गन सकल कोउ नांहि दांन जरूपति सु
खदाई ॥ ७ ॥ आवति जात सदा रहें स्याम राज भय नांहि ॥ जो क
छु लागें दांन को घाटि देहु तिहि मांहि ॥ ८ ॥ तव हसि वोले ग्वा
ल नांम जव कान्ह सुनायो ॥ चोरी भयो न पेट आनि ज वंदांन
लगायो ॥ ९ ॥ तव उलटी पलटी फवी जव वसि सुरहे कन्हाई ॥
अव कछु वाहि धोखेक रों छिनक मांहि पति जाइ ॥ १० ॥ तब उठि
वोले कान्ह रही तुम मोहि छिपाई ॥ महरि महर सुख पाइ सं
कत जिकरत ढिठाई ॥ ११ ॥ अव वह धोखो मेटि के छांडि देहु
अभिमान ॥ करि लेखो अव दांन को दियें पाइहो जांन ॥ १२ ॥ तब
हसि वोली ग्वालि दुरनि तुम तजे ढिठाई ॥ तव ही नंद निज का
ज भई तुम तप अधिकाई ॥ १३ ॥ कालिंद्री घर घाट डोलत ते घात
रह्यो चुराइ ॥ तिन ही कछु सुपनो भयो आन भये ठकुराइ ॥ १४ ॥
भली कही नहि ग्वारि वात को भेद न पायो ॥ पितार चत धन
धांम पुत्र के काज हि आयो ॥ १५ ॥ तुमसी अजा व साइ के ऐसी

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू०सा० हैं यह ह्याइ ॥ जे तुम हम सर वस भई मिल्यो छांडि ठकुराइ ॥१६॥ तव
॥१०८॥ तुरति बोली ग्वारि वात किन कहो सभारे ॥ ऐसो को वहि गयो अ्रजा
ह्कं वसे तुम्हारे ॥१७॥ हम हूं तुम नृप कंस के वसे वास इक ठांउ ॥ दे
खो धों घर जाइ कें तजें तुम्हारो गाउ ॥१८॥ गाउ हमारो छांडि जा
य वसि हों किहि षोरें ॥ तीनि लोक में कोंन जो वनाही वस मोरें
॥१९॥ कंस हि को गिनती गिनें जा सों हम डराइ ॥ दधियें दांन न पें वाधि
हों नातर नाहिं निवाहु ॥२०॥ छोटे मुख वड वात कहो किन वा न स
भारें ॥ तीनि लोक अ्रह कंस कोये वस भये तुमारे ॥२१॥ यह वा
नी तिन सों कहों जो कोउ होय अ्रजांन ॥ जैसे हें तू रावरे हम जा
नति परवांन ॥२२॥ लेखो जे हें भूलि कहूं की वात चलावति ॥
ऋठी मिलवत आंनि सुनत हम को नहि भावति ॥२३॥ हम सों
लीजें दांन कें दाम सवें परखाइ ॥ येंली मांगि पठाइये पीतांव
र पट हि जाइ ॥२४॥ काहे कों सतरात वांत मं सांची भाखत ऋठी
तुम सव ग्वारि वात मेरी गहि नाखत ॥२५॥ कहो मांनि लेखो
करो रे हूं हमारो दांन ॥ सो हे [illegible] मोरि हें न ह्को पेसें रेउ न जांन
२६॥ नेंद दुहाई देत कहा तुम कंस दुहाई ॥ काहे कों अ्रठिलात
कांन्ह छांडो लरिकाई ॥२७॥ पहलि परिपाटी चलो नई चलत
को आज ॥ नृपति त्यागि निज वपा वई पुनि ति व होइ अ्रकाज ॥२८
लरिका मो सों कहत ना हि देखी लरिकाई ॥ पयपी वत संहा
रि पूतना...पठाई ॥२९॥ अ्रघा वका सकटा त्रि नाके सी मुख
करनाइ ॥ गिरि गोवर्द्धन का धस्यो यह मेरी लरिकाइ ॥३०॥ स
वें भली तुम करी हमें अ्रव कहत कहा हो ॥ हम को हो त अ्रवा
र रही लें जाहि ह्रां हो ॥३१॥ हसी पलक दे ग्वारि की वीतन ला
गे जांम ॥ वन में राखी रोकि के नारि पराई स्यांम ॥३२॥ हसी कर
त हो तुम हि भली गाई मति व्रज नारी ॥ तुम हम को हम तुम में
विन काज हि गारी ॥३३॥ वात कहूं कछु जांनि कें ह्वपा वदावत
सोए ॥ मदराजा ह्व चोरी भई आजु परी फंद भोर ॥३४॥ मागि लेहु
दधि देहि दांन को नाउ मिटावहु ॥ ऐसें देंहि ननेंक कहा हम को
दुरपावहु ॥३५॥ हमें कहत हो चोरटी आप भए हो साह ॥ चोरी
करत वडे भए मही छाकलें षाह ॥३६॥ दही लेत हो छीनि दांन
न अ्रानि को लेहो ॥ नैहो ह्वपार दांन दांन जो वनपें गे हो ॥३७
तुम सव कंचन भार लें मेरे मारग जाहु ॥ दही मही दिख राय व

www.vallabhacharyakrupa.org

हूकैसेंहोत्तनिवाहू ॥ ३८ ॥ जाहुभलेहोकांन्हूदांनअगानिकोंमां
गत ॥ हमरोंजोवनरूपअांनकरिहैंकेंगरलागत ॥ ३९ ॥ सबेंच
लीरुहूराइकेंमरकीसीमउठाइ ॥ रिसकरिकंसिकरिपीनप
टचरिगहीहरिधाइ ॥ ४० ॥ मरकीलईछुडायहारचोलीबंदतो
रे ॥ हमकोंभरिअंकवारिबांहधरिधरिझकोरें ॥ ४१ ॥ मांखनद
धिलीयोंछीनिकेंकहीग्वालसबखांहु ॥ मुखकमरतंआनंद
उरधरवनहीघरजाहु ॥ ४२ ॥ देखोंहरिकोंकांमउरफ्चिचोलीबं
दतोरे ॥ हमकोंभरिअंकवारिबाहधरिधरिझकोरें ॥ ४३ ॥ ज
सुमतिसोंकहियेंचलोंअबप्रगटीतरुनाइ ॥ दधिमांखनसब
छीनिलेंग्वालनदएखवाइ ॥ ४४ ॥ जायकहैंजोभलीबानमैया
केआगें ॥ तुमकोंजोबनरूपदेननहिनबिनुमागें ॥ ४५ ॥ तुम
जोकहिहोंजायकेंजननीनहिंपतियाइ ॥ सूरसुनैरीग्वालिनी
अबहुगीपछितांइ ॥ ४६ ॥ राग बिलावल ॥ जानीवतहुसारीस
बकी ॥ लरिकाईकेख्यालनतजोंअबगईबातबहनबकी ॥ १ ॥
मारगरोकतहोंजमुनाकोंतिहिधोखेंहूअाए ॥ पावहुगेपु
निकियोंआपुनोंजुबतिनहाथलगाए ॥ २ ॥ जोसुनिहेंपहबात
मातपितुतबहमकोंकहाकरिहें ॥ सूरस्यांममोतिनलरतो
रीकोंनज्बाबहूमरेहें ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ मुनोंस्यांमहमअब
चलीजसुमतिकेआगें ॥ तोंबरियोंहमकोंअबेंतुमकोंधरि
मागें ॥ १ ॥ इकइककरिबिपुराइकेंमोतिनलरतोरयो ॥ यहसुनि
सुनिमुसिकाइकेंहरिभोंहमहोफ्यो ॥ २ ॥ चलीमहरिपेंसुद
रीउराहनोंलेंहरिकों ॥ अबहीबोलिबधाइयेंलंगरयहल
रिकों ॥ ३ ॥ गईनंदघरकोंसबेंजसुमतिजहांभीतर ॥ देखिम
हरिपहकहीउठीमुनकीनोंईनर ॥ ४ ॥ मारगचलननपावहीं
पहहरिकेआगें ॥ सूरदासप्रभुत्रासनेछूजननजिहमभागो ॥ ५ ॥
राग भैरों ॥ जसुमतितेरोबारोंनोंअतिहीहेंअचगरों ॥ दूधद
हीमांखनढरकायोंसगरों ॥ १ ॥ भोरहीतेनितप्रतिहीकेरत
रहनझगरों ॥ ग्वालबालसंगलीयेंजायगाहेंडगरों ॥ २ ॥ हमतु
मइकसमसरकोनकानेंअगरों ॥ लियोंदियोंकछुस्वादरडा
रिदियोंगगरों ॥ ३ ॥ सूरदासकोंप्रभूसबगुननिमांहिअगरों
औरकहूंजायरहेंछांडेंब्रजबगरों ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ मेंतु
मेरेमनकीसबजांनी ॥ आपुसमेंइतरानफिरतहोंदूसनर

॥ सू.सा ॥ तस्याम कों आनी ॥ १ ॥ मेरो हरि कहां रस हि बरष को तुम री जोब
॥ १.९ ॥ न मद उमदानी ॥ लाज नहीं आवत है इन लंगरी निकसे धौं क
हां आवत बानी ॥ २ ॥ आपुहि फारि तोरि चोली बंद उर नख घात
बनाइ निसानी ॥ कहां काहू की तनक अंगुरियां यह कहि बा
रबार पछितानी ॥ ३ ॥ देखो जाइ और काहू को हरि लें सबे दूति
मदरानी ॥ सूरदास प्रभु मेरो नान्हो तुम तरुनी डोलति इतरा
नी ॥ ४ ॥ राग सूहो ॥ सुनि री सुनि तू महरि जसोदा ॥ ते सुत खरो
लडायो ॥ काके नाहि अनोखो ढोटा किन न कठिन दुख पायो
१ ॥ मैं हूं अपने ओसर पूतें बहुत दिनाम में जायो ॥ पहनौं ढोटा
ग्वाल भवन में कहूं ने रोंक छू खायो ॥ २ ॥ तेजु गवारि पकरि भु
जया को बदन दही लपटायो ॥ सूरदास प्रभु ग्वारिनि षूटी ख
रखर को नन्ह बधायो ॥ ३ ॥ राग सूहो ॥ जब दधि बेच न जाहि मारग रो
कि रहे ॥ ग्वारिनि रे खति धाइ अंचरा आंनि गहे ॥ १ ॥ अहो नंद की
नारि सीख एसी कित दीजे ॥ एक बेर खोंवास सुनो एसी नहि
कीजे ॥ २ ॥ सुत जैसे में तुम कहत नहीं को सारहे रहि गाउ ॥ जैहें व्रज
तजि अनत नहीं बहुरि सुनो नहि नाउ ॥ ३ ॥ कहां कहति डर पाइ
के कछु मेरो घटि जैहे ॥ तुम बांधति आकास बात झूठी को
सेहे ॥ ४ ॥ जोबन दरि न दै ओरै तुम एसी इतरात ॥ झूठ कांन्ह
को दोष दें काहे ब्रज जाने ॥ ५ ॥ हम यह झूठी कहत और
को पूछन देखो ॥ हम सों मांगत दान करे केइ करिन लेखो
६ ॥ मटकी डारे सीस तेम स कर ले इ खुलाइ ॥ महा ढीठ माने न
हीं मांखन सों दधि खाइ ॥ ७ ॥ ग्वारिन ढीठ गवारि कान्ह मेरो अ
ति भोरो ॥ तेरो गोरस बहुत भयो री मेरो थोरो ॥ ८ ॥ बोलत लाज
नहीं तुम सब तुम भई हो ग्वारि ॥ एसी कहो हरि करे कन हीं ब
ढावत रारि ॥ ९ ॥ अहो जसोदा महरि पूत की मासी पीवे ॥ हमे
कहां सुनि है न बहुत दिन मोहन जीवे ॥ १० ॥ सुत के कामन जा
नई करे आपनी टेव ॥ इस गेयनि ने को बडो अहीर जानि सब
एव ॥ ११ ॥ कहां गैयन की चली कहां अब चली जानि की ॥ बस
तभई में तुम जु कहत अन मिलत बान की ॥ १२ ॥ जैसी मो सों क
हति हों को सुनि के पतियाइ ॥ कौन प्रकृति तुम को परी मोहि
कहो समुझाइ ॥ १३ ॥ अहो जसोदा बात काल की सुनी के नाहीं ॥ बं
सी बट की छांह यहीं हरि मेरी बाहीं ॥ १४ ॥ हों सकुचन बोली नहीं

बहुसखियनकीभीर ॥ गहिबहियां मोहिलेंचले हूं समुनाकेती
र ॥ १५ ॥ श्रीमयमत्तगवारिफिरतजोबनमदमांती ॥ गोरसबे
चनहारिगर्वगूजरइतराती ॥ १६ ॥ अनमिलनीबातेंकहत
तानेसुनियेंनाहि ॥ कहांमोहनकहांतूरहैंकवरीगहीनेरी ।
बांह ॥ १७ ॥ साचीमेंसबकहतहूंनहिंकाहेहोतुमसों ॥ सुतकी
राखतिकांनिबिलगमांननहोंहमसों ॥ १८ ॥ कुंजनिमेंक्रीडा
करेंजनुवाहीकोराजु ॥ संकसकुचमाननतनहींरहतभएसि
रताज ॥ १९ ॥ एसीबातेंकहतमनोंहरिबरसबीसकों ॥ दसह
सहोनहिंजाइनेंकडुरोईसकों ॥ २० ॥ दिनदिनतुमयहकहति
हौमोकोंआवतिलाज ॥ माखनमांगतरोइकेंरोषदेतवेका
ज ॥ २१ ॥ दूसिजोंननहेंमंत्रजंत्रसीष्योकहूंटोंना ॥ वनमेंतरुनक
हाइगेहआवतहेंछौंना ॥ २२ ॥ एकदिवसकितहेखिहौंअंत
रह्यौंछिपाइ ॥ दसंकेहेंकेंवीसकेनेंननदेषोआइ ॥ २३ ॥ जासु
चलीनिजगेहबहुरिहमदेखनएहें ॥ बीतनीसरसबरसाए
कदिनलेखोएहें ॥ २४ ॥ दीढिलगावततोकोंन्हकोंजरेंबरेंबह
आंखि ॥ धिगरीधिगवाछीरकोंमोहिबुलावतिसाखि ॥ २५ ॥ धि
गहेंहमरोंपूतधिगतुमहमकोंकीनों ॥ सुतकोंकाजनिनाहि
कोटिएकगारीदीनों ॥ २६ ॥ सुतमैयारोऊवनेवेमगरोकनजा
इ ॥ आयकहेंदुखआपसेसबकोंउठतिरिसाय ॥ २७ ॥ कहांकहू
छबितुमबातकाहूकोंकहूंचलावत ॥ तरुनइहांतुमकहतमो
हिकेसेंयहभावत ॥ २८ ॥ बहुबडराहनोंमोहिरियोंअबजिनि
एसोंदेहु ॥ तुमतरुनीहरितरुनहिं मनअपनेगुनलेहु ॥ २९ ॥
निरउत्तरभईग्वारिबहुरिकछुकहतनआवें ॥ मनकछुउप
जीलाजगुपनहरिसोंचितलायो ॥ ३० ॥ लीलाललितगुपालकी
कहतसुनतसुखदाइ ॥ दांनचरित्रसुखदेखिकेंसूरदासब
लिजाइ ॥ ३१ ॥ रागबिलावल ॥ जुवतीअंगसिंगारसवारति ॥
वेंनीगूथीमांगमोतिनकीसीसफूलउरधारति ॥ १ ॥ गोरेभा
लबिंदूसेंदूरपरहीकोंथरह्योंजराइ ॥ वदनचंदपररविताराग
नतापरउदितसुभाइ ॥ २ ॥ श्रवणनिसुभंगतरोंनाराजतइहि
उपमानहिंपार ॥ मनोंकामविवफंदबनाएकारननंदकुमार
३ ॥ नासानथमुकताकीसोभारह्योंअधरनटजाइ ॥ दाडिमक
नसुकलेनवन्योंनहिंकनकफंदरह्योंआइ ॥ ४ ॥ दमकतदस

॥ सू०सा नअरुनअधरनपर चिवुकदिठौना भ्राजत ॥ चंपकली दुलरी
॥ २२० तिलरी तरसुभगहू मेलविराजत ॥ ५ ॥ कुचकंचुकी हृदमोतिन
केपोहे चनियोपोहे चीसोह्नति ॥ कंकनचुरी करनिफुंदनाबने
कंजयामअलिजोहृति ॥ ६ ॥ छुद्रघंटिका कटिलहृगारंगान
नतनसुखकीसारी ॥ सूरश्याम दधिवेचननिकरी पगनूपरधु
निभारी ॥ ७ ॥ रा ॥ गा ॥ मे ॥ रों ॥ ओरहूकोंन्ह करतकितऊगरो ॥ औरनि
धूंघुटपरि हूंठहूनमेसों दिनप्रति कलहकरत गहिडगरो ॥ १ ॥ वि
नवोंहू निनेकनहिरहो एसेंधौ निलेनकिनसगरो ॥ सबकोउ
जातमधुपुरी वेचनकोनें दियोदिसावहु कगरो ॥ २ ॥ इहांदान
काहूकों लागतकोनें दीयो अवधोंपगरो ॥ सूरसनेह ग्वार
मनअटकों छाडोदियोंपरतनहिनगरो ॥ ३ ॥ रा ॥ गा ॥ स ॥ रों ॥ जो
वनदांन लेहुगो तुमसों ॥ जाकेवलतुम वदतनकाहू कहुंहु
रावतिहमसों ॥ १ ॥ एसोधनतुमलियें फिरतहु दांनदेतमन
रान ॥ अतिहीगर्वतें कह्योंनमोसों नितप्रतिआवतजात ॥ २ ॥
कंचनकलसमहारसभारी हमरंककहांवहु ॥ सूरसुनों
कितभारमरतहो हमेंनमोलिदिखावहु ॥ ३ ॥ रा ॥ गा ॥ सा ॥ रं ॥ ग ॥ एसो
दांननमांगियें जूमोपैंदियोंनजाइ ॥ वनमेंपाइअकेलीसुवती
तुमारगरोकतआइ ॥ घाटवाट औघटजमुनातटवातेंक
हनवनाइ ॥ कोउनलीनलेतहें एसोकोनेंसिखेंपठाइ ॥ २ ॥ हु
मजांनतितुमयोंनहिंरहिहो रहिहोगारीषाइ ॥ जोरसचाहो
सोरसनाहिं गोरसपीवोंअघाइ ॥ ३ ॥ औरनसोंतोंलीजेंमोह
नतवहमदेंहिवुलाइ ॥ सूरश्यामकितकरतअचगरी हम
सोंकुवरकन्हाइ ॥ ४ ॥ रा ॥ गा ॥ सा ॥ रं ॥ ग ॥ मोंहनतुमकवकेभयेदां
नी ॥ मटकीफोरि हारगहितोह्यों इनवातननपहचानी ॥ १ ॥ नंद
महरकीकांनिकरतिहों नहिंकरतीमिजमांनी ॥ भूलिगई
सुधितादिनकीजववांधेजसुमतिरांनी ॥ २ ॥ अवलोंसहीतु
म्हारीढीठ्यो तुमयहकहतडरांनी ॥ सूरश्यामकछुकरतनव
निहंनृपपावेंगोजांनी ॥ ३ ॥ रा ॥ गा ॥ सा ॥ रं ॥ ग ॥ कन्हैयाहारहमारोदेहु
दूधदहीघृतजोकछुचाहों सोतुमएसेंईलेहु ॥ १ ॥ कहांकरो
दधिदूधतुम्हारो वासोंनाहिनकांम ॥ जोवनरूपदुरायधरयो
हे ताकोंलेननदांम ॥ २ ॥ नीकेंमनहें मांगतनतुमसोंवेंदनहीउ
दनांखत ॥ सूरसुनोरीग्वालिसयानी अंतरहमसोंराखत ॥ ३ ॥

रागसोरठ ॥ हमकोंलाजनतुमेंकन्हाई ॥ मोहमयहीमारगा
सवआईतौतुमहमसोंकरतढिठाई ॥१॥ हाहाकरतिपाइने
रेलगातरीतीमटकीरेहमगाई ॥ काकोंवदनप्रभातहिदेषो
घरतेंहमछीकनहीआई ॥२॥ उतेंजातहींसखीसहेलीमेंहीं
सवकोंइहांफिराई ॥ सूरस्यामअधमइहमेंसवलागततुमें
भलाई ॥३॥ रागधनाश्री ॥ वातकहतसकुचनिइतरात ॥ हमजा
नीअववाततुम्हारीसूधेंनहीपत्यात ॥१॥ पहेंवडेंदूरवगांव
वांसकोंचीन्हेंकोनसकाति ॥ हरिमांगतहेंदांनआपनोकह
तमांगिकिनषांति ॥२॥ घाटवाटतुमसवेंउगाहतअपनोंरं
गजगात ॥ सूरदांनकोंलेखोंदीजेंकोउनकहेंपुनिवात ॥३॥
रागपूरवी ॥ कोंनकान्हकोंतुमकहांमागत ॥ नीकेंकरिसव
कोंहमजांनतनवातेंकहतिअनागत ॥१॥ छांडिदेहुहमकोंजि
निरोकोंतृष्णावढावतरारि ॥ जेहेंषातदूरिलेंऐसीपरिहेंव
हुतकुठार ॥२॥ आजुहिदांनपहरीयहांआपकहांदिषावहु
छांप ॥ सूरस्यामवैसेचालियेंज्योंचलेतुमारोवाप ॥३॥ रागकां
न्हरो ॥ कांन्हकहतदधिदांननदेहो ॥ लेहोंछीनिदूधदधिमा
षनदेषतनहीतुमरेहो ॥१॥ सवहिनकोंभरिलेंहुआजुहीतव
छांडेमेंतुमकों ॥ घरतिहोतुममातपितालोंनहिजानततु
महमकों ॥२॥ हमजांनतिहेंतुमकोंमोहनलेंलेंगोदखिला
ए ॥ सूरस्यामअवभएजगातीवेदिनसवविसराए ॥३॥ रा
गकांन्हरो ॥ संगलेहुगोआगनकों खंजनकंजमीनमृगसा
वकभवरकों ॥१॥ कोकिलकीरकपोतकिसलतागहरकरि
सफनंगनिकों ॥ कुंदकलीवंधुकविंवफलवरनाटंकतरं
गनिकों ॥ सूरदासप्रभुहसिवसकीनोंनायककोटिअनंग
निकों ॥३॥ रागसारंग ॥ यहसुनिहसीसकलव्रजनारी ॥ आ
जुसुनैरीवाननईएकसिषयेंहेंमहतारी ॥१॥ दधिमाषनसा
यवेकोंचाहतमागिलेहुहमपास ॥ सूधेंवानकहेंसुखपावें
वांधनकहतअकास ॥२॥ अवसमुझीहमवाततुम्हारीप
ढएकचटसार ॥ सुनोंसूरयहवातकहोंजिनजानतनंदकु
मार ॥३॥ रागसारंग ॥ दधिकोंदांनमेंछियहुठान्यो ॥ सुनोंस्या
मअवतरुनभएहोआजुतुमेंहमजान्यो ॥१॥ जोकछुदूधदही
हमदेतीमिलिखातेंसवग्वाल ॥ सोउखोइहाथनेंवैठेहंसति

॥सूं॰सा॰ कहतिब्रजवाल॥२॥यहसुनिस्यांमसबनिकरतेंदधिमटकी
॥१११ लईछिनाइ॥अपुनखायसबनिकोंदीनोंअतिमनहरषब
ढाइ॥३॥कछुखायोंकछुभूअरकायोंचितेरहीब्रजनारि॥सूर
स्यांमवनभीतरजुवतिनिंरएंगकरतमुरारि॥४॥राग पूरवी
तुमोसोंदांनमांगिकिनिंदईनंदकेलाला॥एसीवातनरुग
रोंदानतमूंरखतेरोबोलनहूवाला॥२॥नंदमहरिकीकांनिकर
तिहोंछांडिदेहुतुमएसेख्याला॥सूरदासप्रभुमनहरिलीनोंनैंककहतभईग्वारिवेहाला॥२॥राग पूरवी॥एसेंजिनिबो
लोनंदकेलाला॥छांडिदेहुअंचरामेरोमोहनजांनतिओर
सीबाला॥१॥वारवारमेंतुमेंकहतिहोंपरिहेंवहुरिजंजाला
जोवनरूपदेषिललचानेअवहीनेएख्याला॥२॥तरुनाईतन
आवनदीजेंकितजियहोतवेहाला॥सूरस्यांमउरतेंकरस
रोंटूटेमोतिनमाला॥३॥राग कान्हरो॥दांनदीएविनुजांननपे
हों॥देहोंजबढरकाइगोरसहीतवहीदांनतुमदेहों॥१॥तुम
सोंवहुतलेंनहेंमोकोंइहिलेंताहिसुनाउं॥चोरीआवनिवेभि
जातहोंवहुरोमेंकहूंपाऊं॥२॥मांगतछांपकहांदिषराऊंकोंं
नहिहमकोंजांनत॥सूरस्यांमतवकहेंमवारिसोंतुममोकों
किनमांनत॥३॥राग कान्हरो॥कांन्हअवलंगरायोहेंठांनी
ओरनसोंतुमकहालेयोहेंमोहिंदिखावहुआंनि॥१॥मांग
तदांनदहीकोंसवलोंअवकछुओरेंठानी॥मांगतमोदधिसे
हमदेहेंकहाकहोंयहवांनी॥२॥छांडिदेहुअंचराफटिजेहेंतु
मकोंहमनीकेंपहचांनी॥सूरस्यांमतुमरतिपतिनायकनाग
रिअतिहिसयांनी॥३॥राग सारंग॥यहजांनतितुमनंदमहरि
सुत॥धेंनुदुहतनतुमकोंहमदेखतजवेंजातिहोंखरिकओ
रउत॥१॥चोरीकरतिरहोपुनिजांनतघरघरढूंढतभांडे॥
मारगरोकिभयेअवदांनीवेरंगकवतेछांडे॥२॥औरसुनों
जसुमतिजववांधेतवहमकियोंसहाय॥सूरदासप्रभुय
हजांनतहमतुमब्रजरहतकन्हाय॥३॥राग आसावरी॥को
नपिताकोमातहमारी॥कवजनमतहमकोंतुमदेख्योंहंसि
लागतसुनिवाततुम्हारी॥१॥कवमांखनचोरीकरिखायों
कववांधेमहतारी॥दुहतकोंनकोंगायचरावतवातक
हीयहभारी॥२॥तुमजांनतिमोहिनंदढुटोंनानंदकहांतेआ

www.vallabhacharyakrupa.org

यों ॥ मैं पूरन अविगत अविनासी माया सबन भुलायो ॥ ३ ॥ यह सु
निरवारि सबै मुसिकानी एसेहूं गुन जांनत ॥ सूरस्याम जो निर
दोस बहु निमात पिताहूं न मानत ॥ ४ ॥ राग गूजरी ॥ गिरवरध
ह्यौं आपने घरकों ॥ नाही केवल दांन लेत हों रोकि रहत तन
हीं धरकों ॥ १ ॥ अपने ही मुख बडे बदां वन हम हूं जांनत तुमकों
यह जांनत पुनि गाय चरावत नित प्रति जात हों बनकों ॥ २ ॥ मो
र मुकट मुरली पीतांबर देखें आभूषण तनकों ॥ सूर जकांधकों
मरि जांनत औरल कुटिया करकों ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ इहि कम
री कमरी करि जांनत ॥ जाकें जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनों अ
नुमांनत ॥ १ ॥ या कमरी के एक रोम पर वारों चीर पटंबर ॥ सो
कमरी तुम निंदति गोपी तीनि लोक आडंबर ॥ २ ॥ कमरी के
बल असुर संघारे कमरी ही सों भोग ॥ जांति पांति कमरी हूं मे
री सूर सबै यह जोग ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ धनि धनि यह कांम
री ह्यां मोहन लाल स्यांमकी ॥ यह ओढि जात बन हि यसें जक
रत तन नहि बूंदन निवारत हैं यह सीत घामकी ॥ १ ॥ यह ओढि
गवन करें यह सिसिर सी नरहैं यह नेल ले यहैं धरें ओटकों
र स्यांमकी ॥ यह जांति यह पांति यह परपाटी सब सिरवत
हें सूरदास प्रभु के बिसरांमकी ॥ २ ॥ राग बिलावल ॥ अब तुम
सांची बात कही ॥ इततें लजु वतिन कों रोकन मांगत दांन
दही ॥ १ ॥ जो तुम हमसें कह्यौ चाहत ही सो सब मुख प्रगटायों
नीकें जाति उघारि तिं अपनी जुवतिन भलों हसायों ॥ २ ॥ तुम क
मरी के ओढन हारे पीतांबर नहि छाजत ॥ सूरस्याम कारे त
न ऊपर कारी कमरी राजत ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ हरि तो रि बिस
राय दियो ॥ मैया सों कहन चली तुम दधि माखन सब छीनि
लियों ॥ १ ॥ रिस करि धाय कंचुकी फारी अबनों मेरो नाउ भयों
कालि नहीं इहि मारग एहें एसो मो सों बैर ठयों ॥ २ ॥ भली बा
त घर जाहु आजु तुम जो बन दांन नयों ॥ सूरदास मुख ही रिस
जुवतिनु अरु उर अंतर कांम जयों ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ एक ह्या
स मोहि कहूं दिखावति ॥ सखा सिखवत अंगसंग निहारें एस
व कत हि दुरावति ॥ १ ॥ मोतिन माल जराइ कोटिकों करनफू
लन कवेसरि ॥ कंठसिरी दुलरी तिलरी तर और हार इकनों
सर ॥ २ ॥ सुभग हमेल जराय की अंगियां नाग निजरति कीचों

www.vallabhacharyakrupa.org

सू.सा
११२

की ॥ बहुरौं कारव्रं कनवाजू बंद एते पहरें नो की ॥ ३ ॥ छुद्र घंटिका
जेहरि नूपुर बिछुवा पग सब लेरखो ॥ सहज अंग सोभा सब न्या
री कहत सूर लेरखो ॥ ४ ॥ राग जैतश्री ॥ याहू में कछु वांट तुम्हारो
अपने रज आइ सुनो री माई भूषन देखि न सकत हमारो ॥ १ ॥ क
हां घराय धरियो आपुन कें जसुमति के नंद ॥ घाट धरयो तुमय
हुं जानि कें करति ठगाइ कि को छंद ॥ २ ॥ जितनो पहरि आजु हम
आई घर रहे हैं याते दूनो ॥ सूरस्याम तुम देखि लुभानो वन देख्यो
है सूनो ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ याते तुम कौं ढीठ कही ॥ स्यामहि तुम भ
ई डिरकनहारि इतने पर सुनि हार नहीं ॥ १ ॥ तबते हमें देति
हौ गारी हम कों राहति आपु रही ॥ बनन करति हम सों झग
रति हो कहा करें हम बहुत सही ॥ २ ॥ समझि परी अब कछु
जिय जान्यो तातें हो सब मौन रही ॥ सूरस्याम भुज ऊपर दा
नी दुहि मारग अब तुम निबही ॥ ३ ॥ ७० ॥ राग कल्यान ॥ तुम
देखत रहिहो हो हम जेहैं ॥ गोरस बेचि मधुपुरी ते पुनि याही मार
ग एहैं ॥ १ ॥ ऐसे ही बैठे तुम रहिहो बोलें न आवन देहें ॥ धरि
लें जैहैं जसुमति आगे तब धों कैसी कैहें ॥ २ ॥ काहे कों मोतिन
लरतोरी हम पीतांबर लेंहें ॥ सूरस्याम सतराति इतने पर घर
बैठे तुव रैहौं ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ मेरी हठ कौं निबहन पैहो ॥ अ
बतो रोकि सबन बोरसो कैसें करि तुम जेहो ॥ १ ॥ दान लेहु
गो बहुत दिनन कों नखों करि सब देहो ॥ सो हठ करति हो नंद
बबा की मेवा रहहो न बजेहो ॥ २ ॥ आवत जात रहत इहिं ही प
थ मो सों बैर बढेहो ॥ सुनो सूर हम सों हठ माडत कोन नफा
कहि लैंहो ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन बात नयह कहत कन्हाई ॥ स
मुझति नहीं कहां तुम मांगत डरपावति कहि नंद दुहाई ॥ १ ॥
डरपावो तिन कों जे डरपें तुम ते घर हम नाहिं ॥ मारग छांडि
देहु मन मोहन दधि बेचन हम जाहि ॥ २ ॥ भली करी मोतिन
लर तोरे जसुमति सों हम लेहें ॥ सूरदास प्रभु यहें बनत नाहि
इतनो धन कहां पेहें ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ कांन्ह कहां गथ वा
हत हम सों ॥ नाकारण जुवती सब अरकी सो पूछति हों तुम
सों ॥ १ ॥ लोंग दाख सुपारी नारियर कहां ले रहे हम आवें ॥ ही
ग मिरच पीपरि अजवाइन ए सब बनज कहावें ॥ २ ॥ कुंठ
काई फल सों छिचिरंतां और जीरा कछु देखत ॥ आलमजीठ

www.vallabhacharyakrupa.org

लाखसेंदूरकहूं ऐसेधिगअबवेरखन ॥४॥ वाघविडंगावहेडहू
रडकहूंवैलगोंनव्योपारी॥ सूरस्यांमलरिकाईभूलेजोब
नमएमुरारी॥४॥ रागटोडी॥ भगनहेजअवतारधरो॥ कर्म
धर्मकेवसमेंनाहींजोगजगयमनमेंनकरो॥१॥ दीनगुहार
सुनोंअवनमिभरिगर्गवचनसुनिहृदयजरो॥ भावश्राधी
नरहोंसवहुनिकेंश्रीमनकाहूनेंकरोंरं॥२॥ अखिलकोटआदि
केव्यापकसवकोंसुखदेंदुखहिहरो॥ सूरस्यांमनवकही
प्रगटयहजहांभावतहंहैंनटरों॥३॥ रागधनाश्री॥ कांन्हक
हूंकीवातवलावत॥ ग्वारिपनालएककरिराख्योंजुवतिन
कोकहिकहावत॥१॥ जोलायकनोंअपनेघरकोंवनभीत
रडरपावत॥ कहांदांनगोरसकोंकेहैंसबेंनलेहुदिखाव
त॥२॥ रीतिजांनिदेहुघरहमकोंइतनेहींसुखपावति॥ सूर
स्यांममांखनदधिलीजेंजुवतिनकिनउरझावति॥३॥ रागध
नाश्री॥ मांखनदधिकहांकरेंतुमारो॥ ब्रजमेंतुमवनज
करतहोंनहिंजांनतिमोकोंघरवासी॥१॥ मेमनमेंअनुमान
करोंनितमोसोंकरिहैंवनजपसारों॥ काहेकूंतुममोहिकह
तहोंजोवनधनताकोंकरिहारो॥२॥ अबकेसेंघरजांनपाइ
होंमोक्योंयहसमुझाइपधारों॥ सूरवनजतुमकरतिसदांई
लेखोंकरिहैंआजनिवारों॥३॥ रागसूहो॥ कहांपरकतिहैंकां
न्हतुमारीकितमावनहोंघेरें॥ जेवतियांतुवहसनकहनहीं
पर्देचलतिरहूफेरें॥१॥ जवमुनिहैंयहबातआजुकीकांन्ह
जुवतिसबनेरें॥ सकुचतिहोंघरघरघेराकोंनेकलाजन
हिंतेरें॥२॥ आनिहींअवपरभईछांडेवितेंहसतिमुखफेरें॥
सूरस्यांमअवरुकतकहाहोंचेरीहैंकहूकेरें॥३॥ रागनट
दांनलेहुघरजांनिदेहुकाहेकांन्हरतहोंगारी॥ जोकछुकहें
करोंरीसोईयाहीमगआवेंविजमारी॥१॥ भलीकरीमांख
नदधिखायोंहारतोरिचोलीउरफारी॥ जोवनदांनकहूंको
ऊमांगतयहसुनिसुनिकेंलाजनमारी॥२॥ होतिअवारदूरि
घरहेंपियपेयालागतिडरतिहैंभारी॥ सूरजहमसोकेंसों
झगरेंतुमसुजानहमग्वालिनिवारी॥३॥ रागरामकली॥ राधे
सोंमांखनहरिमांगत॥ औरनकीमटकीकोंखायोंतुमरोकें
सोंलागत॥१॥ लेंआईवृखभांनसुताहंसिसदलोनीहैंमेरों

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा॥ लेहुनोंअपनेकरहुहरिमुखखातअलषहूमिहेरों॥२॥सबहु
॥२२३ निमेंमीठोंराधिकाकोंमधुरेंकह्योंसुनाइ॥सूरदासप्रभुसुख
उपजायोंव्रजललनामनभाइ॥३॥रागआसावरी॥लीलाब
र्नं॥सुनितमचरकोंसोरघोषकीनागरी॥नवसतसाजिसिं
गारचलीव्रजआगरी॥नवसतसाजिसिंगारहारपाटंबर
मोहें॥इकतेंएकविचित्ररूपत्रिभुवनमनमोहें॥इंहांवृंदा
राधिकास्यामाकोंमानेंरि॥ललिताअरुचंद्रावलीसखि
यनमध्यासकुमारि॥१॥चलीव्रजनागरी॥कोउरहीकोउरू
धधांकलेंचलीसयांनी॥कोउमरकीकोउमाटकोउनव
नीतमथानी॥घरघरतेंवनिवनिगाईजुरीजमुनातटजाइ
सबनहूरखमनमेंकियोंउठीस्यामगुनगाइ॥कहतव्रज
नागरी॥२॥पहुसुनिनंदकुमारसखारेंसेंनबुलाए॥मना
मनसुखासबलेंसेंनमहाराजजगाए॥नेनसेंनरेंसांवरे
राखेद्रुमनिछिपाइ॥औरगोपसबसंगलेंरोकिरहेमगजा
इ॥कहतनंदलाडिलो॥३॥एकसयानीसखीघोरिसबसखी
बुलाई॥यावनमेंइकवारलूटिहमलईकन्हाई॥तनकफेर
फिरिजाइयेंअपनेसुखअभिलाख॥यहरूगारोंसुनिहुइगों
गोकुलमेंउपहास॥कहतव्रजनागरी॥४॥उलरिचलीसब
ग्वारिकहीकोउजाननपावें॥रोकिरहेमगग्वालअपवा
ननविरमावें॥सखासुबलयोंबोलियोंतूंनागरिहूसिजोग
काहेवातबढावहीजाइहेसेव्रजलोग॥कहतनंदलाडि
लो॥५॥कानूंसभीकानूबेंनकाहूलेंपत्रबजाए॥छांडिछां
डिद्रुमडारउतरिधरनीपरआए॥गोपिनकेमधिराधिका
सखनमध्याबलबीर॥झगरोंठांन्योंदानकोंसोकालिंदीके
तीर॥कहतव्रजनागरी॥६॥हेंनागरीराधिदानकोंन्हछांडेंवृं
दावन॥औरगोपसबसंगचरावतबछरागोधन॥बडेगोप
कीलाडिलीतूंव्रषभांनकुमारि॥नेंकरहीकेकारनेंकितहि
बढावतरारि॥कहतनंदलाडिलो॥७॥इतनोंजोराधिबहुत
तनकहमपेंलेंषाहूं॥तुमआगेंजोढीठकोंन्हबरजोंकिना
ताहूं॥यामगगोरसबेचिकेंनितप्रतिआवनजांन॥हमेंछा
परिखरावहेंकापरपरस्योंदांन॥कहतव्रजनागरी॥८॥इतें
मानसतरातिग्वारिहमजाननिपाई॥अधिकअनुउतरदे

www.vallabhacharyakrupa.org

तकरतकितनेंनकषाई ॥ इननीहूमसोंकोकहूंयाहूंरावनवी
च ॥ पोंहौमीमारटरकायहौंमचेंरहीकीकीच ॥ कहतनंदला
डिले ॥ ९ ॥ अहौकन्हैयाढोठआहुतुमअजहुअनारी ॥ कोंपर
कहूस्योंदांनभएकवतेंअधिकारी ॥ मातपिताजेसेंचलेतैसें
चलियेंआप ॥ कठिनकंसमथुरावसेंकोंकहूलेइसराप क
हतिव्रजनागरी ॥ १० ॥ तूकहिजाइजोलजहांभूपालतुमारों
हौंवृंदावनचंदकहाकरिहेंसुहमारो ॥ मेघसहूसफणपा
पियोंसुरपतिलीनोंअंस ॥ अगिनिपांनकियोंसांवरेकहांबा
पुरोंकंस ॥ कहतनंदलाडिलों ॥ ११ ॥ जिनकेतुमसकुमारतिनें
हमनीकेंजांनें ॥ जोपूछोंसतभावआदिअनआदरठांनें ॥ वा
ननवंडेनहूंजियेसुनोंस्यांमउनपात ॥ गर्भसाठजसोदाकरी
तवतुमआएरात ॥ कहतव्रजनागरी ॥ १२ ॥ अरीसखिमयमत
कहौतेंवचनअनेरों ॥ कवहरिवालकभयेकिपोंकवगर्भ
वसेरों ॥ असुरपोंहौमीपरवाढियोंविधिकीनोंयहख्याल
कमलकोसअलिभोरहीत्योंभोरेगोपाल ॥ कहतनंदला
डिलों ॥ १३ ॥ मेंजोभोरीनंदकहतनमसोंव्रजढोटा ॥ दधिओर
नकेकाजदेहधरिआयोंछोटा ॥ गढिगढिछोलनसांवरेभ
लेवनावनकांम ॥ इहिधोखेंजिनभूलियोंहमसमरथकी
बांम ॥ कहतव्रजनागरी ॥ १४ ॥ जोहरिदेहनधरेंदीनकोंकों
नउवारें ॥ कंसकेसकोगहैंपोंहौमिकोंभारउतारें ॥ निगमक
हौंजसगांवहींमुनिकरहींध्यांवेंध्यांन ॥ सूरदासगोविंदकेपा
वेंपरसनिरवांण ॥ कहतनंदलाडिलों ॥ १५ ॥ जोरसनगुननां
मतुमारोंआयकन्हाई ॥ तोंनिरभयपरदेहुवेदहूंयहेंवनाई
जोगजुगतिकरिपावहीहमगनिकहांदयाल ॥ जलतरंगकेमीन
ज्योंवधेकर्मकेजाल ॥ कहतिव्रजनागरी ॥ १६ ॥ जटाभस्मतन
धरेंरूपाकेंकमेंवढावें ॥ पोंहौमीरांनपुनिरेंहिगुफावसिमो
हिनपावें ॥ तजिअभिमांनसुगांवहीगदगदकरिपरकास
इहरसमगनजुग्वालिनीनिहिघटमेंरोवास ॥ कहतनंदला
डिलों ॥ १७ ॥ जातुनहीतुमकोंन्हभयोंउपहासघनेरों ॥ हमअ
हीरमतिहीनमोहलेजीवजेरों ॥ हमजुप्रेमभईवावरीली
योंकंठलेहार ॥ नारिनतेघेराचल्योंकांन्हतुंसारेजार ॥ कहत
व्रजनागरी ॥ १८ ॥ सुवलसखोयोंकहोंग्वारिएककथासु

www.vallabhacharyakrupa.org

॥स०गु०॥ नाऊं ॥ तोतन नयहूं सुभाय रूप उपमान नहिं पाऊं ॥ गुपत्त प्रीति विधि
॥२५॥ नारची रसिक सांवरो जोग ॥ यह संजोग सुनि ग्वालिनी न्याय
हंसत व्रजन लोग ॥ कहत नंदलाडिलो ॥ १९ ॥ ऐसी वातें कहत
कांन्ह हमसों काहेते ॥ चोरी षाते छांछि नेंन भरि लेत गहे नें
देत उराहनो री ॥ वरे व छरा वहि जोर ॥ जसुमति ऊखल सों
वांधेत व हम री नें छोरि ॥ कहत व्रजनागरी ॥ २० ॥ वालकरू
प अजान कहां हम काहू जाने ॥ अनउत्तर धरि जाहु विलग
काहू की न माने ॥ वे दिन सुमिरो ग्वालिनी सांखि जमुन कों पां
न ॥ ह्यां ह्यां सबनि हमसों करी वसन चुराए जांन ॥ कहत नंद
लाडिलो ॥ २१ ॥ कछु भए अति ही ढोटे न मुख ऊपर गारी ॥ जि
ह्नि छांजें तिहि हेतु इहां को दासी तुम्हारी ॥ दुपिया दधि के कार
नें कोंन वढावें रारि ॥ या वन में इतराए नहिं रोकि वितानी नारि
कहत व्रजनागरी ॥ २२ ॥ गहि अचरा फके मोरि तोरि हार खव
लि डारी ॥ मटकी धरी उतारि मोरि भुज वंधु की फारी ॥ गोपमें
न रहें सांवरे कमरी धरी वुराइ ॥ पाव कमरी के कारनें अभरन
लेहु चुराइ ॥ कहत नंदलाडिलो ॥ २३ ॥ कीनी कमरी काज को
न ऐसों नहिं कीजें ॥ कांचपोति गिरि जाइ नंद घर कछु हूं न पू
जें ॥ अन तोलें नग आपि हैं सो कामरि कों तोल ॥ सीस मुकु
ट काराखिहूं कान्ह तोरी मोल ॥ कहत व्रजनागरी ॥ २४ ॥ शि
व विरंचि सनकादि आदि कोऊ नहिं जांनें ॥ शेष सहस्र फन
जोरि निगम अपति जुव खानें ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी है मेरे
मन मांहि ॥ भवन चतुर्दस रे रखियें वा कमरी की छांह ॥ कह
त नंदलाडिलो ॥ २५ ॥ जाको इतो प्रताप धेनु सों काहें चारें ॥ प
रनारी घर जाइ लोक लज्या कित हारें ॥ घर के वाढे राव रखा
तें कहत वनाइ ॥ ग्वालिनि नितें लेषात हैं रूठी छांछि छिना
इ ॥ कहत व्रजनागरी ॥ २६ ॥ गोकुल करत विलास सषा स
व संवें हमारे ॥ देवरूप सव ग्वाल करत को तुहल भारे ॥ य
ह रस वाढ्यो ग्वालिनी जित कित अमृत वेलि ॥ तिहूं लोक में
गाईयें श्रीवृंदावन केलि ॥ कहत नंदलाडिलो ॥ २७ ॥ लियो
उपरना छीनि दोरि हिडारन अटकायो ॥ दियो सखनि दधि वां
टि मांट पो ह्यों मींढ रकायो ॥ फेट पीतांवर सांवरे कर पलास
के पात ॥ हसत परस्पर ग्वालिनी सब विमल विमल दधि षां

www.vallabhacharyakrupa.org

त॥ कहत व्रजनागरी॥ २८॥ कान्ह अहीरों रे तफिरत जोबन
धनमाते॥ वसें एक ही गाऊं कानि राखत हैं ताते॥ तबन कछु
बनि आय है जब बढे है बरजन हार॥ बालनकों बलरे लिहैं
तबधरि है लाउ उतारि॥ कहत नंदलाडिलों॥ २९॥ अबलों
राखी कानि कांन्ह हम तुमसों नरि है॥ अधरनें नरिसकोंपि
वरजि अनउतर करि हैं॥ मोहें आगें कौ छोहराजी त्योंचा
हत मोहि॥ काके बल इतरात हो देउ ननरखभारिनोहि॥ कह
त व्रजनागरी॥ ३०॥ सुनत हंसे नंदलाल ग्वालिमन तोमम
आयो॥ सीखें अमृत वेंनकों पकुत नबाहिन सायो॥ जहां व
सानि हों ग्वारिनी सोपुर सुग्धग वारि॥ व्रजवासी कहुं जोन ही
तामसकों व्योहार॥ कहत नंदलाडिलों॥ ३१॥ हठछाडो नंदला
लसों न हम तुमें नरें है॥ बिना कहें व्रजलोग कहोंकैसें क
रिपे है॥ लाज न ही या बातकी बोलत हों सतराइ॥ कहूं कंस
सुनिपाइ है गहत फिरो गे पाइ॥ कहत व्रजनागरी॥ ३२॥ चितें
चितें मुसिकाइ हाथ रखि पूरन रहैंना॥ इतसुंदरी बनिताबचि
त्र उतें हरि स्यांमसलोंना॥ अति अमसतोहि ग्वारिनी हों जानो
तेरी आंरि॥ कहित तुराई आपही करन चली फिरियारि॥ क
हत नंदलाडिलो॥ ३३॥ लई आदनी छोरिडार ऊपर अटकाई॥
हियो सबनि रखि बांकूटा कि मटकी ढरकाई॥ करत कोन
खिवहार जियहि तोहि लाजन आई॥ औरसु एसें करें कहुं
कैसें पतियाइ॥ सिरते मटकी उतारि कें कर पलास के पात
चाटि करै वपरवें ठिकें बिमल बिमल सब खात॥ कहत व्रज
नागरी॥ ३४॥ शोषसेज बिसरें पुहुमि जाकी फुलवारी॥ पवन
बुहारें पौरि सदा शंकर कुतवारी॥ धर्मराज जेहे पोमिया
सनिकारिक पतिहार॥ मेघछांनवें कोटि हैं जलढोवें पनि
हार॥ कहत नंदलाडिले॥ ३५॥ जननी जनी परहर्यो तातको
धर्म नसायो॥ नंदगोप घर आय पिताकों नाउ धरायो॥ इत
ने तें इतनों कियो षाटी छाछि पिवाइ॥ तुमें दोष नहि सांवरे
ओछे गुन न हि जाइ॥ कहत व्रजनागरी॥ ३६॥ अविगत अ
गम अपार अलष अच्युत अविनासी॥ आदि परमपुरुषो
त्तम माया जिनकी दासी॥ तेगहि मिले अहीर छे भये कहारही
गहि मोंन॥ तेरे आये ग्वारिनी हमें ओछौ कोन॥ कहत नं

www.vallabhacharyakrupa.org

सू॰सा ॥ नंदलाडिलो ॥३७॥ हमश्रोछीहैंकांन्ह जिनकनितुमसेंप्रतिप्यारे
॥१२५ तुमपूरेसबभांतिमातपितुसंकटटाले ॥ चलतकहांउप
राहटेंब्रजहूंनहीखिसियात ॥ तुहितनटेंसिरपूछिहोंजि
निपटकेहैंसात ॥ कहतब्रजनागरी ॥३८॥ केसीकंसकोंग
हूंपुहुमिकोंभारउतारे ॥ चोरीजाएमातगोरगोकुलपग
धारे ॥ एतोंबहुतबनाइहूं रहीदूधकीघात ॥ जोपेंतुमव
लवीरहेंमधुवनिलोकनजात ॥ कहतनंदलाडिलो ॥३९॥
जबजेहेंमधुपुरीबहुरिगोकुलनहिएहो ॥ पहुश्रपनोंप
रतापनंदजसुदेंदिखरेहो ॥ वचनलागिहमहूंकियोंजसो
दाकोंपयपांन ॥ मोहिगोपाजीनिजांनियोंग्वारिनिसुनोनिदा
न ॥ कहतब्रजनागरी ॥४०॥ बहुतदिननमेंकांन्हआजुइहिमा
रगआई ॥ तुमदेखतनंदलालबहुतहमदुखदई ॥ कांन्ह
बिलगजिनिमांनियोंराखोपिछिलोंनेह ॥ दूधदहीकी
कोकहेंजोभावेंसोलेहु ॥ कहतनंदलाडिलो ॥४१॥ लेंश्रापें
दधिधरेंकान्हलीजेंजोभावें ॥ घरमजारीजाइकाजकाहू
नहिश्रावें ॥ हमेंश्रनखयावातकीलेतदांनकोनाउ ॥ हमतु
मतोंब्रजलाडिलेबसेंएकहिंठाउ ॥ कहतब्रजनागरी ॥४२॥
तबएकसखीश्रातुरीस्यांमकेरूपसमानी ॥ गुपचलीदेंसें
नकांन्हप्रेंनरंगविजानी ॥ कुंजकुटीमेंलाडिलीश्राईभलों
मनाइ ॥ अबतोंसिरायेंश्रोरकीसबहुनिपाएजाइ ॥ कहत
नंदलाडिलो ॥४३॥ हमतावापितननतरुणहूपात्रिभुवनम
नमोहें ॥ तुमतीनिलोकपरमांनछत्रसिंहासनसोहें ॥ हम
हीगरबमतग्वारिनीदेखिचरितइहिकाल ॥ मेंश्रहीरढोटो
दईजयजयमदनगुपाल ॥ कहतब्रजनागरी ॥४४॥ धन्य
नंदकोंगेहधन्यगोकुलजहांश्राए ॥ धनिगोरसधनिमो
पिकाजिहिदेखनधाए ॥ धनियहरूगरोंश्राजुकोंइहिसु
खनाहीपार ॥ नंदसुवनपरकीजियेंतनमनधनबलिहा
र ॥ कहतनंदलाडिले ॥४५॥ श्रभरणदियेमगाइकियोंगो
पिनुमनभायों ॥ हिलिमिलिकियोंसनेहश्रापकरमाटउ
ठायों ॥ जुगलकिशोरकेवारनेंगईसकलब्रजनारि ॥ कुंज
केलिमनमेंबसीगाएसूरसभारि ॥ कहतनंदलाडिलो
॥४६॥ श्रथप्रेमलीलागोपिकाकोंप्रेमवर्णनं ॥ रागबिलावल

www.vallabhacharyakrupa.org

ल॥ ग्वारिनि प्रघर्यो पूरननेहु॥ दधिभाजनसिरपरधरेक
हतगुपालहिलेहु॥ १॥ वनवीथनिनिजपुरगलीजहांत
हांहरिनाउ॥ समुफाईसमुफेनहीसिषदेविषकोनाउ
२॥ पानकियोजैसेंवारुणीमुखबलकततननसंभार॥ प
गडगमगजिनतितधरेंविथुरीअलकलिलार॥ ३॥ को
नसुनेंकासोंकहूकाहूनसुरतसंकोच॥ कोअनुपपकों
पपचलेंकोउत्तमकोपोच॥ ४॥ चित्तआकर्ष्योसांवरे
मुरलीमधुरबजाइ॥ जिहिलज्याजगलज्जियोसोलज्याग
ईलजाइ॥ ५॥ लज्यातरलतरंगिनीविचगुरुजनगहरीधा
र॥ दुहकुलपरमितनहीताहिनरजनलागीबार॥ ६॥ मालि
तानिकटतडागकेलीनोंकूलेविदारि॥ नाउमिल्योसलि
ताभईअबकोंननिवेरेंवारि॥ ७॥ ज्योंटीपकमंदिरदिपेंबा
हरलखेंनकोइ॥ तनहिपरसिप्रगटीदिवाउपतकोंन
विधिहोइ॥ ८॥ विधिभाजनछोटोरच्योमुखसोभासिंधुअ
पार॥ उलटिमगनतामेंभईअबकोंगनिवेरेबारि॥ ९॥
प्रेममगनग्वारिनभईसूरजप्रभुकेसंग॥ अवएनेंनमु
खनासिकाज्योंकाचुरीभुवंग॥ १०॥ रागबिलावल॥ रीती
मटकीसीसधरें॥ वनकीघरकीसुरतनकाहूलेहुहर
ईपहकहतफिरें॥ १॥ कवहूंकजातिकुंजभीतरकोंतहां
स्यामकीसुरतिकरें॥ चोंकिपरतकछुतनसुधिआवत
जहांतहांसखिसुनतफिरें॥ २॥ तबयहकहतिकहांमें
इनसोंभ्रमिभ्रमिवनमेंव्यथामरें॥ सूरस्यामकेरसपुनि
छांकतवैसेईढंगबहुरिधरें॥ ३॥ रागनट॥ तरुनीस्यांम
रसमतवारी॥ प्रथमजोबनरसचढायोअबहिभईकुमा
री॥ १॥ दूधनहीदधिनहीमाखननहीरीतोंमाट॥ महारस
अंगअंगपूरनकहांघरकहांवाट॥ २॥ मातपितगुरजन
कहांकोंकोंनपतिकोंनारि॥ सूरप्रभुकेप्रेमपूरनछाकि
रहीव्रजनारि॥ ३॥ रागरामकली॥ गोरसलेहुरीकोउआइ
द्रुमनिसोंयहकहतिडोलतिकोंनलईवुलाय॥ १॥ कव
हूकजमुनातीरकोंसबजानिहेंअकुलाइ॥ कवहूवंसी
वटनिकटजुरिहेंतिछाटीआइ॥ २॥ लेहुगोरसदानमों
हनकहांरहेछिपाइ॥ डरनितुमसेंजानिनाहिलेतरहें

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा.॥ छिड़ाइ ॥३॥ मांगिलीजैरांन अपनोंकहूं तहैं समुझाइ ॥ आ
॥२२६॥ इहोंपुनि रिसकरन न हरि इहां रैन बहाइ ॥४॥ एक एक करि
बातबरनन कहां गए कन्हाइ ॥ सूर प्रभु के रंग राची जि
य गयो भरमाय ॥५॥ रा॥ गजै॥ त श्री॥ बैठि गई मरकी सिर
धरिकैं ॥ यह जानति अबनहीं हैं आवति ग्वाल सखा संग
हरिकैं ॥१॥ अंचल सों दधि माट दुरावत दृष्टि गई नहूप
रिकैं ॥ सवनि मटकि पारोती देखी तरुनी गई भभरि कैं ॥२॥
करि करि ढुठी जहां तहां सब मिलि गोरस गायो कहूं टरि
कैं ॥ कोउ कोउ कहैं स्याम दरकायो जानि देहु री जरि कैं
॥३॥ इहि मारग कोऊ जिनि आवहु सकरि चली डगरि कैं
सूर सुरत तनकी कछु आई उन रखां मल हरिकें ॥४॥ रा
गनट ॥ चकृत भई घोषकुमारि ॥ हम नहिं घर गई तव तें
रही विचार विचारि ॥१॥ घर ही तें आन हम गाइ सकुचीव
दननिहारि ॥ कछु हम न कछु डरत गुरजन रैन देहैं गारि
॥२॥ जो भई सो भई हम कह रही एक वार ॥ सखा संग मिलि
खाइ दधि नवहीं गए वनवारि ॥३॥ इहां लोंकी वात जा
नत पह अचंभो भारि ॥ पछोंन न सूर के प्रभु गए लसिरक
छुडारि ॥४॥ रा॥ गधना॥ श्री॥ स्याम विना यह कौंन करै ॥ चित
वतही मोहनी लगाई नेंक हसनि पर मन नहिं हरै ॥१॥ रोकि
रह्यौ आन नहि हमारग लेखों करि दधि दांन लियो ॥ न
नकी सुधि न वहीं न भूली कछु पढिकें सिर नायरियो ॥२॥
मन के करत मनोरथ पूरन चतुर नारि यहि भांति कहैं ॥
सूर स्याम मन हरयौं हमारो तिनि विन कहूं कैसें निवहैं ॥३॥
रा॥ गसो॥ रठि॥ लोक सकुच कुल कांनि तजी ॥ जैसें नदी सिं
धुकों धावै वैसें ई सव ग्वालि भजी ॥१॥ मात पिता वहु त्रास
दिखावत नेंक न डरी लजी ॥ हारि मांनि वैठि नहिं लागत
वहुतें विधनास जी ॥२॥ मानति नहीं लोक मरजादा हरि
केंरंग मजी ॥ सूर स्याम के यों रंग राची ह्रदर चून ज्यों रंगो
छजी ॥३॥ रा॥ गसो॥ रठ॥ वारवार जननी समझावति ॥ काहे कों
तुम जहां तहां डोलत हमकों अति हिं लजावति ॥१॥ अपने कु
लकी सुधि रिकरौ धौं सकुच नहीं जिय आवति ॥ दधि वेचौं
घर सूधें आवहु का हें रैर लगावति ॥२॥ यह सुनि कें मन

www.vallabhacharyakrupa.org

हारखवढायोंतवरूकवुद्धिवनावति॥ सुनिमैयादधिमाख
णयोंतिहिंडरवानन्आवति॥३॥ जांनिरहूकेंतोदधिढो
स्यौंएसेवचनसुनावति॥ सुनोंसूरइहिवांतडरानीमैया
लेउरआवति॥४॥ राग धनाश्री॥ पलकओटनाहिंहोतक
न्हाई॥ घरगुरुजनवहुतेंविधित्रासतिलाजकरावतला
जनआई॥१॥ नेंनजहांदरसनहरिअटकेंश्रवणथकेंसु
निवचनसुहाई॥ रसनाऔरकछुनाहिंभाषतस्यांमस्यांमर
टयहैंलगाई॥२॥ चितचंचलसंगाहिंसंगडोलतलोकला
जमरजादमिटाई॥ मनहरिलीयोंसूरप्रभुतवहीतनवपु
रवीकहांवसाई॥३॥ राग सारंग॥ नेंकनहींघरसोंमनलाग
त॥ मातपितागुरुजनपरवोधतनीकेंवचनवांनसमला
गत॥१॥ तिनकोंधिगधिगकहतमनमेंइनकोंवनेंभलें
हीत्यागत॥ स्यांमविमुखनरनारिवृथासवकेंसेंमनइन
सोंअनुरागत॥२॥ इनकोंवदनप्रानदरसोंजिनवारवारवि
धिसोंयहमांगत॥ यहतनसूरस्यांमकोंअरप्योंनेंकटर
तनाहिंसोवतजागत॥३॥ राग कान्हरौ॥ दधिवेचतव्रजगलि
नफिरें॥ गोरसलेंनवुलावतकोऊताकीसुधिनाहिंनैंकध
रें॥१॥ उनकीवातसुनतश्रवणनिकहांकहतिघरनि
परें॥ दूधदहीइहांलेतनकोऊप्रातहिंतेंसिरलियेंअरें
॥२॥ वोलिउठपुनिलेहुगुपालहिंघरघरलोकलाजनकरें
सूरस्यांमकोंरूपमहारसजाकेवलकाहूंनडरें॥३॥ राग टो
डी॥ याघरमेंकोउहैंकेंनाहीं॥ वारवारपूछतितरुनिकों
गोरसलीजेंकेंहमजाहीं॥१॥ आपुहिंकहतिलेतनाहींदधि
औरद्रुमनितरूजांनि॥ मिलतपरस्परविटपनदेखतक
हतकहांइतरांति॥२॥ ताकोंकहतआपसुधिनाहींसो
पुनिजाननताहिं॥ सूरस्यांमरसभरीगोपिकावनमेंयोंवि
ततताहिं॥३॥ राग मलार॥ कोऊमाईलेहेंरीगोपालहि॥ दधिकों
नामस्यांमसुंदररसविसरिगयोंव्रजवालहि॥१॥ मटकी
सीसलियेंव्रजडोलतिवोलतवचनरसालहि॥ उफनतत
क्रचहूंदिसचितवतचितलाग्योंनंदलालहि॥२॥ हसति
रिसातिवुलावतव्रजमेंदेखोंउलटीवालहि॥ सूरस्यांम

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा.॥ बिनश्रोमनभावेंयाविरहनिबेहालहि ३ ॥ राग धनाश्री ॥ बेचति
॥२२७॥ हूंदधिकीब्रजखोरी ॥ सिरकोंभारसुरतनहिंश्रावतस्यांमस्यां
मरटरतिभईबोरी ॥ १ ॥ घरघरफिरतगोपालहिबेचतमगन
भईमनग्वारिकिशोरी ॥ सुंदरबदननिहारनकारनश्रंतर
लाखीसुरजिकीटोरी ॥ २ ॥ ठाढीरहतिथकितमारगमेंमांठ
बांटलेंमटकीफोरी ॥ सूरदासप्रभुरसिकसिरोमनिचितवि
तामनिलियोश्रजोरी ॥ ३ ॥ राग कांन्हरो ॥ दधिमटकीसिरलि
येंग्वालिनीकांन्हकांन्हकरिडोलेंरी ॥ बिबसभईनसभारेंगो
रसश्रापबिकोबिनमोलेंरी ॥ १ ॥ जोईपूछतियांमाहिंकहेंहूं
लेहुलेहुकहिबोलेंरी ॥ सूरदासरसभईग्वारिनीबिरहाबस
गतिभोलेरी ॥ २ ॥ राग रामकली ॥ गोरसकोंनिजनामभुलायो
लेहुलेहुकोउगोपालहिगलिनगलिनयहशोरलगायो
॥ १ ॥ कोउकहेंस्यांमकृस्नकहेंकोउश्राजुदरसनाहीहमपा
यो ॥ जाकोंसुधितनकीकछुश्रावेलेहुदहीयहकहतसुना
यों ॥ २ ॥ इककहिउठतिदांनमांगतहैकहूंभईकेंतुमेंचला
यों ॥ सुनोसूरतरुनीजोबनमदतापरस्यांमसहांरसखायो
३ ॥ राग बिलावल ॥ नरनारीसबपूछतिधाई ॥ दूधदहीमटकी
सिरलीनेंबोलतिहोंगोपालसुनाई ॥ १ ॥ हमेंकहोतुमकहति
कहांहोंफिरतश्रापनहीतेहोंश्राई ॥ ग्रहग्रहोंकछुहैकेंनाही
मातपितापतिबंधुनभाई ॥ २ ॥ इततेंउततेंउततइतश्रावतबि
धिमर्जादसबेंबिसराई ॥ सूरस्यांममनहरयोंहमारोहमजा
नीयहबानबनाई ॥ ३ ॥ राग कांन्हरो ॥ ग्वारिनिफिरतिबेहालसों
दधिमटकीसिरलीनेंडोलतिरसनारटतिगोपालसों ॥ १ ॥ गे
हनेहसुधिदेहबिसारीजीयपरयोंहरिख्यालसों ॥ स्यांमधा
मनिजबांमरच्योरचिरहतिभईजंजालसों ॥ २ ॥ छलकतत
कउफनिश्रंगश्रावतनहिंजानतनिहिंकालसों ॥ सूरदास
चितठौरनहीकहूंमनलाग्योनंदलालसों ॥ ३ ॥ राग सूहो ॥
छोटीमटकीमधुरचालचलिगोरसबेचनग्वालिरसाल ॥
हरबराइउठिचलीश्रानहीबिथुरेकचसोहतिउरमाल ॥ १ ॥
गेहनेहसुधिनेंकनश्रावतमोहिरहीतजिभवजंजाल ॥ श्री
रकहतिश्रोरेंकहिश्रावतमनमोहनकेपहपरीख्याल ॥ २ ॥

www.vallabhacharyakrupa.org

जोईजोईपूछतिहैंस्कहांयांमेंकहतिफिरतिकोऊलेहुगो
पाल ॥ सूरदासप्रभुकेरसबसह्वैचतुरग्वारिनीभईबेहाल
॥३॥ रागधनाश्री ॥ कहतिनंदघरमोहिबतावहु ॥ द्वारेंआंकबात
यहपूछतिबारबारकहिकहांरिखावहु ॥२॥ यहींगांवऔर
केंधोंकहूंनहींमहरिकोगेहु ॥ बहुतदूरितेंमेंआईहोंकाल्हि
सुकाहूनलेहु ॥२॥ अतिहींसंभ्रमभईग्वारिनीद्वारेंहीपरठाडी
सूरदासस्वामीसोंअरबीप्रीतिप्रगटअतिबाढी ॥४॥ रागगौ
डमलार ॥ नंदकेद्वारनंदगोहपूछति ॥ इतहितेंजातिउतउत
हितेंफिरतिइतनिकटह्वैजातिनहिनेंकसूझें ॥२॥ भईबेहा
लब्रजबालनंदलालहितअरपितनमनसबैतिनेंदीनों
लोकलज्जातजीलाजदेखतभजीस्यांमकोंभजीकछुडर
नकीनों ॥२॥ भूलिगयोनामदधिकोंकहतिस्यांमयोंनहिसुधि
धांमकछुहोंकिनाहीं ॥ सूरप्रभुकोंमिलीमेटिमिलअनभली
चूनहरदीरलीदेहछांहीं ॥५॥ रागधनाश्री ॥ बारबारमोहिका
हांसुनावति ॥ नेंकहूटरतनहींहिरदैतेंजितनीबातमनकोंस
मुझावति ॥२॥ कहांमोहिसिखवति[illegible]री तूतोंबडीसुजांन
अपनीसीबहुतेंमेंकीनीरहतिनमनतेरीआंन ॥२॥ लोचनऔर
नदेखतकाहूऔरकहतिनाहिआंन ॥ सूरस्यांमकोंनेंकमिला
वहुकरतरहतिघरआंन ॥३॥ रागनट ॥ मेरेकहेमेंकोउनाहीं
कहांकहौंकछुकहतनआवेंनेंकहूनउराउं ॥२॥ नैंननतेहरि
दरसलोभीश्रवणसब्दरसाल ॥ प्रथमहींमनगयोतजितन
तबभईबेहाल ॥२॥ इंद्रियनपरभूपमनहैंसबनिलियोबु
लाय ॥ सूरप्रभुकोंमिलेसबएमोहिकरिगएबाय ॥३॥ रागगौ
री ॥ कहांकरोंमनहाथनहीं ॥ तुमसोसोयहकहतिभलेरीअ
पनोंबिनमोहिदेतनहीं ॥२॥ नैंनरूपअटकेनाहिआवतश्रव
णरहेसुनिबाततहीं ॥ इंद्रीधाइमिलीसबउनकोंतनमेंजी
वरह्योसंगगहीं ॥२॥ मेरेहाथनहींएकोऊहघटलीनेइकरहीं
मही ॥ सूरस्यांमसंगनेकहूंटरतन ॥ आंनिरहिजोमोहितुहीं
॥३॥ रागधनाश्री ॥ आपकहावतिबडीसयांनी ॥ तबतोंकहतिस
बनिसोंहसिहसिअबतोंप्रगटहिभईदिवांनी ॥२॥ कहांगईचतु
राईतेरीअतिहीकाहेभईअयांनी ॥ गुपतप्रीतिपरगटतेंकी
नीसुननकछुघरघरकीबांनी ॥२॥ एकहिबारतजीमरजाद

www.vallabhacharyakrupa.org

।। सू.सा. मातपितागुरुजननहिंभुलानी।। सुनोंसूरदासीनबूझियेंसीस
।। २२८ धरेंमरकीवितितांनी।। ३ ।। रागनट ।। सुनिरीमुग्धगुवारिगवा
री।। स्यांमसोंहितभलेंकीनोंदीयोंनाहिंउधारी।। १ ।। अबकहूंका
हूनसमुझिदेखतकह्योंसुनिरीनारि।। ओछीबुधितेंकरीसा
जनीलाजदीनीडारि।। २ ।। लाजआवतिमोहिसुनिसुनितो
हिकहतगवारि।। ग्वालनाहींआवहीमुखकहततोहिपु
कारि।। ३ ।। सूरप्रभुकोंपायकेंयहज्ञानहृदयविचारि।। ४ ।। रा
गधनाश्री।। कहांकहतितूमोहिरीमाई।। नंदनंदनमनहु
रिलियोंमेरोंतवतेमोकोंकछुनसुहाई।। १ ।। अबलोंनहि
जांनतिमेंकोंहूंकितनेतूमेंरेढिगआई।। कहांगेहकहांमा
तपिताहेंकहांसजनगुरुजनकहंभाई।। ३ ।। कैसीलाजकांनि
हेंकेंसीकहांकहतिहेंरिसहाय।। अबतोंसूरभजीनंद
लालहिलेंलघुताकेहोइवडाइ।। ४ ।। रागधनाश्री।। गोविंद
सोंप्रीतिकरततबहीक्योंनहटकी।। अबतोंबातफेलिग
ईजैसेंबहुबटकी।। १ ।। घरघरनितप्रतियहवांनीघटघटकी
मेंतोंयहसवेंसहीलोकलाजअटकी।। २ ।। मदकेहस्तीसमा
नफिरतप्रेमलटकी।। खेलतमेंचूकपरीमरनकलानटकी
।। ३ ।। जलरजमिलिगांठिपरीरसनाहरिरटकी।। छोरेतेंछूटे
नहिकईवारझटकी।। ४ ।। मेंटेंकवहूंनमिटतिछापपरीरट
की।। सूरदासप्रभुकीछविहृदयमांझअटकी।। ५ ।। रागगोरी
अबतोंप्रगटभईजगजांनी।। वामोहनसोंप्रीतिनिरंतर
क्योंअबरहेगीछांनी।। १ ।। कहांकरोंसुंदरमूरतिइननेंननमां
झसमांनी।। निकसतिनहीबहुतपचिहारीरोमरोमउरझांनी
।। २ ।। अबकेंसेंनिरवारिजाततहेंमिलीदूधज्योंपांनी।। सूरदा
सप्रभुअंतरजांमीउरअंतरकीमांनी।। ३ ।। रागगोरी।। कहांक
रोंगोकोउमेरों।। होंअपनेपतिव्रतनहिंनटिहोंजगउपहास
करोंबहुतेरों।। १ ।। कोउकिनलेंपाछेंमुखफेरोंकोऊयहश्र
वणसुनाइनटेरों।। होंमतिकुसलनाहिनेंकाचीहरिसंग
छांडिफिरोंबहुफेरों।। २ ।। अबतोंजियऐसोवनिआईस्यांम
धाममेंकरोंबसेरों।। तिहिरंगरंग्योंसूरमेरोमनहोतनसेत
अरुनापीरोरों।। ३ ।। रागआसावरी।। सखीरीस्यांममोहिसोंमन
मांन्यों।। नाकेकारिचितकमलनेंनसोंघालिएकठांसांन्यों १

लोकलाजउपहांसमनमांनोंन्योतिआपनेआन्यों ॥ यामोवि
दुचंदकेकारनवेंरसवनसोंठांन्यों ॥२॥ अवकौंजातिनि
वेरिसखीरीमिल्योंएकपयपांन्यों ॥ सूरदासप्रभुमेरेजीव
नहूंपहूलीपहूचांन्यों ॥३॥ राग रामकली ॥ मेरोमनहरि
चितवनिउरझान्यों ॥ फेरतकमलद्वारह्वेंनिकसेकरतसिं
गारभुलान्यों ॥१॥ अरुनअधरदसननिदुतिराजतिमोतन
मुरिमुसिकांन्यों ॥ उरधितनयसुतपांतिकमलमेंवदन
भूरिकेंमांन्यों ॥२॥ इहिरसमगनरहूतिनिसवासरहारजी
तनहिंजांन्यों ॥ सूरदासचितभंगहोतक्योंजोजिहिंरूपस
मांन्यों ॥३॥ राग कांन्हरो ॥ नाहिंनरहयौंमनमेंठौर ॥ नंदनंदनअ
छितकेंसेंआंनियेंउरऔर ॥१॥ चलतचितवततदिवसजाग
तसुपनसोवतरात ॥ हृदयतेंवहमदनमूरतिछिनन
इंततउतजात ॥२॥ कहतकथाअनेककोउलोकलोभदिखा
इ ॥ कहांकहोंचितस्यामसुंदरघटनासिंधुसमाइ ॥३॥ स्याम
गातसरोजआननललितमृदुवहास ॥ सूरहरिकेंद
रसकारनमरतलोचनप्यास ॥४॥ राग केदारो ॥ मेंअपनों
मनहरिसोंजोर्यो ॥ हरिसोंजोरिसवनसोंतोर्यौं ॥१॥ ना
चकह्यौंतवघूंघटछोर्यौ ॥ लोकलाजडुरफटकिपिछो
र्यौं ॥२॥ आगेंपाछेंनीकेंहेर्यौं ॥ कहांभयोकाहूमुखफोर्यौं
मांझवारमरजादीसिरफोर्यौं ॥ काहिंकाहूकासोंकरोंनि
होर्यौं ॥४॥ सूरदासप्रभुसोंचितजोर्यौं ॥ लोकवेदतिनुका
सोंतोर्यौ ॥५॥ राग अडानो ॥ सुंदरमुखसुखसदनस्यामकौ
निरखिनेंनमनथाक्यौं ॥ वारकमोवीथनिह्वेंनिकसेउ
झकिझरोखाझांक्यौं ॥१॥ उनकछुनेंकचतुरईकीनीगेंद
उछारिगगनमिसताक्यौं ॥ वारोंलाजवैरिनभईमोकौं
मेंगवारिमुखढांक्यौं ॥२॥ कछुकरिगएननकचितवनि
मेंतातेरहतप्रांनमरछांक्यौं ॥ सूरदासप्रभुरसवसलें
गयेहसनदहसनरसहांक्यौं ॥३॥ राग रामकली ॥ आजस
खीदेखेस्यामनयेरी ॥ मेंतवतेंपछितातिपहेंतननेंनन
वहुतभयेरी ॥१॥ जोविधनाएतीजांनतहोंकिनदृगादोइ
दयेरी ॥ निकसेआइअचानकअवहींदृसि[illegible]फिरिचि
तएरी ॥२॥ सवदेलेउलागवलोचनसखीजोकोउगढत

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा तनएरी॥ हरिप्रतिअंगविलोकनिमेंप्रतिकारिकेंपहएरी॥३
॥२२९ अपनीचोपकहूंतवहूपैपेंराउहरिसंगमएरी॥ थकेचरण
मुनिसुरवोधिगुनमदनवांनवधएरी॥४॥रा॥गौ॥रा॥ ब्रज
ललनादेखतिगिरधरकों॥ इकइकअंगअंगपररीझिउर
झीमुरलीधरकों॥१॥ मनोंविचित्रकीसीलिखिकाढीसुधि
नाहीमनघरकों॥ लोकलाजकुलकांनिभुलानीलुवधि
स्यामसुंदरकों॥२॥ कोउरिसाइकोउजायकहेंकछुडरेंन
काहूडरकों॥ सूरदासप्रभुसोंमनमान्योंजनमजनमपर
तरकों॥३॥रा॥ध॥ना॥श्री॥ गउवसनतएतेरिवसनिमेंआजु
कोंनहूमेंदेखे॥ जोंदिनगएविनाहरिदरसनतेसवगये
अलेखे॥१॥ कहियेंनोंजोहोयपरखोरीकहियेंकोअनुमा
नें॥ नंदकुमारनिकाईकोंमुखनेंननहीपहचानें॥२॥तव
तेंहूंपठगोरीलागीजुगसमानपलचितवत॥ कुलमर
जादगवाइसूरप्रभुफिरिफिरिमुखननचितवत॥३॥रा
ग॥नै॥नश्री॥ मेरेलोचनलालचीभए॥ सारंगरिपुकेरहतन
रोकेंहूरिछवहूपगिधाए॥१॥ काजरकुलफकियेहीराखत
पलककपाटदए॥ उसजतहीवरज्योंनहिमांनतवेहुनपि
स्यामपेंगए॥२॥ केरहतनहेंरूपकेमातेनंदनंदनरीझये॥
सूरदासप्रभुमोहनमूरतिविनामापमोलनलए॥३॥रा॥ग॥का
न्हरो॥ मारीकोंजानेंहरिकहांकीयों॥ मनसमुझतमुख
कहतनआवेंकछुइकरसनेंननजुपियों॥१॥ छाटीहूती
अकेलीआंगनआइअचानकदरसदियों॥ कछुसुधि
बुद्धिनरहीउनचितवतमनमेरोधोंपलटिलियों॥२॥अ
वसजओरदूसहदुखमाईछिनछिनजरतजुडातहियों
सूरसकलआनंदउरअंतरउपमाकोपावतनहियों॥३
राग॥सारंग॥ मेरेनेननिहीसवखोरि॥ स्यामसुंदरछविनि
रषिजुअटकेफिरेंनहीमतिथ्योरि॥१॥ जदपिजतनकीयेचि
तवनिमेंघूंघटओटअकोर॥ तदपिपउिमिलेवांधिकरव
गज्योंपलकपिंजरातोरि॥२॥ बुद्धिविवेकवलवचनवा
तुरीहूरुकरिलीनेचोरि॥ विवसभईमोहनसंगडोलति
ज्योगुडियाकीडोरि॥३॥ अवधोंकोंनहेतहरिहमसोंहेरि
हसेमुसकमोरि॥ सूरस्यांमसेंहोऊंसुभगसरोवरिउमगिचले

www.vallabhacharyakrupa.org

मिनफोरि॥४॥ राग सारंग॥ जाद्दिनतें स्याम दृष्टि परेरी॥ तादि
नतें मेरे इनि नैंननि और भयो दुखसुख विसरेरी॥१॥ सुंदर
अंग गोपाल लाल के प्रेम पियूष भरेरी॥ वसी वह मुसिका
नि माधुरी रचि रचि भवन करेरी॥२॥ पठवत तनमन नितिनें
मनावत निसरि न सहत अरेरी॥ ज्यों ज्यों जतन करत उल
टावति त्यों त्यों दृढ़ ठनि खरेरी॥३॥ थक्यौ सकल समुझाइ
चनी चपल पलक दृष्टि परेरी॥ सूरदास मनि रावत यह सोभा
पुनि पुनि प्रगट करेरी॥४॥ राग धनाश्री॥ एक गांवको वास
धीरज कैसें केंज्यु धरों॥ लोचन मधुप अटक नहि मानत
जद्दपि जतन करों॥१॥ उनतें वे आवत गोचारन हौं दृष्टि लें
निकरों॥ हरषत रोम होत गदगद सुर आनंद उमग भरों
॥२॥ विन देखें छिन जात कल्प सम विरहा अगिनि जरों॥ सूर
दास हौं कब लौं अनुदिन आरज पंथ डरों॥३॥ राग सारंग॥
चितवनी हरि मुखकी मुसिकानि॥ परवस भई फिरति संग
निसदिन सहज परी यह बांनि॥१॥ नैंनन निरखि वसी ठीकी
नी मन मिलि यों लें पांनि॥ ज्यों रवि नाथ तो कनिज पुरतें ह
रकों सुपने आंनि॥२॥ सुनि सजनी समुझि स्याम सुंदरकी दासी
सब अनुगजांनि॥ अबजो कहत सो कीजे आयुसमा
थें मांनि॥३॥ गई ग्यांन अभिमांन मोह मरजैन पितु पुरजन प
हचांनि॥ सूरसिंधु मन सा जल जैसें मनसा बूंद हिरानि॥४॥
राग विलावल॥ नैंनन सिखवत हार परी॥ कमल नैंन मो
हन विन निरखें रहत न एक घरी॥१॥ मैं कुलकांनि मांनि
सुनि सजनी घूंघट ओट करी॥ ए अकुलाइ मिलें हरि लें म
तनकी सुधि विसरी॥२॥ वदन छवि चितवनि चितवन इक
टक तें न टरी॥ सूरदास प्रभु लोक वेदकी मरजादां न डरी॥३॥
राग धनाश्री॥ लोचन भए पखेरू माई॥ लुवधे स्याम रूप राचे
कें अलक फंद परे जाइ॥१॥ मोरमुकट ठाढ़ी भई मांनो वैठ
त ललित त्रिभंग॥ चितवनि लकुट लाल लटकनि पियका
पाअलक तरंग॥२॥ दौरि ग्रहनि मुसिकांनि पियाकी लोभ
पिंजरा डरी॥ सूरदास मन व्याध हमारो ग्रह वन तें जु निसा
री॥३॥ राग धनाश्री॥ मेरे नैंनन कुरंग भए॥ ज्यों [illegible]मतें निक
सि चलियें मुरली नाद रए॥१॥ रूप व्याधि कुंडल दृति ज्वा

www.vallabhacharyakrupa.org

सू.सा. लाकिंकिनीघंटाघोष॥ व्याकुलहोइसकलकूंदेखतगुरुजन
२० तजिसंतोष॥४॥ भोंहकमाननेंनसरसांधेंमारतचितवनिचा
रु॥ ठौरहिनहिंटरतसूरप्रभुमंदहसनिसिरधारु॥४॥ राग
सारंग॥ ऐसेंनिठुरनहींजगकोऊ॥ जैसेंनिठुरभयेडोलतहैं
मेरेनेंनारोऊ॥१॥ निठुररहतचंदहिंचकोरकोंवेउनविनुअ
कुलाहिं॥ निठुररहतदीपकपतंगज्योंबुडिपरिपरिजांहिं
॥२॥ निठुररहतजैसेंजलसरकीहमरीवहेंदसाइ॥ सूरदास
धिगधिगहैंतिनकोंजिनेंनहींपीरपराइ॥३॥ रागसारंग
नेंनाघूंघटमेंनसमात॥ सुंदरवदननंदनंदनकोंनिर
खिनिरखिनअघात॥१॥ अनरसलुब्धमहारसलंपटजा
नतएकनवांत॥ कहांकहोंरसनरसमातेंओटभए
अकुलात॥२॥ वारवारवरजतमेंहारीतऊटेवनहिंजात
सूरतनकगिरधरविनुदेखेंअल्पकलपसमजात॥३॥ राग
सोरठ॥ बडेंनिठुरविधनायहदेख्यो॥ जवतेंनंदनंदनकी
छविकोंवारवारअवरेख्यो॥१॥ नखअंगुरीपगजानुजंघकटि
ग्रीविकीनोंपरमांन॥ हृदयबाहुकपोलअंसअंगअंगसुखआनि
सुंदरमांन॥२॥ अधरदसननासिकानीवसअवननेंनउरमा
ल॥ सूररोमप्रतिलोचनदेतोदेखतवनतगुपाल॥३॥ राग
गौरी॥ व्रजललनादेखतगिरधरकों॥ इकटकअंगअंगपर
रीझीउरझीमुरलीधरकों॥१॥ मनोंचित्रकीसीलिखिकाढी
सुधिनाहींमनघरकों॥ लोककलाजकुलकानिभुलानीलुब
धीस्यांमसुंदरकों॥२॥ कोउरिसाइकोउकहेंजायकछुडरेंन
काहूंडरकों॥ सूरदासप्रभुसोंमनमांन्योजनमजनमपर
तरकों॥३॥ रागरामकली॥ आजुसखीदेखेस्यांमनएरी॥ नि
कसेआयअचानकअबहींफिरिफिरिहंसिचितएरी॥१॥
मेंतवतेंपछितातयहेंतननेंनननवहुनभएरी॥ जोविधना
एतीजांनतहेंकितदृगदोयदएरी॥२॥ सवदेंलेउलाखलो
चनसखिजोकोउअठतनएरी॥ हरिप्रतिअंगविलोकन
मेंप्रनकरिवेंपठएरी॥३॥ अपनीचोंपवहुतकहांपेयेंतऊ
हरिसंगगएएरी॥ एकेंचरणसुनिसूरबांधिगुनमदनवांन
वधएरी॥४॥ रागकान्हरो॥ विधानाहिचूकपरीमेंजांनी॥ आ
जुगोपालहिदेखिरहीविसेंयहेंसमुझिपछितांनी॥१॥ सुधि २०

पचिरची सवैं सोभा तन चिन चतुराई ठांनी ॥ दृष्टिनि री नीरो
म रोम प्रति इतनी कला निसांनी ॥२॥ कहां करों लोचन में रो
उ कुमग चले पल पांनी ॥ सूर सुमेर समाइ कहालों बुधि बा
सनापुरानी ॥३॥ राग गोरी ॥ गाउ बसत इन नैं दिवस न मैं श्या
मु कों नहमें देखे ॥ जे दिन गए बिना हरि दरसन ते सब लिखे
अलेखे ॥१॥ काहियें नों जो होय सरवोरी कैं काहियें अनुमानें
नंदकुमार निकाई को सुख नैंन नही पे जांनें ॥२॥ तव ते हु
पठ गौरी लागी जुग समांन पल छिन बत ॥ कुल मरजादा
वाइ सूर प्रभु फिरि फिरि मुख तन चितवत ॥३॥ राग गोरी
हरि जू के वदन की सोभा ॥ कुटल कुंतल अलक छबि मा
नौं मधुप रस लोभा ॥१॥ भ्रकुटी इव नव चंज सायक सदृस
चंचल मीन ॥ मकर कुंडल रवि किरन मांनों प्रकासि विकसि
त वीन ॥२॥ सुरभी रेणु पराग रंजित मुरली धुनि अलि गुंज
नि रवि सुभग सरोज सुंदिर न मराल समासि पुंज ॥३॥ दसन
दामिनि अधर विंबी जलज निकर प्रकास ॥ निगम बांनी ने
ति को कहि सके सूरजदास ॥ राग कांन्हरो ॥ अलकन की
छवि अलिकुल गावत ॥ खंजन मीन मृगज नयन की मांव
नगति हिनपावत ॥१॥ श्रवन सुसि कांनि आंनि उर अपुने अं
बुज बुद्धि विचार बतावत ॥ सकुचत अरु परसत सविता
भजि अनुदिन ज्ञ मग वावत ॥२॥ परसत नाहि सुभग तन ना
सोभा ज दृष्टि सलिल धर धावत ॥ वसन समांन होत नहि हाटक
अगनि रूप देआवत ॥३॥ मुक्तादाम विलोकि बिलखे करि
अवलव लाक जनावत ॥ सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी म
नम थ जू थ लजावत ॥४॥ राग गोरी ॥ पीतांबर की सोभा सखी
री मोपें बरनी न जाई ॥ सारंगसुतपति आयुध मांनों वनारिप
रिपु मेरे तरि खाई ॥१॥ जा रिपु पवन ता हि सुत स्वामी कुंडल
आभा कोटि दिपाई ॥ छाया पति तन वदनों विराजत वंधुक
अधर न रहे लजाई ॥२॥ नायकनायक वाहन की गति मुर
ली सुधुनि वजाई ॥ सूरदास प्रभु हरिसुत वाहन ता सुत हर
लें मूड चढाई ॥३॥ राग गोरी ॥ ठाढी हुती कुंवरि राधे हरि आनि
या मूरति आय ॥ आंनि हि विसाल चपल अनियारी हरि हाथ
नन समाय ॥१॥ छिनु तजि छिन मूरत सह दिनाग स मुख मुरि

॥सू.ला. मनमुसिकाय॥ मनुमणिमर्कतपिंजरामेंजुगखंजनग्रकु
॥१२१ लाय॥३॥गोरस्यांमविचचपलतयोंनाअतिअद्भुतदरसा
इ॥ मनुइंद्रीवरगाह्यौंसुधाकरबिबिरविसंगलगाइ॥४॥ग्र
पनेकरकमलनिकरिहूरिकरवलककरिलेनछुडाइ॥ अं
बुजचारुकमोदनिदोऊमिलिग्रलिसमसिसोंवेंरगावाइ॥५
उपमाकहांकहोंसुनिसजनीदेखीवहुनवनाइ॥ सूरस्यां
मदंपतिछबिनिरखतरतिसंगकोंमनलजाइ॥६॥रागवि
हागरो॥ मनमोहनछाटेश्रीजमुनाकेतीरारी॥ जवतेदृष्टिप
रीवामुखकीतवतेंधरतनधीरारी॥१॥मृगमदतिलकग्रल
कघुघुरारेनासासुंदरकीरारी॥ सूरस्यामप्रभुवेंनुवजावत
पावौजमुनानीरारी॥२॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदश
मस्कंधेश्रष्टाविंशतितमोध्यायः॥२८॥अथपंचाध्याईवर्ण
नं॥रागनट॥ जाकोंव्यासवरननरास॥ हैगंधर्वविवाहचित्त
देसुनोंविविधिविलास॥१॥कीयोंप्रथमकुमारिकनिव्रतधरि
हृदयविस्वास॥ नंदसुतपतिदेहुदेवीपूजिमनकीग्रास॥२॥दि
योंतवपरसारतुमकोंसवकोंमनोहुलास॥ सरदनतनयापुलि
नवरतनमिविमलजलछिवास॥३॥धरेंलगनसुसरदनिसिके
सोधिकरिगुरुरास॥ मोरमुकटसुमोरमांनोंकरक्वर्केगगनभा
स॥४॥वेंनुधुनिसुनिश्रवणधाईकमलवदनप्रकास॥ रूप
प्रतिप्रतिरूपकानेभुजाअंसनिवास॥५॥ग्रधरमधुसुपक्व
करिकेंकानग्रानंदहास॥ फिरतिभावरिगिरतभूषनग्रं
गनिमनोंउजास॥६॥सुरनारिकौतुकलाभिग्राईछांडिसुत
पतिपास॥ जियपरीग्रेषासुकोंनछोरेंनिकरनननदनसास
७॥निरखिश्रक्तिमनकुसुमअंजुलिवरषिविदसग्रकास
लेतयारसरासकोंरसरसिकसूरजदास॥८॥रागगौडमला
र॥सरदनिसिदेखिहरिहरखपायो॥ विपनवृंदाग्रवनिसु
भगफूलेसुमनरासरचिस्यामकेमनहिग्रायो॥१॥परमउज्ज
लरेनिछिटकिरहीभूमिपरसदाफलतरुनिप्रतिग्रटकि
लागे॥ परमरमनीकजमुनापुलिनत्रिविधिवहेंपवनग्रा
नंदजागे॥२॥राधिकारवनवनभवनसुखदेखिकेंग्रधरध
रिवेंनुसोललितगाई॥ नामलेलेंसकलगोपकंन्यानकेस
वनकेश्रवणयहधुनिसुनाई॥३॥सुनततउपज्योमेंनपरत

www.vallabhacharyakrupa.org

काहूनचैंनसरमुनिश्रवणभई बिकलभारी।। सूरप्रभुध्यानधरि
केंचलीउठीसबेंभवनजननेहूतजिघोषनारी।।४।। राग गौरी।।
मुरलीसुनतभईसबबौरी।। मनोंपरीसिरमांहिठगौरी।। जोजैसेंसो
तैसेंदोरी।। तनव्याकुलसबभईकिसोरी।। १।। कोऊधरनीकोऊगगा
ननिहारें।। कोऊगिरकरतेंबासनडारें।। २।। घरघरतरुनिसबेंबि
ततांनी।। मनमनकहतिकौनयहबांनी।। ३।। लैंलैंनामसबनकों
टेरें।। कोऊचितवतितवहीतेहेरें।। ४।। कोऊउठिचलिजैसेंहीतैसें
घरपाछेंमुरलीधुनिऐसें।। ५।। कोऊमनहींमनबुद्धिविचारें।। को
ऊबालकनहींगोदसंवारें।। ६।। सुतपतिआरजपथभुलानी।। ढूंढत
घरनीफिरतिबिलानी।। ७।। लैंलैंनामसबनकोंटेरें।। मुरलीधुनि
सबहीकेनेरें।। ८।। कोऊजेंवतपतिहीतनहेरें।। कोऊदधिमेंजांम
नहूंफेरें।। ९।। घरपाछेंमुरलीधुनिएसें।। फिरिआवेंघरहीमेंवैसें।।
१०।। कोऊउठिचलीजैसेंहीतैसें।। आंगनगईनहींवेहएसें।। ११।। अ
हगुरुजननतनहूसुधिनांहीं।। कोऊकहेंकोऊकहूजाहीं।। १२।। कोऊ
निरखतनहिकाहूमांहीं।। मुरझौंमदनकरूनसबराहीं।। १३।। व्या
कुलभईसबेंब्रजनारी।। मुरलीसेंबोलेगिरधारी।। १४।। चली।।
सबेंजहांतहांसकुमारी।। उपजीप्रीतिहृदयहरिभारी।। १५।। मुरली
स्यांमअनूपबजाई।। बिधिमर्यादासबनभुलाई।। १६।। निसिबन
कोंसबजुबतीधाई।। उलटिआभूषणअंगमांई।। १७।। कोऊचली।।
चरनहारलपटाई।। काहूचोलीभुजनबनाई।। १८।। अंगियाकटि
लहंगाउरलाई।। यहसोभाबरनीनहिजाई।। १९।। कोऊउठिचली
जानिहेंकोऊ।। कोऊमगगईमिलीमगकोऊ।। २०।। सूरस्यामप्रभु
कुंजबिहारी।। सरदरेंनिरसरीतिविचारी।। २१।। राग बिहागरो।।
मुरलीसुनतउपजीबाइ।। स्यामसोंअतिभावबाढ्योंचलीसब
अकुलाइ।। गुरुजननिसोंभेदकाहूंकह्योंनाहिउघारि।। अ
रधरेंनिचलीघरनितेंजूथजूथनिनारि।। २।। नंदनंदनतरुनिबो
लीसरदनिसकेहेत।। कुबिसदिनबनकोंचलीवेसूरभईअचे
त।। ३।। राग गौड मलार।। सुनतमुरलीभवनडरनकीनों।। स्यामपेंबि
तयेंहेंचापपहलेंदीयोंआपुउठिचलीसुधिमदनदीनों।। १।।
कहतिमनकामनाआजुपूरनकरेंनंदनंदनसबनबनबुला
ई।। जानिलघ्यकभजेतरुनीसुतपतितजेकाहूनहिलजेंअति
प्रेमधाई।। २।। तज्योंकुलधर्मगोधनभवनतनतजीयगीरस

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा. कहाभिन कछु न भावें ॥ सूरप्रभु सों प्रेम सताकरि कें कह्यौं मनगा
॥१२२ यों तहां इन कों बुलावें ॥३॥ राग सोरठि ॥ मुरली मधुर बजाई स्या
म ॥ मन हरि लियौ भवन न रहि भावें व्याकुल ब्रज की बाम ॥१
भोजन भूषण की सुधि नाहीं तन की नहि संभारि ॥ गृह गुरला
ज सुत सों तेह्यौं दुरें नहीं यों ह्यूपा ॥२॥ करत सिंगार विवस भई
अंग न अंग गति गई भुलाइ ॥ सूर स्याम बन बेनु बजावत चित
हि तराम रमाइ ॥३॥ राग गौड मलार ॥ करत सिंगार जुवतिन भु
लानी ॥ अंग की सुधि नहीं उलटी अभरण धरें एक एक नि क
छु सुरति नाहीं ॥१॥ नैन अंजन अधर आंजि हैं हार स्रवसों श्रवन
ताटंक उलटे सवारे ॥ सूरप्रभु मुख ललित बेनु धुनि श्रवन सुन
त चली बेहाल अंचल न धारें ॥२॥ राग नट ॥ हरि मुख सुनत बेनु
रसाल ॥ विरह व्याकुल भई बाला चली जहां गोपाल ॥१॥ पय दु
हावत तजि चली कोऊ रह्यौ धीरज नाहि ॥ एक रोहनी दूध जा
मन कों सिरावत जांहि ॥२॥ एक उफनत ही चली उठि धरयौं ना
हि उतारि ॥ एक जेंवन करत त्यागे चली बूझें डारि ॥३॥ एक
भोजन करि संपूरन गई वे सेष त्यागि ॥ सूरप्रभु के पास तुरत
हि उठि गयो मन भागि ॥४॥ राग कली ॥ मन गयो चित स्याम
सों लाग्यों ॥ नाना विधि बनन कों परस्यो पुरुषनि चावत त्याग्यो
॥१॥ इक पय प्यावत तजि चलि बालक छो हन कीनों ॥ कलोधा
इ अकुलाइ सुत तजि बोल बेनु धुनि लीनों ॥२॥ इक सनिसे
बा करत चली उठि व्याकुल तन सुधि नाहीं ॥ सूर निरखि विधि
की मरजादा निसि बन कों सब जाहीं ॥३॥ राग जैत श्री ॥ जब तें मु
रली श्रवण परी ॥ चकृत भई गोप कन्या सब कामधाम बिस
री ॥१॥ कुल मरजाद बेद की आग्या नें कहूं ना हि डरी ॥ स्यामसिं
धु सरिता ललना गन जल की धरनि धरी ॥२॥ अंग मर्दन करि
बे कों लागी उबटन तेल भरी ॥ जो जिहि भांति चली सो तैसें निसि
बन कों जु खरी ॥३॥ सुत पति नेह भवन जन संका लज्या नाहि क
री ॥ सूरदास प्रभु मन हरि लीनों नागर नवल हरी ॥४॥ राग के
दारौं ॥ सुनि मुरली शब्द ब्रज नारि ॥ करत तन सिंगार भूली कों
म गयो तन मारि ॥१॥ चरन सों गहि हार बांध्यों नें न देखत नाहि
कंचुकी कटि सों नि लहंगा धरति हिरदे माहि ॥२॥ चतुर नाह ए
चोरि लीनी भई भोरी बाल ॥ सूरप्रभु रति कों मनमोहन रच्यो रास

www.vallabhacharyakrupa.org

गुपाल॥३॥राग रामकली॥ व्रजजुवतीमनहर्‌यौंकन्हाई॥रासरंगर
चिवेमनश्रांन्योंनिसिवननारिवुलाई॥१॥तपजनपाहि वहुतश्र
मकीनोंसोफलपूरनकीन॥वेंनुनादरसविवसकराई मुनि
धुनिकीनोंलीन॥२॥ताकोंमनहरिलियोंस्यामघन ताहिसभां
हंकोंन॥ सूरदास प्रभुज्योंनारीमिलि करैंसुभावेंजोंन॥३॥राग
धनाश्री॥ चलीवेंनसुनिसवधाई॥मातपितावंधुअतित्रासता
जातिकहांअकुलाई॥१॥सकुचतनहिं संकाकछुनाहीं रैंनिकहां
तुमजाति॥जननीकहतिदईकीघालीकाहेकोंअनुराति॥२॥मां
नतिनाहिंऔरीसपावतिनिकसीनातातोरि॥जैसेंजलप्रवाहभा
दोंकोंसोकोसकेंवहोरि॥३॥ज्योंकेंचुलीभुवंगमत्यागतमातपि
तायोंत्यागे॥सूरस्यामकेहाथविकानेअलिअंवुजअनुरागे॥४
राग गौड मलार॥ सुनतमुरलीनसकीधीरधरिकें॥चलीपितमा
तअपमांनकरिकैंतरतनिकसीसवेंतोरिपरिकें॥१॥भईआ
तुरदरसवरनहरिकैंजोजाहिभजेसोईताहिरानी॥कोऊकहु
कहूंसवनरसछानी॥२॥ताविनुताहिकछुनहीभावें॥औरकर
जोरिकोटिकरिखावें॥३॥प्रीतिकीकछुवेरीतिजांनें॥औरकरि
तूतवांनीवखांनें॥४॥ज्योंनदीसिंधुविनुकहूंनजाई॥सूरवेंसो
रिधाउनहूपाई॥५॥राग जसहो॥घरघरतेंनिकसीव्रजवाला॥लेलें
नामजुवतीजननीकेमुरलीमेंसुनिसुनिततकाला॥१॥इकमा
रगइकघरतेंनिकसीएकभईवेहाला॥एकनहींभवनतेंनिक २५
रीतिहिलेंआएमकृपाला॥२॥यहमहिमाएईयेंजांनेंकवि
सोंवरनीनजाई॥लिखीचित्रकीसीसुरहिगईइकटकपलवि
सराई॥३॥राग मलार॥सुनियहुवनमुरलीकीवाजनि॥पपीहा
गुंजकोकिलवनकूंजतऔरमोरनकीगाजनि॥१॥यहश्रावृसु
नियतगोकुलमेंमोंहनरूपविराजनि॥ सूरदासप्रभुमिलीरा
धिकाअंगअंगकरिसाजनि॥२॥राग विलावल॥ सुनोंहरिमुरा
लीमधुरवजाई॥मोहेसुरनरनागनिरंतरव्रजवनितामिलि
धाई॥१॥जमुनानीरप्रवाहथकितभयोंपवनरह्योंमुरझाई॥खग
मृगमीनअधीनभएसव अपनीगतिविसराई॥२॥द्रुमवेलीअनु
रागपुलकितनससिवसनिसिनघटाई॥ सूरस्यामवृंदावनवि
हरनचलीसखीसुधिपाई॥३॥राग केदारो॥ मुरलीधुनिकरीव
लवीर॥ सरदनिसिकोंइंदुपूरनदेखिमनमुनतीर॥१॥सुनतसो
॥ ॥

॥सू.सा. धुनिभई व्याकुल सकल घोष कुमारि ॥ अंगभूषन उलटि सा
॥१२२ जे रही कछु न संभार ॥ २ ॥ गई सोरह सहस हरि पें छांडि सुत
पति नेह ॥ एक रावी कंत एकसु गई तजि निज गेह ॥ ३ ॥ रि
यो निहिं निरखो न पर हरि चितै लोचन कोर ॥ सूर भजि गो
विंद तनु जग मोह बंधन तोरि ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ सुनो सुक कह्यो
परीछित राव ॥ गोपिनु परम कांति हरि सिं जान्यो लख्यो न ब्रह्म
सुभाव ॥ १ ॥ गुन मय ध्यान किये निरगुन पर पायो तिहिं विहि
भाइ ॥ मेरे जिय में रे सब डो पह सुनिवर रेहु न साइ ॥ २ ॥ सुक
कह्यो वैर भाव मन राखें मुक्ति भयो सिसुपाल ॥ गोपी हरि की
प्रिया मुक्ति भई कहूं भ्रम ब्रजभूपाल ॥ ३ ॥ काम क्रोध भय नेह
सुहृद ना काहूं विधि करि कोई ॥ धरें ध्यान हरि को जो दृढ
करि सूर सु हरि सो होई ॥ ४ ॥ राग गोउ मलार ॥ सुनत हिं वेंन
धुनि चली नारी ॥ लोक लज्या निदरि भव त्यजि सुंदरी मि
ली वन जाइ के वनविहारी ॥ १ ॥ रास के रसिक तन मन हरि सब
बहुनि भयो परसि के साधु श्रुति निगम न भारी ॥ यह बेद मन
कर्म तज्यो सुन पति धर्म मिलि हरि हि भर्म नहि लाज गारी ॥ २ ॥
भजे जिहिं भाव ज्यों मिले हरि तिनहिं त्यों भेद रभेद नाहिं पुरुष
नारी ॥ सूर प्रभु स्याम कवि काम आतुर काम मिलि वने धाम
गिरिराजधारी ॥ ३ ॥ राग मूहो बिलावल ॥ देखि स्याम मन हरष
बढायो ॥ तैसी सरद चांदनी निर्मल तैसोई रास रंग उपजायो
॥ तैसी य कनक वरन तन सुंदरि इहि सोभा पर मन ललचायो
तैसोई हंससुता पवित्र तट तैसोई कल्प वृक्ष सुखदायो ॥ २
करों मनोरथ पूरन सब के इहिं अंतर एक खेल उपायो ॥ सू
स्याम रचि कपट चतुराई जुवतिन के मन यह भरमायो ॥ ३ ॥ रा
ग विहागरो ॥ निसि काहे को वने उठि धाइ ॥ हसि हसि स्याम क
हत हैं सुंदरि गई तुम सजे को पंथ भुलाइ ॥ १ ॥ गई रही दधि बे
चन मथुरा तहां कछु आजु अबेर लगाई ॥ अति भ्रम भयो व
नहिं वैसी आई मारग वह कहि मैं न बताई ॥ २ ॥ जाहु जाहु घर तु
रत जुवती गवरि खिझत गुरजन कहिं डरवाइ ॥ क्यों गोकुल तें
गवन कियो तुम इहिं बातन तें नहिं भलाइ ॥ ३ ॥ यह सुनि कें
ब्रजवाम कहत भई कहां करत गिरधर चतुराई ॥ सूर नाम लें
लेंजनि जनि कें मुरली बार बार वजाई ॥ ४ ॥ राग विहागरो ॥ यह

जिनि कहौं घोष कुमारि ॥ हम चतुराई नहीं कीनी तुम चतुर रस
बस बारि ॥ १ ॥ कहां हम कहां तुम रहौं अरु कहां मुरली नाद ॥ क
रति हौं परिहास हम सौं तजौ यह रस बाद ॥ २ ॥ बडे की तुम ब
हू बेटी नाम पैं किन जाइ ॥ औसे निसि बन रहौ रिआई हमें रो
ष लगाइ ॥ ३ ॥ भली यह हम सकरी नाहीं अजहूं घर फिरि जा
हु ॥ सखि क्यौं तुम बिडरि आई नाहिं तुम्हरे नाहु ॥ ४ ॥ राग जैतश्री
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं ॥ बारंबार कमलदल लोचन यह
कहि कहि पछिताहीं ॥ १ ॥ उनकें लाज नहीं बन तुम कों आ
वन दीनी राति ॥ सब सुंदरी सबहि नवजोवन निठुर अही
र की जाति ॥ २ ॥ कै तुम कहौं आय के ऐसें कहियें ऐसी रीति
सूर तुमें यह नहीं बूझियें करी बडी बिपरीति ॥ ३ ॥ राग रामक
ली ॥ अब तुम कहौ हमारो मानौ ॥ बन में आय रैनि सुख देषौं
यहैं लेहु सुख जानौं ॥ १ ॥ अब औसी की जौं जिनि करहू जांन
तहौं मन तुम हूं ॥ यह धौं सुनौं कहूं धौं कोऊ यामें लाज अरु ह
म हूं ॥ २ ॥ हम तौं आजु बहुत सर मान्यौं मुरली टेरि बजायौ ॥
जैसो कियो लह्यौ फल तैसो सो हम ही सुख न आयो ॥ ३ ॥ अब तु
म जाइ भवन पति पूजौ परमेसुर की नाई ॥ सूर स्याम जुवति
न सों यह कहि कहि अप्रासा छिमाई ॥ ४ ॥ राग सूहौ बिलाव
ल ॥ यह जुवतिन कों धर्म न होइ ॥ धृग सो नारि पुरुष जो त्या
गें धिग सो पुरुष त्यागें जो इ ॥ १ ॥ पति को धर्म यहै प्रतिपालें
जुवती सेवा ही को धर्म ॥ जुवती सेवा तौं नहिं त्यागें जो पति
करें कोटि अपकर्म ॥ २ ॥ बन में रैनि बास नहिं कीजें देखन
म तुम वृंदावन आइ ॥ बिबिधि सुमन सीतल जमुना जल ।
त्रिबिधि समीर परसि सुख दाइ ॥ ३ ॥ घर ही में तुम धर्म सहा
इ सुत पति दुखित तहां न तुम जाहु ॥ सूर स्याम यह कहि परमो
धन सेवा करौ जाइ घर नाहु ॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥ इहि बिधि
बेद मारग सुनौ ॥ कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय
गुनौ ॥ १ ॥ कंत मानौ भवन रोगी और नहीं उपाइ ॥ ताहि तजि
क्यों बन नहिं आई कहां पायो आइ ॥ २ ॥ वृद्ध अरु बिन भाग हूं को
पतित ज्यों पति होइ ॥ सो जु हम मूरख होइ रोगी तजें नाही जोइ
३ ॥ यहै में सुनी कहत तुम सों जगत में यह सार ॥ सूर पति से
वा बिना क्यों तरौंगे संसार ॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥ कहां भयो ।

www.vallabhacharyakrupa.org

॥ सू॰सा॰ जो हम पें आई ॥ हमहू कों विधि कों डर भारी अजहूं जान न हई ॥ १
॥ १२५ तजि भरतार और जो भजियें सो कुलीन नहिं होइ ॥ मरें नरक
जीवत या जग में भलो कहें नहिं कोइ ॥ २ ॥ हम जो कहत सबै
तुम जानत तुम हो चतुर सुजांन ॥ सुनो सूर घर जाहु हम हूं घर
जे हैं होत विहांन ॥ ३ ॥ रा ग वि ह गरो ॥ निठुर वचन सुनि स्यांम के
जुवती विकलांनी ॥ चकृत भई सब सुनि रही नहिं आवत बां
नी ॥ १ ॥ मनु तुसार कमल न मारी ऐसे कुम्हिलानी ॥ मनों महा
निधि पाय कें खोयें पछितांनी ॥ २ ॥ ऐसी होय गई तन रिसा पि
य की सुनि बांनी ॥ सूर विकल व्याकुल भई बूडी विन पांनी ॥ ३
रा ग वि ह गरो ॥ स्यांम उर प्रीति मुख कपट बांनी ॥ जुवति व्या
कुल भई धरनि सब गिरि गई प्रास गई छूटि नहि भेद जांनी
१ ॥ हूं सत तनें रूलाल मन मन करत ख्याल ए भई वे हाल ब्रज
बाल भारी ॥ छुटत जल नैंन सम बहि चले उरज बिच मनों
गिरि फोरि सलिता पनारी ॥ २ ॥ अंग एकि विथा कि नहिं चल
त कोउ पंथ लें ना उरस भाव हरि निरहि आंनी ॥ सूर प्रभु निठु
र किर यों कहां हैं रहो तुम बिना और कोऊ कहें जांनी ॥ ३ ॥ रा
ग जैतश्री ॥ निठुर वचन बोलौ जिनि स्यांम ॥ आस निरास करों
जिनि हमरी व्याकुल वचन कहत तिहें वांम ॥ १ ॥ अंतर कपट
दूरि करि डारो हमसों निकृपा निहारो ॥ कृपासिंधु तुम कों ह
म गावत अपनो नाम सभारो ॥ २ ॥ हम कों मरन और नहिं सू
झें का पें अब हम जाहिं ॥ सूरदास प्रभू निज दासन की चूक
कहूं पछितांहि ॥ ३ ॥ रा ग जै त श्री ॥ तुम पावत हम घोष न जा
हि ॥ कहां जाइ हम लेहें ब्रज में यह दरसन त्रिभुवन में नाहि
१ ॥ तुम ते और नहीं कोऊ प्रीतम कौटिक हों नहिं मांनें ॥ का के
पिता मात हैं का के काहू हूं मन हिं जांनें ॥ २ ॥ का के सुत पति मो
ह कोन के घर ही कहां पठावत ॥ कैसो धर्म पाप हैं कैसो आ
स निरास करावत ॥ ३ ॥ हम जानें केवल तुम ही कों और ब्रथा
संसार ॥ सूर स्यांम निठुराई तजियें तजो वचन विस्तार ॥ ४ ॥ रा
ग जैतश्री ॥ तुम हो अंतर जांनि कन्हाई ॥ निठुर भए क्यौं रहत इ
ते पर तुम नहिं जानत पीर पराई ॥ १ ॥ पुनि पुनि कहति जाहु ब्रज
सुंदरि दूरि करो पियपरह चतुराई ॥ आपुहि कही करो पति सेवा
ता सेवा कों अब हम आई ॥ २ ॥ जो तुम कह्यो तुमें सब सांजें कहा

www.vallabhacharyakrupa.org

कहें हम प्रभुहि सुनाइ ॥ सुनों सूर अब ही तन त्यागें हम पें घोष
गयो नहि जाइ ॥३॥ ८०॥ राग बिहागरो ॥ कैसें हम कों ब्रजहि
पठावत ॥ मन तो रह्यो चरन लपटानो जो इतनौ यह देह च
लावत ॥१॥ अरु वे नैंन माधुरी मुसकनि अमृत वचन श्रव
ननि कों भावत ॥ इंद्री सब मन ही के पाछें कहो कर्म काहे न
बतावत ॥२॥ इन कों करलीने तुम अपने क्यों नाही हम हूं जि
य भावत ॥ सूर सें न देंस रवसलूग्यो मुरली लें लें नाम बुलाव
त ॥३॥ ८१॥ राग कान्हरो ॥ भवन नहि अब जाहि कन्हाई ॥ स्वजन बंधु
नें भई बावरी अब वे कैसें करन बडाई ॥१॥ जो कब हूं कबें ले
हि कृपा करि धिग वे नाह धिग हम नारि ॥ तुम बिछुरन जी
वन राखें धिग कहों यह आप विचारि ॥२॥ धिग यह लाज वि
मुख के संगनि धनि जीवन तुम हेत ॥ धिग मात धिग पिता
गेह धिग धिग सुन पति जे त ॥३॥ हम चाहत नम दुहू रस माधुरी
जातें उपज्यो काम ॥ सूरस्याम अधर नरतसी च्यों जरति विर
ह सब बाम ॥४॥ ८२॥ राग कान्हरो ॥ सुनो स्याम करि हों चतुराई ॥ क्यों
हम वेणु बजाय बुलाई ॥१॥ बिसार जात लोक की लज्या म
वें त्यागि हम रो री आई ॥२॥ अब तुम कों एसी न बूझिये आ
सनि रास करों जिनि माई ॥ सोई कुलीन सोई बडभागी निज
तुम सन्मुख पगि है सोई ॥२॥ ते धनि पुरुष नारि धनि ते ईपं
कज चरन रहें दुख नाई ॥ सूरदास कहि कहां बखानों यह निमि
य हूं अंग सुंदरताई ॥३॥ ८३॥ राग कल्यान ॥ बिनती सुनौ स्याम सु
जान ॥ अति ही सुख अपमान कीनों दुष्टन इहि ते आन ॥१॥ अ
व करो रुष दृष्टि इन कों भजो तजि अभिमान ॥ विरह हृदें हनि
बारि डारो अधर रस दे पान ॥२॥ मन हि मन यह सुख करत
हरि भये कृपानिधान ॥ सूर निहचें भजी मो कों नहिं जानत
आन ॥३॥ ८४॥ राग बिलावल ॥ विना मोहि ए और न जानें ॥ विधि म
रजाद लोक की लज्या तिनहूं कों घट मानें ॥१॥ इहि मो कों नी
कें पहिचान्यो कपट नहीं उर राख्यों ॥ साधु साधु पुनि पुनि हर
खित है मन ही मन यह भाख्यों ॥२॥ पुनि दुसि कह्यो निठुरता
धरि कें त्याग्यो क्यों कुलधर्म ॥ सूरस्याम सुख कपट हृदें पर
तिजुवतिन के अंतिमर्म ॥३॥ ८५॥ राग गोंड मलार ॥ तजों नंदलाल
अतिनिठुरई गहि रहे कहां पुनि पुनि कहत धर्म हम कों ॥

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू०सा॥ एकहीढंगरहेवचनसवकछुकहे॥ व्रजजुवतिनरहेंसीत
॥१२५॥ तनकौं॥१॥विमुखतुमनेंरहे जिनेंहमकोंगहेंतहांकहांल
हेंदुखदेहभरी॥ कहांसुतपतिकहांमातुपितुकुलकहांकहां
संसारविनवचित्तहरी॥२॥हसेसमुझाइयहकहेंजडगवारि
नीकहांतुमएनहींमरमजांनें॥सुनोंप्रभुसूरतुमभलेकें
हेंभलेसत्यकरिकहेंहमअवहिंमांनें॥३॥राग जैत श्री॥तुम
तेंविमुखधिगनरनारि॥हमतोंजाननहेंतुममहिमाकोंन
सुनेंवनवारि॥१॥सांचीप्रीतिकरीहमतुमसोंअंतरजांमी
जान्यों॥गुरजनकीनहिंपीरहमारेंव्रजधर्महठठान्यों॥२॥पा
पपुन्यदोऊपरित्यागेअवजोहोइसुहोइ॥आसनिरासमूर
केस्वामीऐसीकरेंनकोइ॥३॥राग जैत श्री॥आसजिनितोरों
स्यांमहमारी॥वेंनुनादधुनिसुनिउठिधाईप्रगटननामसु
रारी॥१॥कैसोंतुमनिठुरनांमप्रगटायोंकाहेविरदभुलावें॥
दीनआजुहमतेकोउनाहीजोनिस्यांमसुसिकाने॥२॥अपने
भुजदंडनिकरिगहियेंविरहेंसलीलमेंफांसी॥वारवारकु
लधर्मवतावतएसेतुमअविनासी॥३॥प्रीतिवचननवका
करिराख्योंअंकमभरिवेंसवहू॥सूरस्यांमतुमविनगतिना
हीजुवतिनपारलगावहु॥४॥राग नट॥विनदेंसुनोंअंवुज
नेंन॥कृपनकोंगायभयोंतुमकोंसरसअमनवेंन॥१॥हमहु
पननवचालअच्युततुमजनकनिधनरासि॥कैसेंहूसुखदां
नदीजेंविरहरासिदनासि॥२॥करोंयहजसप्रगटत्रिभुवन
निठुरकोठीकोलि॥कृपाचितवनिभुजउठावहुप्रेमवचनति
वोलि॥३॥दीनवांनीश्रवणसुनिमुनिहृदयपरमकृपाल
सूरएकहुअंकनकोंचोधन्यधनिव्रजवाल॥४॥राग वि
लावल॥हरिसुनिदीनवचनरसाल॥विरहव्याकुलदेखि
वालाभरेनेंनविसाल॥१॥वाहुआननपोरिधाराचरनिकों
पेंजाइ॥मनोंसुधातडागउछलेप्रेमप्रगटदिखाइ॥२॥चंद्रमु
खपरनिडरवेंठेसुभगजोरिचकोरि॥पियतमुखभरिभरि
सुधारसगिरतनापरभोर॥३॥हर्षवांनीकहतपुनिपुनि
धन्यधनिव्रजवाल॥सूरप्रभुकरिकृपाजोदोसदयभये
दयाल॥४॥राग सूहो॥स्यांमहसिवोलेप्रभुताडारि॥वारंवा
रविनयकरजोरतिकरिनटगोरपसारि॥१॥तुमसननसुख

मेंविमुखतुम्हारोमेंअसाधतुमसाध॥धन्यधनिकहिकहितु
वतिनकोंआपकरतअनुराध॥२॥मोकोंभजीएकोचितकें
कैंनिदरिलोकुलकांनि॥सुनपतिनेहूंतोरितितुकासों।
मोहूनिजकरिजांनि॥३॥जाकेंहूयपिंडफल ताकोंसोफल
लेहुकुमारी॥सूरकृपापूरनकरिबोलेगोपिगोवर्द्धनधारी
४॥राग बिहागरो॥कहतस्यांमयहश्रीमुखबांनी॥धन्यधन्य
दृढनेमतुम्हारोबिनदांमनमोहांथबिकानी॥१॥निरदंकच
नकपटकेभाखेतुमअपनेजियनेंकनआंनी॥पोहेहौबिनि
संकआइतुममोकोंगुरुगुरजनकीसंकनमांनी॥२॥सिंहद
हूंतुंबुकसरनागतदेखीसुनीनअकथकहांनी॥सूरस्यांम
भजिअंकमलीनोबिरहअगिनिकरतुरतबुझांनी॥३॥राग मारू
कियोजेहिकाजतपघोषनारी॥देहुफलहोंतुरतलेहुतुमअ
बघरी॥हरखचितकरहुदुखदेहुडारी॥१॥रासरसरच्योंमि।
लिसंगविलसोंसबेंभवनहूरिकिहोंनोखिगमबांनी॥हस
तमुखमुखनिरखिबचनअमृतबरषिकृपारसभरसारं
गपांनी॥२॥ब्रजजुवतीचहुंपासमध्यसुंदरस्यांमराधिकावां
मआतिछबिबिराजें॥सूरनवजलदतनसुभगस्यांमलगात
इंद्रवधूपांतिवहुसुभगछाजें॥३॥राग नट॥हरिमुखदेखिफू
लेंनेंन॥हृदयहरखितप्रेमगदगदनहीआवतबेंन॥१॥कांम
आतुरभजीगोपीहरिमिलेतिहिभाय॥प्रेमवस्यकृपालके
सबमांनिलेतुभाइ॥२॥परस्परमिलिहसतरहसहरखि
करतविलास॥उमगिआनंदसिंधुउछल्योस्यांमकेंअभि
लाष॥३॥मिलतइकइकभुजनभरिभरिरासरुचिजियआनि
तिहिसमेंसुखस्यांमस्यांमासूरकोंकहेंगांनि॥४॥राग बिहा
गरो॥रासरुचिजबहीस्यामरमनआंनी॥करोंसिंगाररसवारिसुं
दरीहसतकहतहरिबांनी॥१॥जोरेखेअंगउलटेभूखनछोरे
तरुनिमुसिकांनी॥बारबारपियदेखिरेखिमुखपुनिपुनि
जुवतिलजांनी॥२॥नवसतसाजिभईसबठाढीक्योंछबिक
हेंबषांनि॥बहुछबिनिरखिअधीरभईतनकांमनारिबिन
तांनि॥३॥कुचभुजपरसिकरीमनइछाकेसुतनतपबुझांनी
सुनोंसूरससरासनायकासुंदरराधारांनी॥४॥राग सोरठ
अचलचंचलस्यांमगह्यों॥लेगयेपुलिनसुभगजमुनाकें।

www.vallabhacharyakrupa.org

सू॰सा॰ अंगअंगभेषठयों ॥ १ ॥ कलपतरोवरि तटवंसीवट राधार
१२६ तिग्रहश्यांम ॥ तहांरासरस रंगउपायों संगसोहतिव्रजवांम
२ ॥ मध्यश्यांम घनतडितभांमिनी अतिराजतशुभजोरी ॥ सू
रदासप्रभुनवलछबीलेनवलछबीलीगोरी ॥ ३ ॥ राग सोर
ठ ॥ जहांश्यांमघनरासउपायों ॥ कुंकुमजलसुखवृष्टिरमायों
धरनीहरितिकपूरमयभारी ॥ विविधिसुमनछविन्यारीन्या
री ॥ १ ॥ करेंतेंजुवतीजुरीमंडली विराजें विचविचकांन्हतरुन
विचभ्राजें ॥ ३ ॥ अनूपमलीला प्रगटदिखाई ॥ गोपिनकोंकी
नोंमनभाई ॥ ४ ॥ विचश्रीश्यांम नारिविचगोरी ॥ कनकखंभ
मरकतकचडोरी ॥ ५ ॥ सोभासिंधहिलोरहिलोरी ॥ सूरकहांव
रेंमतिथोरी ॥ ६ ॥ राग गौड मलार ॥ रासमंडलवनेश्यांमश्यांमा
नाचिचहूंपासगिरधरबनेसहससटस सहस्रागासिसहस
ह्वादशआननमा ॥ १ ॥ मुकटकीलटककविकहउपमाकहें
वेंनजानेंनहीनहीवेंनजानें ॥ सुभगनटघनतावीचचप
लाचमकिनिरखिनिर्तनमोरहरखानें ॥ २ ॥ करतआनंद
पियसंगललनापुंजत्रिदिसयंकछिनछिननहीं अोरें ॥ सू
रप्रभुसरसरसनागरीमध्यदोऊ परस्परनारिपतिमनहि
चोरें ॥ ३ ॥ राग गौड मलार ॥ [illegible]रस्यांमव्रजवामसोहें ॥ सीस
श्रीखंडकुंडलजारित[illegible]नि श्रवणनिरषिछविस्यांमव्रजन
हनिमोहें ॥ १ ॥ नासिकालालितवेसरिवनी अधरफुरसुभग
ताटंकछवि[illegible]हीनजाई ॥ धरनिपगपटकिभोंहनिमटकनें
नमेंकरिफटकअटकिरिफेकन्हाई ॥ २ ॥ नवचलतहेरिमटकि
रहीजुवतीठठकिलटकलट घगछबिविचारें ॥ कहतप्र
भुसूरचलोंवैसेईसुगतिलेंहमहूंएसेंवलेजोनिहारें ॥ ३ ॥
राग गौड मलार ॥ निरखिव्रजनारिछविस्यांमलाजें ॥ विवि
धिवेंनीरचीमारपाटीसुभगभालवेंदीइंदुविंदुलाजें ॥ १ ॥
श्रवणताटंकलोचनचारुनासिकाहंसखंजनकीरकों
रिलाजें ॥ अधरविंद्रुमदसननहिछविदामिनीसुभगवेस
रिनिरखिकामलाजें ॥ २ ॥ चंपकलीकंठश्रीमालमोतिनवनी
कुचउचनहेमगिरिअतिहिलाजें ॥ सूरकीस्वामिनीनारिव्र
जभामिनीनिरषिप्रियप्रेमसोभासुलाजें ॥ ३ ॥ राग विहागरो ॥
वनव्रजनारिसोभाभारि ॥ पगनजेहरिलाललहगाअंग

www.vallabhacharyakrupa.org

पचरंगसारी ॥ १ ॥ किंकिनीकटिकुनितकंकनकरचुरी झुमका
री ॥ हृदयचोंकीचमकिवेंठीसुभगमोतिनहार ॥ २ ॥ कंठश्री
दुलरीविराजतचिबुकसांवलबुंद ॥ सुभगबेसरिललित
नासारी फिरहें नंदनंद ॥ ३ ॥ श्रवणपरताटंककी छबिगो
ललललितकपोल ॥ सूरप्रभुवसभ्रातिभएहें निरखिलोच
नलोल ॥ ४ ॥ रा ग जैतश्री ॥ नेंनसुफलअबभएहमारे ॥ दे
बलोकनिसांनवजावतवरखतसुमनसुधारे ॥ १ ॥ जय
जयधुनिकिन्नरमुनिगावतनिरखतजोगविसारे ॥ सिव
सारदनारदयहभाखतधनिधनिनंददुलारे ॥ २ ॥ सुरला
लनापनिगतिविसराई रहीनिहारिनिहारि ॥ जाजनवनें
देखिसुखलहएकोंआईलोकविसारि ॥ ३ ॥ यहछबिनिहूंलो
कमेंनाहीजोव्रंदावनधांम ॥ सुंदरताकेरसकीसीवासहर
राधिकास्यांम ॥ ४ ॥ रा ग विहागरो ॥ हमकोंविधिब्रजवधूनकी
नोंकहूंअमरपुरवासभएं ॥ वपवारयहितानियहेंकहि
सुखदहूनोंहरिसंगरहे ॥ १ ॥ कहांजनमजोनाहिहमारोफिरि
फिरिब्रजअवतारभलो ॥ व्रंदावनदुमलतांहूजियेंकरता
सोंहमभागेंचलो ॥ २ ॥ पहकामनाहोयकोंपूरनदासीव्हेंव्र
जरहियें ॥ सूरदासप्रभुअंतरजांमीतुमबिनुकासोंकहियें
॥ ३ ॥ रा ग आसावरी ॥ धन्यजसोदाकोंनंदन ॥ धन्यसिखंड
चंद्रसिरलटकतघनिमृगमदधनिकुंडलचंदन ॥ १ ॥ धनि
राधिकाधन्यमुरलाधनिमोहनकीजोरी ॥ ज्यौघनमध्य
दामिनीछबियहउपमाकछुथोरी ॥ २ ॥ धनिमंडलीजुरीगो
पिनकीनाचिचनंदकुमार ॥ राधासमसवगोपकुमारीकी
उनरासविहार ॥ ३ ॥ षटदससहसगोपकुमारीषटदससह
सगुपाल ॥ कान्हूसोंकहूंअंतरनाहीकरतपरस्परख्याल ॥ ४ ॥
धनिब्रजवासआसलवपूरनकैसेंहोनिहमारी ॥ सूरप्रभ
रललनागुनगावतथकितरहीनिजलोकविसारी ॥ ५ ॥ रा
ग हिंडोल ॥ तरुनतमालगोपालललालवनमालग्रीव
धरहृदयविसाल ॥ कवहूंगोधनसंगवालककवहूंविह
रतसंगसखाग्वाल ॥ १ ॥ धन्यधन्यब्रजकोंयहनायककीनों
महरिपोषिप्रतिपाल ॥ कवहूंकवनहरिहेंजाइकेंगोरस
दांनलेतसबग्वाल ॥ २ ॥ पेंठिपैतालकालिनाथ्योफनपर

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा.॥ नितंनरेंताल॥ भूषनमुकटजराइजर्‍यौं नग सूरप्रभासंगवनि
॥१२॥ ताजाल॥ ३॥ राग कान्हरो॥ कुंडलचंचलकपोलदसनचमक
तद्युतिजाल। तिलकसुभगसिरकेसरिनेनविंववने। कटि
कछनिचंदवाधोरिस्यामवरनलसतएसेंनटनागरके
जैयेंवारनें॥ ४॥ त्रिभंगीनिर्तकरतब्रजजुवतिनुमंडलीमधि
दृढहूंवीचअंगअंगस्यामघनें॥ मोरमुकटसीसधरेंराजतहैं
सूरजप्रभुनिरषिभ्रमरनेंनभनेंजयजयधुनिभनें॥ ५॥ राग
धनाश्री॥ रासमंडलमध्यस्यामराधा॥ मनोंघनवीचदामि
नीकोंधनिसुभगअंगअंगछविहोयपहूनहीं वाधा॥ १॥ नाय
कअष्टअष्टहूं दिसासोहियेंवनीचहूंपाससवगोपकन्या
मिलेसवसंगनहीं लखतकोऊपरस्परवनेषटदससहस्र
सहस्रसमन्या॥ २॥ सजेसिंगारनवसाजजगमगरहेंअंग
भूषनरतनवनेवेसें॥ सूरप्रभुनवलगिरधरनवलरा
धिकानवलव्रजनारिमंडलीतेसें॥ ३॥ राग गौरी॥ जुवतीअं
गसवनिरखतस्याम॥ नंदकुमारअंगअंगमाधुरीअवलो
किनव्रजवाम॥ १॥ परीदृष्टिजुजहांपरयाकेवहांसुखकहें
नजाइ॥ अगियानीलपाटकीतानी निरखतनेंनअघाय
२॥ वेनिरखतकेवरभुजनकी छविपहुंचनिपोहेंचीराजति
करपल्लवनिमुद्रिकासोहतियाछविपरमनलाजति॥ ३॥
वंदनवुंदनिरखिहरिरीझेसिसिपरभालविभास॥ नंदला
लव्रजवामसवनकीवरनेंसूरजदास॥ ४॥ राग विहागरो॥
स्यामतनराजतपीतपिछोरी॥ उरवनमालकाछनीकाछें
कटिकिंकिनीछविरोरी॥ १॥ वेनीसुमननितंवनिडोलतिमंद
गामिनीनारि॥ सिथलचरननितामाधिनाचामिलिवरहीनिर
छनिहारि॥ २॥ पगनिरंगजावककीसोभादेखिपियामनभा
वत॥ सूरदासप्रभुतनत्रिभंगीहेंजुवतिनमनहिंरिझावत
३॥ राग विहागरो॥ निरततस्याममनानारंग॥ मुकटलटकनि
कीभकुटीमटकनिधरेंनटवरअंग॥ १॥ चलतगतिकटि
कुनितकिंकिनीघूंघरूझनकार॥ मनोंहंससरसालवांनीअ
रसपरसविहार॥ २॥ लसतकरपहुंचनिसुपोहेंचीमुद्रिका
अतिजोति॥ भावसुभुजभिरतजवहीं तवहीं सोभाहोति॥ ३॥
कवहूंनिर्तननारिगतिपरकवहूंनिर्तनआप॥ सूरप्रभुअ

www.vallabhacharyakrupa.org

तिरसिककेमनरह्यौरासप्रताप॥४॥रागबिहागरो॥गतिसुगंध
निर्तनव्रजनारि॥हावभावनेंननिसोंनेंननदेंरिझवतगिरध
रधारि॥१॥पगपगपटकिभुजनिलटकावतफोंदाकरनप्र
नूप॥चंचलचलतझूमिकाअंचलअद्भुतहेंबहुरूप॥२॥द
रतिरखतअंगरूपपरस्परदेखमनहींमनरीझत॥हसहसि
वदनवचनरसवरषनखेदअंगजलभींजत॥३॥वेनीछूटि
लटनिबगरांनीमुकटलटकलटकांनों॥फूलखिसतसि
रतेंभएन्यारेसुभगस्वांतिसुनमांनों॥४॥गांनकरतरीझेना
गरपियलीनीअंककमिलाइ॥रसवसकेंलपटाइरहेदेऊस
रसखीबलिजाइ॥५॥रागगौरी॥निर्ततअंगअभूषणबाज
त॥गतिसुगंधसुभावदेखियतरुतेइकारम्नत॥१॥कहतनव
नेंरहीरसएसोवरननवरनीनजाइ॥जेसेंवनेंस्यांमतेंसीय
हगोपीछबिअधिकाइ॥२॥कंकनचुरीकिंकिनीपगनूपुरप
गजनविछुवासोहत॥अद्भुतधुनिउपजतइहिमिलिकेंभ्र
मभ्रमइतउतजोहत॥३॥सुनिसुनिश्रवणरीझेमनहींमनरा
धारससंगीत॥सूरस्यामसबकेसुखदायकगोपीनगुन
निअगीत॥४॥रागकेदारो॥उघटतस्यांमनिर्तननारि॥धरेअ
अधरउपंगउपजेलेतिहेंगिरधारि॥१॥तालमुरजरबाबवी
नाकिन्नरीरससार॥सबदसंगमृदंगमिलवतसुघरनंदकुमा
र॥२॥नागरीसबगुननआगरमिलिचलतपियसंग॥कबहूं
गावतकबहूंनिर्तनकबहूंउघटतरंग॥३॥मंडलीगोपाल
गोपीअंगअंगअनुसार॥सूरप्रभुघनवलमामिनिदामिनी
छबिडार॥४॥रागबिहागरो॥निर्ततहेंदेउस्यांमास्यांम॥अं
गसंगपियतेंप्यारीअतिनिरखिचकतसबवांम॥१॥तिरपले
तिचपलासीचमकतिझमकतिभूषनअंग॥पाछविपरउप
मांकहूंप्यारीनिरखिसहसअनंग॥२॥श्रीराधिकासकलगु
नपूरनजाकोंस्यांमआधीन॥संगतेकहूंहोतनहिंप्यारीभई
रहतिअतिलीन॥३॥रससमुद्रमांनोंउछलतभयोंसुंदरतावी
षांनि॥सूरदासप्रभुरीझिथाकितभयेकहतनकछुवषांनि
॥४॥रागकल्यांन॥कबहूंपीयहूरसविहिरदेंलगावें॥कबहूंलेलें
तानननागरीअतिसुघरसुघरनंदसबनेकोंमनरिझावें॥१॥क
बहूंचुंबनिदेतिआकर्षजियलेलेंकरतेविनचेनसबहे

www.vallabhacharyakrupa.org

न अपने॥ मिलनि भुज कंठ रें रहति अंग लटकि कें जात दुख दू
रि है झिझकि सपनें॥२॥ लेत गहि कुच नि बीच रेत अधरनि अम
त एक कर चिबुक इक सीस धारें॥ सूर प्रभु स्वामिनी स्याम सन
मुख है इनि रषि मुख नेंन इक टक न टारें॥३॥ राग विहागरो॥ र
स बस स्याम कीनी नारि॥ अधर रस अचवत परस्पर संग सब ब्र
ज नारि॥१॥ काम आतुर भजी बाला सबन पूरी आस॥ एक इक
ब्रज नारि इक इक आप कह्यौं प्रकाम॥२॥ कबहूं निर्तत कब
हूं गावत कबहूं कोक बिलास॥ सूर के प्रभु रास नायक करत
सुख दुख नास॥३॥ राग विहागरो॥ हूलरहूलहूनि स्यामा स्याम
कोक कला बितपन्न परस्पर देखत लाजत कांम॥१॥ आफल कों
ब्रजनारि कियों तप सो फल सबन दियों॥ मन कामना भई परि
पूरन सबहुनि मांनि लियों॥२॥ राग रागिनि प्रगट रिखाइ गाए
जो जिहि रूप॥ सम सुरनि के भेद बतावत नागरि रूप अनूप॥३
प्रिया सुघरि पिय कों मन मोहन अपबस करति रिझावति॥ सू
र स्याम मोहन मूरति कों बारंबार उरलावति॥४॥ राग रामकली
स्यामा स्याम रिझावति भारी॥ मन में कहति और नहि मो सों कोऊ
पिय कों प्यारी॥१॥ दोउ हूं छंद रधुपद रजस हरि के हरिहीं गाइ सुना
वत॥ आपुन रीझि कंत कों रिझावति यह तिय गावें व ढावत॥२॥
निर्तन उघटनि गति स्रीन पर सुनत कोकिला लाजति॥ सूर
ज स्याम नागरी नागर ललना मंडली राजति॥३॥ राग रामकली
रिझवत पीय बारंबार॥ निरखि मेंन लजानि हिरदें नहि सो भाया
र॥१॥ चंचली सु गति गज हूं समोहति कोक कला प्रबीन॥ हसि
परस्पर तांन गावति करति पिय आधीन॥२॥ सुनत मग बन है
न व्याकुल रहनि चकृति आइ॥ सूर प्रभु बस किये नागर जांनि
जोंन नराइ॥३॥ राग रामकली॥ प्यारी स्याम लई उर लाइ॥ उरज उर
सों परस कों सुख बरनि कां पें जाइ॥१॥ कनक छबि तन मयन तजे
निरखि भामिनि अंग॥ नासिका सुभ बास लेलें पुलकि स्याम अभंग
॥२॥ देति चुंबन लेन मुख कों मांनि पूरण भाग॥ सूर प्रभु बस किये ना
गर बदत धन्य सुहाग॥३॥ राग रामकली॥ रीझि परस्पर हरि नारि कें
भुज भुज धरें दोऊ सकत न नहि निवारि॥१॥ गौर स्याम कपोल सुल
लित अधर अमृत सार॥ परस्पर दोऊ पीय प्यारी रीझि लेत उगार
॥२॥ प्रांन एक द्वै देह कीनी भक्ति प्रीति प्रकास॥ सूर स्वामी स्वामिनी

www.vallabhacharyakrupa.org

मिलि करत रंग बिलास ॥३॥ राग बिहागरो ॥ गावति स्यांम स्यामा रं
ग ॥ सुघर जुवनागरि अलापति सुर धरति पिय संग ॥१॥ तां न गां
वत कोकिला मिलि नाद अलि मनु देत ॥ मोर संग चकोर ड़ोलत
आप आपुने हेत ॥२॥ भांमिनी अंग जो न्रिमांनो जलद स्यांम लगा
त ॥ परस्पर दोउ करत क्रीड़ा मन नहिं मन नहिं सुहात ॥३॥ कुंज निबि
च कुच परसि सोभानि राषि हसनि गुपाल ॥ सूर के चनं गिरिन बि
चम तुरह्यो हें अंधकाल ॥४॥ राग बिहागरो ॥ मोहन मोहनी रस
भरे ॥ भोंह मोरनि नेंन फेरनि तहां जे नटरे ॥१॥ अंग निरषि अनंग
लज्जित सकें नहीं ठहराइ ॥ एक की कहा चलत सत सत कोटि र
हत लजाइ ॥२॥ इते पर हसि मगान गति छबि निरत भेद अपार
उडत अंचर प्रगट कुच दोऊ कनक घट रस सार ॥३॥ दरकि कंसुक
तरकि माला रही धरनी जाइ ॥ सूर प्रभु कर निरषि करुना तुरत
लई उठाइ ॥४॥ राग जैतश्री ॥ प्रेम सहित माला बनलीनी ॥ प्यारी
हरषि रहति यह जांनति भूपर परन नदीनी ॥१॥ पीत बसन लें अ
म जल पोंछति पुनि लें कंठ लगाइ ॥ चरननि करपरसतहीं अप
नेक हूति अति श्रम पाइ ॥२॥ कुच श्रम दरि षि पवन मुख हीं कों फू
कि सिरावति अंग ॥ सूरदास प्रभु मोहनि रूपन चलत पिया के
संग ॥३॥ राग भेरों ॥ हाहा हो पिय निरत करों ॥ जैसें कहिमें तुमें हि
रायो तैसें मेरो मन तुम हरो ॥१॥ तुम जैसें श्रम पाउ करत हो तै
सें में हूं दुलाऊंगी ॥ मेरें श्रम देषि तुम सारे अंग कों भुज भरि कंठ लगा
ऊंगी ॥२॥ मेंहारी सो तुम हूं हारें चरण चापि श्रम मेटोंगी ॥ सूर स्यां
म जो उछंग लई मोहि तो में हूं हसि भेटोंगी ॥३॥ राग रामकली ॥
निरतत स्यांम स्यामा हेत ॥ मुकट लटकनि भ्रुकुटी मटकनि नारि
मन सुख देत ॥१॥ कबहूं चलत सुगंध गति सों कबहूं उघटत बेंन
लोल कुंडल गंड मंडित चपल नेंननि सेंन ॥२॥ स्यांम की छबि देखि
नागरि रही इकटक जोइ ॥ सूर प्रभु उर लाय लीनी प्रेम गुन करि
पोइ ॥३॥ राग कामोद ॥ उरझी कुंडल लट बेसरि सों पीतपट बनमा
ल बीच आंनि उरझे हें दोऊ जन ॥ प्रांनन सों प्रांन नेंन नेंनन सों अर
के हें चटकीली छबि देखें लपटात स्यांम घन ॥१॥ होंडी होउ आनि तें
कोंरी फिरी फिर अंक भरे ततता थेई ततता थेई उघटत हें मन मन ॥ सू
रदास प्रभु प्यारी मंडली जुवति भारी नारी कों अंचल लें लें पोंछ
त हें स्रम कन ॥२॥ राग अडानों ॥ मोंहन लाल के ढिग ललना ॥ पो

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा.॥ सोहै जैसें तरुन तमाल के ढिग सुमन जरद कों ॥ बदन क्रांति अनूप
॥१२९ भांति नहि समारति नीलांबर बन घन बिच प्रगट्यो ससि गग
न सरद कों ॥१॥ मुकतालर तारागन पर तें बिच बेसरि में चुनी मि
लि रंग जैसें होत हरद कों। सूरदास प्रभु मोहन की छबि बाढ़ी
मेंटि दुख निरखि नेंन मेंन दरद कों ॥२॥ राग बिहागरो ॥ पिय संग खे
लत अधिक श्रम भयो आतुरी हों ह्यां कों बियारि ॥ अपने अंबर लें
सुख दाऊं रुचिर बदन श्रम कन के बारि ॥१॥ निरतन उलटि गए अं
ग भूषन बिथुरी लट बांधि होंस बारि ॥ सुनों सूर पिय प्यारी कों मि
लि न जाहि न सुहाइ तिहि दरसों बारि ॥२॥ राग केदारो ॥ प्यारी देखि
बिह्वल गात ॥ नेंन नेंन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥१॥ कब
हूं लेहि उछंग बाला कहि परस्पर बात ॥ प्रेम रस करि भरे दोऊ
नेंन मिलि मुसिकात ॥२॥ रास रस कामना पूरन रेंनि नाहि बिहा
त ॥ सूर प्रभु ब्रजनारि संग मिलि करत सुख निसि रात ॥३॥ रा
ग कल्यान ॥ हरखि मुरली नाद स्याम कीयो ॥ करखि मन तिहूं
भवन सुनत थावरो बन ससि रहि थक्यो गावन लागो नलीनो ॥१
ताप कामानल जे बुद्धि मन मनराजे तिन तनि तन न तजे जिहि या
दलाग्यो ॥ नाग सुर मुनि थके सिद्ध चारन थके सारदा संभु सब
ध्यान जाग्यो ॥२॥ ध्यान नारद टर्यो सेस आसन चल्यो गई बैकुं
ठ धुनि मगन स्वामी ॥ कहति श्री प्रिया सों राधिका रवन ए सूर
प्रभु स्याम के दास कामी ॥३॥ राग धनाश्री ॥ मुरली धुनि बैकुंठ
गई ॥ नारायन कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदय बई ॥१॥ सुनों
प्रिया यह बानि अद्भुत बृंदाबन हरि देख्यो ॥ धन्य धन्य श्रीपति
मुख कहि कहि जीवन ब्रज को लेख्यो ॥२॥ रास बिलास करत बृं
दावन सो हम तें अति दूरि ॥ धनि बन धाम धन्य ब्रज धरनी उडि
लागें जो धूरि ॥३॥ यह सुख तिहूं भुवन में नाहीं जो हरि संग पल ए
क ॥ सूर निरखि नारायन इक टक भूले नेंन निमेक ॥४॥ राग आ
सावरी ॥ जो सुख स्याम करत बृंदावन सो सुख तिहूं पुर नाहीं हो
हम कों कहूं मिलत नहीं उनकी यह कहि कहि अकुलाई हो ॥१॥
हरता करता सो प्रभु दोही बहु सुख मोतें न्यारो हो ॥ सूर धन्य रा
धा बर गिरधर धनि सुख नंद दुलारो हो ॥२॥ राग कल्यान ॥ जब ह
रि मुरली नाद प्रकास्यो ॥ जंगम जड थावर चल कीने पाहन जल
ज बिकास्यो ॥१॥ स्वर्ग पताल दसों दिस पूरन धुनि आछादन की

नों ॥ निसि हू रिक ल्पास मान बढाई गोपिनु कों सुख दीनों ॥ २ ॥ मय
मत्त भए जी व जल थल के तन की सुधि न सभार ॥ सूर स्याम मु
ख वेंनु मधुर सुनि उलटे सब व्यौहार ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ मुरली ग
ति विपरीति कराई ॥ तिहूं भवन भरि नाद समान्यो राधा रवन
बजाई ॥ १ ॥ बछरा थन निनहीं मुख परसत चरत न हीं तन धें
नु ॥ जमुना उलटि धार फिरि चलि पाछें पवन थकि त सुनि वेंनु ॥ २
विह्वल भए न हीं सुधि काहूं स्वर्गध रनि नर नारि ॥ सूरदास
सब चकृत जहां तहां ब्रज जुवतिनु सुख कारि ॥ ३ ॥ राग केदारों
मुरली सुनत अचल चले ॥ थके चर जल झरत पाहन विफल
वृक्ष फले ॥ १ ॥ पय श्रवत गोधन थननि तें प्रेम पुलकित गात
झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव विटप चंचल पात ॥ २ ॥ सुनत खग मृ
ग मौन साध्यो चित्र की अनुहारि ॥ धरनि उमगि न मात धर में
जात जोग विसारि ॥ ३ ॥ ग्वाल ग्रह ग्रह सेज सोंवत वहें सहज सु
भाइ ॥ सूर प्रभु रस रास के हित सुखद रेंनि बढाइ ॥ ४ ॥ राग का
ल्यान ॥ रच्यौ रास रंग स्याम सब हूनि सुख दीनों ॥ मुरली धुनि क
रि प्रकास खग मृग सुनि रस उदास जुवतीन जि गेह वास वन
हीं गवन कीनों ॥ १ ॥ मोहे सुर असुर नाग मुनि जन गन भए जा
ग सिव सारद नारद सारि चकृत भए ज्ञांनी ॥ अमर गन अमर ना
रि आए लोक निविसारि अंक अंक त्यागी कहत धनि धन्य
वांनी ॥ २ ॥ थाकित भये गति समीर चंद्रमा भयों अधीर नारा
न लजित भए मार गन हि पावें ॥ उलटि जमुना वहत धार वि
परीति सब ही विचारि सूरज प्रभू संग नारि कौतुक उपजावें
३ ॥ राग पूरवी ॥ नंदनंदन सुघराई बांसुरी बजाई ॥ सारीगमपध
नी नि सा धस प्त सुर नि गाई ॥ १ ॥ अनिहि अनागत संगीत सुघर
औरतान मिलाइ ॥ सुर ध्याय ताल ध्याय पुनि मृदंग बजाइ ॥ २
सूर प्रभु नवल वाल सकल कलां गुन प्रवीन अरस परस री
झि रिझाइ ॥ ३ ॥ राग टोडी ॥ नंदकुमार रास रस कीनों ॥ ब्रज तरुनी
नु मिलि कें सुख दीनों ॥ १ ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो ॥ कि
यों स्याम सब हूनि मन भायो ॥ २ ॥ विच गोपी विच मिले गोपाला
मनि कंचन सोभित शुभ माला ॥ ३ ॥ राधा मोंहन मध्य विराजें ॥
त्रिभुवन की सोभा बहु राजें ॥ ४ ॥ रास रंग राच्यौ अति भारी ॥ हाव
भाव नाना गति न्यारी ॥ ५ ॥ निर्तत अंग अंग थकित भई नागरि ॥ हू

॥सू.सा. पगुननकोरियरसुजागार॥६॥ उमगिस्यांमस्यांमाउरलाई वा
॥१३० रंवारकह्यौंस्रमपाई॥४॥ कंठकंठभुजरेऊजोरें॥ घनदामिनि
छूटतनहिंछोरें॥५॥ सूरस्यांमजुवतिनसुखदई॥ जुवतिन
केमनगर्ववढाई॥६॥ राग विहागरो॥ सुभगसेजमेंपौढेकुंव
ररसिकवररसमसेश्रंगारंगजागरनजागेहैं॥ सिथिलव
सनवीचभूषणअलककछविमोहेंमुखमुखसोंलपटि
उरलागेहैं॥१॥ झुकिझुकिआवेंनेंनाआलसफूलकिरह्यो
लटपटीवातेंकरिअतिअनुरागेहैं॥ सूरदासनंदसुवन
तिहारेजसजानोंप्राणपीयसुखहीमेंरसपागेहैं॥२॥ राग
विहागरो॥ पौढेलालराधिकाउरलाइ॥ नवकुसमअरुनव
लसेज्यानवचतुरदोऊराइ॥१॥ गानकरतिसहचरीद्वारेंसर
सरागजमाइ॥ सूरप्रभुगिरधरनसंगसुखरह्योउरलपटाइ॥
२॥ राग कांनरो॥ घूंघटकेवगारोटओटरहिहैंटेसरासनभौं
हसायकटूग॥ वेध्योविरितचपलपलकनिअलकनिफ
सनिसंसचलीटिग॥१॥ तेंकरिसायकनायककीमणिसु
निसुंदरिसुंदरिसखिकोजग॥ वेसप्रसंसिअंसभुजधरिहैं
रिधरिकरिकरुणतुवभूषणकोनग॥२॥ चितचितयोंफि
रिरिसाअनोंषीयोखिरअधरमधुसुधिभईजोलग॥ सूरदा
ससंजोगहियहगतिविछुरेकीअकथाकथाखग॥३॥
राग विहागरो॥ गोपिनसंगविहरतस्यांम॥ हावभावकटा
छवहुविधिरिखिलज्जितकांम॥१॥ तबहिंहियमेंगर्ववाढ्यो
औरसबहमनाहिं॥ सूरकेप्रभुगर्भनासनदूरेतिनाहिय
मांहिं॥२॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेएकोनत्रिं
शतितमोध्यायः॥२९॥ अथ अंतरध्यानलीलावर्णनं॥ राग वि
लावल॥ गर्भभयोंव्रजनारिनकोंतवहीहरिजाना॥ राधा
प्यारीसंगलेंभएअंतरध्यांना॥१॥ गोपीतुहिहिरदेंध्योंनहीनव
हीसवअकुलाई॥ चकृतकैंपूछनलगीकहांगएकन्हाई॥२
कोउमरमजानेंनहीव्याकुलसववाला॥ सूरस्यांमदूंढत
फिरेंजितांकितव्रजवाला॥३॥ राग विहागरो॥ हूतेकांन्हअव
हीसंगवनमेंमोहनमोहनकीनेटेरें॥ ऐसोसंगतजिदूरि
भएकौंसमुझिपरीहरिगोहनघेरें॥१॥ चूकमांनिअपनीकें
सेहूंलालवहुरिमुखहेरें॥ कोहियतहोंतुमअंतरजामीपूर

एकामीहोंसबकेरी ॥ २ ॥ ढूंढतिहैंद्रुमवेलीबालाभईबेहा
लकरतश्रवसेरें ॥ सूरदासप्रभुतेरीदासीदृष्याकाजकीमो
डें ॥ ३ ॥ रागधनाश्री ॥ विकलव्रजनाथवियोगनिनारि ॥ हाहा
नाथअनाथकरोंजिनिटेरतिवांहपसारि ॥ १ ॥ हरिकेलाड
गाएजोवनकेसकीनवचनसभारि ॥ चिंतनहैअपराधहू
मारोंनहींकछुदोषमुरारि ॥ २ ॥ दूरनवाटघाटवनघनमें
सुरछुनेंनजलधारी ॥ सूरदासप्रभिमांनदेहुकेबैठीसखि
सहारी ॥ ३ ॥ रागकाफी ॥ काहूदेखीरीनंदलाल ॥ सांवरोढोटा
नैंनविशाल ॥ १ ॥ मोरमुकटवनमालरसाल ॥ पीतांवरसो
हैंमनिमाल ॥ २ ॥ निसवनगाईसबेंव्रजबाल ॥ अंतरध्यांनभ
एरचिख्याल ॥ ३ ॥ द्रुमद्रुमढूंढतिभईबेहाल ॥ सूरस्यांमबिनु
विरहजंजाल ॥ ४ ॥ रागसारंग ॥ तुमकहूंदेखेस्यांमविसासी
तनकबजाइबासकीमुरलीलैगयोप्रांननिकासी ॥ १ ॥ कब
हूंकआगेंकबहूंकपाछेंपगपगफिरतिउदासी ॥ सूरस्यांम
दरसनकेकारणनिकसीचंदकलासी ॥ ४ ॥ रागविहागरो ॥
कहिधौंरीवनवेलीकहूंनेंदेखीनंदनंदन ॥ पूछोंतोधोंमा
लतीकहूंहैंपायोहैतनचंदन ॥ १ ॥ कहिधोंकुंदकदंबकेथब
टचंपकतालतमाल ॥ कहिधोंकमलकहूंकमलापतिसु
दरनैंनविसाल ॥ २ ॥ काहूधोंरीकुमुदनीकदलीकछुकहूंब
दरीकरवीर ॥ कहूंतुलसीतुमसबजांनतिहोंकहांघनस्या
मसरीर ॥ ३ ॥ कहिधोंमृगीमयाकरिहमसोंकहिधोंमधुप
मराल ॥ सूरदासप्रभुकेसबसंगीहैंकहांपरमकृपाल ॥ ४ ॥
रागधनाश्री ॥ कहूंनहींदेखीरीमधुवनमोहनमाधों ॥ क
हूंधोंगमनकीनोंविरमिरहेकहांधोंनेंनमरतदरसनकी
साधों ॥ १ ॥ जबतेविछुरेस्यांमतबतेरह्योंनजाइसुनोसखीमे
रोईअपराधों ॥ सूरदासप्रभुबिनुकैसेंजीवनरीमाईघूंघट
रहौंप्रानआधों ॥ २ ॥ रागआसावरी ॥ कहूंपाईरीसबढूंढिहैंब
नघनस्यांमसुंदरपरवारोंतनमन ॥ नैंननचटपटीमेरेतब
तेंलागीरहतिकहांप्रांनप्यारेनिधनीकोधन ॥ १ ॥ चंपकना
हिंगुलालफूलेतरुतरुप्रतिपूछतिकहूंदेखेनंदनंदन ॥ सूर
दासप्रभुरासरसिकबिनुरासरसिकनीविरहविकलभई
तनमगन ॥ २ ॥ रागधनाश्री ॥ कोनपियारोकहूंनपायोरी ॥

www.vallabhacharyakrupa.org

।।सू.सा. स्यांमस्यांमयहकहतफिरतहैंधनिवृंदावन छायोरी ।।१।। गार
।।१३९ वजोंनिपियअंतरहें रहे सोहम वृषाव ढायोरी ।। अवविनरे
खिंकलन परतछिनस्यांमसुंदरगुनगायोरी ।। २ ।। मृगीमृगानि
द्रुमसारसखगपिककाहूनही वतायोरी ।। सूरदासप्रभुमिलों
कृपाकरिजुवतिनटेरिसुनायोरी ।। ३ ।। रा ग वि ला व ल ।। अति
व्याकुलभईगोपिकाढूंढतगिरधारी ।। पूछतितेयोंवनवेलि
सोंदेखेवनवारी ।। १ ।। जाहीजुहीसेवतीकरनाकनयारी ।। वेलि
चंवेलीमालतीपूछतिद्रुमडारी ।। २ ।। कुंजामरवाकुंदसोंकहें
गोदयमारी ।। वकुलविल्लवटकदमपेंठाढीव्रजनारी ।। ३ ।। वा
रवारहांहाकरेंकहूंहेंगिरधारी ।। सूरस्यांमकोनामलेतिलो
चनजलधारी ।। ४ ।। रा ग वि ला व ल ।। स्यांमसवनकोंदेखिहेंवेद
खतिनाहीं ।। जहांतहांव्याकुलफिरेंधीरजनधराहीं ।। १ ।। कोउवं
सीवटकोंचलीकोउवनघनजाहीं ।। देखिभूमिसवरासकी
जहांतहांपछिताहीं ।। २ ।। नेंननजलजलभरिहेंव्याकुलमन
माहीं ।। सूरजप्रभुकहूंनहीमिलेलोचनतद्रुमपाहीं ।। ३ ।। रा ग सू
हीं बि ला व ल ।। जवनागरिजियगर्वबढायो ।। मोसमांनपिय
औरनहीकोउमोंहूनमेंहीवसकरिपायो ।। १ ।। जोईजोईकहति
तिकरतपियसोईमेरेहींहितरासउपायो ।। सुंदरचतुरऔर
नहिंदूजीदेहधरेकोभावजनायो ।। २ ।। कवहूंकवेंठिजातकहु
रिकरधरिकवहुंकहुंरतिमेंअतिश्रमपायो ।। सूरस्यांमगहिकं
ठरहतियेवांधचढेंपहवचनसुनायो ।। ३ ।। रा ग वि ला व ल ।।
कहेंभामिनीकंतसोंमोहकंधचढावहु ।। नितंकरतअतिश्र
मभयोंतसश्रमेंमिटावहु ।। १ ।। धरनिधरतवनेंनहीपगअति
हिपिराने ।। पियावचनसुनिगरवकेपियमनमुसिकाने ।। २
मेंअविगतिअजअलखहेंयहमरमनपायो ।। भावसहित
सवपेंरहोंयहनिगमनगायो ।। ३ ।। एकप्रांनद्वेदेहहेंदुविधा
नहिजामें ।। गर्वकियोंतियदेहमेंमेंरहोंननामें ।। ४ ।। सूरजप्र
भूअंतरभएसंगतेतजिप्यारी ।। जहांतहांरहिगईवेघोषकु
मारी ।। ५ ।। रा ग सा रं ग ।। तवहरिभएअंतरध्यांन ।। जवकियों
मनगर्वप्यारीकोहूंमोसीआंन ।। १ ।। अतिथकितभईचलनमों
हूनचल्योंनमोपेंजाइ ।। कंठभुजगहिरहीयहकहिलेहुकंध
चढाइ ।। २ ।। गएसंगविसारिरसमेंविरसकीनोंवाल ।। सूरप

www.vallabhacharyakrupa.org

भुदृष्टिचरित्रदेखतनतुरतभईवेहाल॥ ५॥ राग नट॥ नातेंकरदु
मरैकेंठाढी॥ बिछुरीमदनगोपालसंगमोहिविरहग्रियाते
नवाढी॥ १॥ नवकिसलायलनडाईमोंहनवैंनीकुसुमगुही॥ सू
रस्यामप्रभुतुम्हरेदरसबिनुश्रवनचलतकरगाढी॥ २॥ रा
ग केदारौ॥ स्यामगएजुवतीसंगत्यागि॥ प्यारीसंगलगायवि
हरीकुंजलतानरकिनहूंदूगरीसंगनहीतिहिंगिरिवरधारी
॥ चकृतभईसवेंनिसिजागी॥ दसहूंदिसातनदृष्टिपसारी॥
परीमुरछिधरनीसुकुमारी॥ कामवेरलीनोंसरमारी॥ २॥ त्रा
हित्राहिकाहिकहिवनवारी॥ भईव्याकुलननदिसापसारी॥
नेंनसलिलभीजीसवसारी॥ सूरसंगनजिगएमुरारी॥ ३॥ रा
ग मलार॥ अकेलीभूलिपरीवनमांहि॥ कोऊवाउवहीकित
हूंकीछुटिगाईपियवांहि॥ १॥ जहूंजहूंजाउतहांउरलागत
कुगरवतावततनांहि॥ सूरस्यामप्रभुतुम्हरेदरसबिनवेईकर
मवेईछांहि॥ २॥ राग विहागरौ॥ व्याकुलभईगोपकुमारि॥ स्यां
मतजिसंगतेकहांगयेयहकहतिसुकुमारि॥ १॥ पैठिदसदि
सहुमानिदेखतचकृतभईवेहाल॥ राधिकातहांनहीदेखी
कहांवाकेष्याल॥ २॥ कछुकदेखकछुहूरखकीनोंकुंज
लेगईस्याम॥ सूरप्रभुसौरीविहमकोंकरैंसखेकांम॥ ३॥
राग विहागरौ॥ नवबधूमनचलीव्रजनारि॥ सरपथाकरति
दुविधादेतिरसकौभारि॥ १॥ संगहीलेगईहरिकोंसुखकर
नेंवनधाम॥ कहांजेहूंढूंढिलेहूंजहांरसकीनवांम॥ २॥ चरण
चिन्हनिचलीदेखतराधिकामगमांहि॥ सूरप्रभुपगपरसि
गोपीहरखमनमुसिकाहि॥ ३॥ राग विहागरौ॥ हरिहिंसिगो
पीकहतिपरस्परप्यारीकोंउरलायगएरी॥ स्यामकांमतन
आतुरऐसेंवामावसजुभएरी॥ १॥ पुनिदेखेराधिकाचिन्हप
गपीयपगचिन्हनपावें॥ कैंपियकोंप्यारीउरलीनोंयहकहि
भ्रमउपजावें॥ २॥ कनगिरधरकेसेंउरलीनोंउनगिरिजैसें
लीनों॥ सूरस्यामआतुरव्रजनारीपियप्यारीपगचीनों॥ ३॥
राग विलावल॥ जोदेखेद्रुमकेतरेंमुरलीसुकुमारी॥ चकृतभ
ईसुंदरीयहतोराधारी॥ १॥ याहीकोंखोजतसवेंयहहीकहा
री॥ धायपरीसवसुंदरीजोजहांनहांरी॥ २॥ तनकीनेंकहुसु
धिनहीव्याकुलसववाला॥ यहतोंआपवेहालहेंकहिगए

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा॰ ग्वाला॥४॥ वारवार पूछति सवें नहीं वोलति वांनी॥ सूरस्यां
॥१३२ मवाहे नंनी काहि सव पछितांनी॥५॥ रा॰ गौ॰ री॥ कोउ नहिं रा
धा वोलति हें॥ काहे धरनी परी व्याकुल ह्वे काहें नें ननिखो
लति हें॥१॥ कनक वेलि सी कोंमु रझांनी क्यों वन मांझ झुके
लीहें॥ कहां गए मनमोहन तजिकें काहे विरह दहे लीहें॥२
स्यांम नांम श्रवणनि धुनि सुनिकें सखियन के वल गावति
हें॥ सूरस्यांम आए यह कहि कहि एसे मन हरखावति हें॥३
रा॰ गौ॰ री॥ माई री डार डार पात पात वूझत वनराजी॥ हरिपथ
नहीं वतावें सव न मोंन साजी॥१॥ वसुधा जड रूप धर्यो मुख
हूं नहिं वोल्यों॥ चरण कमल परसि पायो संग लागी डोलें॥२
सूरदास श्री गोपाल निठुर भये माई॥ हमसें सुण रोष जांनि
कीनी चतुराई॥३॥ रा॰ विहागरो॥ हरिकों नहीं देखी व्रजवाला
प्रीति विरहानल उपज्यो जियमें परिधर मानि विहाला॥१
वि प्रयोग करि हरि स्वरूप ह्वे वोलनि हिरि वनि हरि की॥ च
लनि हसनि सव अंग अंग स्यांम के प्रेम भरी ढरिकी॥२॥ पूछत
द्रुम वेली केरुख भरि ऊंचे सुर सों वोलें॥ हे पिलपीपर वरक
हीं तुम देखे कृष्ण कलोलें॥३॥ हे चंपक पुन्नाग अशोक कहूं पी
य वा से तुम भाखो॥ कहां गये पियनंदनंदन हरि तुम दुराय
जिनि राखो॥४॥ हे तुलसी कल्यान करन कों पिय चरणन
की प्यारी॥ कितकों गए छवीले नगधर काहियें वचनउचा
री॥५॥ मल्ली मालती जुही चमेली हरि कर परसे फूली॥ कहीं
कहां मनमें हून प्रीतम हम उनसों मग भूली॥६॥ वेलि आंव
जंवू कदंव तुम देखे कहूं गिरधारी॥ मोलसरी कचनार सहि
जनें कहों हरि कित नहिं सिधारी॥७॥ कष्टहरनी वचिरों जी श्री
दिक यमुना तटके वासी॥ पर उपकार हेत सेवत तुमतीरथ
सदा उपासी॥८॥ सव हम विरही ज्ञान सरूप हें हरिकों वेग व
तायों॥ धरनी महाभाग पत हरिके चरण कमल परसायो॥ दे
वावन अरु वाराह नंदसुत परसि पाय पुलकांनी॥ हे ससी
हरनी के वडनेंना हरि हेरे खिडुलसांनी॥१०॥ येहि विधि पू
छि कृष्णमय ह्वे के हरि लीला तव कीनी॥ एक पूतना एक ह्वे
स्तन एक सकट ह्वे भीनी॥११॥ तृणावर्त की लीला करिकें
सखा गोप ह्वे लीनों॥ वछासुर कों हनि के पाछें वक विदारहूं

www.vallabhacharyakrupa.org

कीनों ॥ २२ ॥ धेनुकमारिकालीमर्दनकरिऊखलबंधनकी॥
नों ॥ दावानलगोवर्द्धनधार्‍योहरिहियमेंधरिलीनों ॥ २३ ॥ आ
गेंचरणचिन्हदेखकेंदेखितहांचलिआई ॥ प्यारीमांनकियो
कंधहितबबैठनगएपराई ॥ २४ ॥ सबतहांआयदेखिचकृतदें
धरलोटनदुखभारी ॥ लेउठायसबउरलपटाईकहांगये
बनवारी ॥ २५ ॥ हिलिमिलिसबजमुनातटआईकृष्णभाव
नाछायो ॥ सूरदासपियकीप्यारीसबआतिउत्तमजसगा
यो ॥ २६ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेत्रिंशतमोध्या
यः ॥ ३० ॥ रागविहागरो ॥ कहांरहेअबलोंतुमस्यांम ॥ नेंनउघा
रिनिहारिरहीतहांजोदेखेव्रजबांम ॥ १ ॥ तुमकोंनहीमिले
नंदनंदनमनोंसुधाविनचंद ॥ राधाविरहदेखिविरहानि
यहगानिवितुनंदनंद ॥ २ ॥ पावनमेंकैसेंतूआईस्यांमसंगरहे
नाहि ॥ कछुज्ञानतिकहिगएकन्हाईतहांजोहिलेजाहि ॥ ३ ॥
मेंहठकियोंनृपारिसमाईनियउपन्योअभिमांन ॥ सूरस्यांम
उरपरमोहिआएलेंगयेअंतरध्यांन ॥ ४ ॥ रागकान्हरो ॥ मेंअप
नेमनगर्वबढायो ॥ यहेंकह्योंपियकंधचढोंरीतबमेंभेदन
पायो ॥ १ ॥ यहबानीसुनिहंसेकंतभरिभुजनहिउछंगिलए
तबमेंकह्योकोंनहेंमोसोंअंतरध्यांनभए ॥ २ ॥ कहांगयेमो
कोंगिरधरतजिदईकैसेंमेंआई ॥ सूरस्यांमअंतरभयेमोतें
अपनीचूकसुनाई ॥ ३ ॥ रागबरासी ॥ किहिमारगमेंजाउसखी
रीमारगबिसरिगयो ॥ नाजानोंकितहेंगयेमोहनरसमें
जायपर्‍यो ॥ १ ॥ अपनेपियढूंढनफिरोंमोहिमिलिवेकोचा
उ ॥ कांटलाग्योंप्रेमकोंमेरेपियपहपायोदाउ ॥ २ ॥ वनडूंगर
ढूंढतफिरीघरमारगनजिगाउ ॥ पूछेंद्रुमबेलीलताकेउक
हेंनहिपियकोंनाउ ॥ ३ ॥ चकितभईचितवतफिरेंव्याकुल
अतिहिअनाथ ॥ अबकेंज्योंकैसोंहूमिलोंतोपलकननजि
हेंसाथ ॥ ४ ॥ हृदयमांझपियघरकरोंनेंननवेंठनदेहु ॥ सूर
दासपियसंगमिलोंबहुरिरासरसलेहु ॥ ५ ॥ रागविहागरो ॥
रुदनकरतिवृषभांनकुमारी ॥ बारबारसखियनउरलाव
तिकहांगयेगिरधारी ॥ १ ॥ कबहूंगिरतधरनिपरव्याकुलदे
खिदसाव्रजनारी ॥ भरिअंकवारिधरतिसुखपोंछतिदेतने
नजलधारी ॥ २ ॥ तियापुरुषसोभावकरेंहेंजानेंनिठुरमुरारी

सू.सा सूरदासकुलधर्मआपनोंलयोरहैतवनवारी ॥३॥ राग टोडी
१३३ नंदनंदनतुनकोंहमजांनत ॥ ग्वालनसंगरहैतजेमाईय
हकहिकहिगुनगांनीति ॥१॥ वनवनधेनुचरावतवासरति
यावधतडरनाहीं ॥ देखिरिमाहरखभांनकुंवरिकीव्रजनर
नीपछिनाहीं ॥२॥ वहांभयोपियहठजोकीनोंयहनबूझि
येस्यांमाहि ॥ सूरदासप्रभुमिलोंकृपाकरिदूरिकरोंमनना
माहि ॥३॥ राग कान्हरो ॥ सखीमोहिमोंहनलालमिलावें ज्यो
चकोरचंदाकोंउकटकफिरिकेंध्यांनलगावें ॥१॥ विनदेख
खेंमोहिकलनपरतिहेंयहकहिसवनसुनावें ॥ जिनकार
नमेंमांनकियोंरीअपनेमनदुखपावें ॥२॥ हाहाकरिकरि
पाइनपरिपरिहरिहरिटेरतगावें ॥ सूरस्यांमविनकोरिक
रैजोअपनहीजियआवें ॥३॥ राग आसावरी ॥ होंतोंपूंठिफिरि
आईसगरोहीवृंदावनकहूंनहीपाएमाई प्यारेनंदनंदना
अनतहीरहेजाइकोनेंधोंराखेछिपाइमोकोनकछुसुहा
यकरेंकामकंदना ॥१॥ मोहीतेपरीचूकअंतरभएहेंजातें
तुमसोंकहतिवातमोहिकियोबेदना ॥ सूरदासप्रभूविनभ
ईहोंविकलआलीकहांहेवनवारीसुरमुनिवंदना ॥३॥
राग विलावल ॥ मिलइश्यामसोसोचूकपरी ॥ तिहिअंतरतन
कीसुधिनाहीरसकीरटलागीनटरी ॥१॥ कृष्णकृष्णकहिहे
रिउठतिहेंतुम्हसमवीततपहरघरी ॥ धरनिपरीव्याकुल
भईवोलतिलोचनधाराअंसफरी ॥२॥ कवहूंमगानकवहूं
सुधिआवतसरनसरनकहेंविरहजरी ॥ सूरनिरखिहरिजना
रिदसावहुचकतभईजहांतहांघरी ॥३॥ राग विहागरो ॥ अहे
कांन्हकाहेनहिआवहु ॥ तुमहीतनतुमहीधनमेरेतुमही
होंमनभावहु ॥१॥ कियोंचाहेंअरसपरसकरोनहिमाना
सुन्योंचाहेंश्रवणमधुरमुरलीकेताना ॥२॥ कुंजकुंजजप
तफिरोंतेरीगुनमाला ॥ सूरजप्रभुवेगिमिलोंमोहननंदला
ला ॥३॥ राग विलावल ॥ देखिरीमासकुमारीकोजुवतीसव
धाई ॥ तरुतमालपूछतफिरेंकहिकहिमुसकाई ॥१॥ नंदनं
दनदेखेकहूंमुरलीकरधारी ॥ कुंडलमुकटविराजहीतन
सांवलभारी ॥२॥ लोचनचारुविशालहेंनासाअतिलोने ॥ अ
रुनअधरदसनावलीधरविचारुचिकोने ॥३॥ विंवप्रवाश

www.vallabhacharyakrupa.org

लाजहीं दांमिनि दुनि प्यारी ॥ ऐसें हरि हम कों कहें कहूं देखे है
री ॥४॥ अंग अंग छबि कहुं कहें देखे वनि आवें ॥ सूरस्याम रं
गिन हीं को उ काहि बनावें ॥५॥ राग कल्यान ॥ राधिका मों कहीं
धीर धरि री ॥ मिलेंगे स्याम व्याकुल रहि सांझ जांनि कें हाए बिजि
यकी हरि करि री ॥१॥ आप जहां तहां गई बिरह सब प
गिरहीं कुवरि सों कहि गई स्याम लावें ॥ फिरति बन बन बि
कल संग सखि सोष हूं सकल ब्रज पूरन अकलन हि पावें ॥२
कहां गए यह कहति सबें मग जो वहीं काम तन दहत न रा
जकारि भारी ॥ सूर प्रभु स्याम स्यामा चरित देखि रहें कहत अं
तर हृदय रहे न प्यारी ॥३॥ राग बिलावल ॥ कहूं पावें स्याम कों पू
छति बन बेली ॥ सबें भई व्याकुल फिरें तन मन रहें हेली ॥१
मृगनारी सों पूछि हैं बिरहा तन मारी ॥ कमल सरोवरि पूछि हैं
पूछें सुकुमारी ॥२॥ कनक बेलि सी सुंदरी द्रुम [illegible] तर डरी ॥ मनों
दांमिनी धर परी कें सुधा पन नारी ॥३॥ इत उत [illegible] फिरि आंव हीं
जहां राधा प्यारी ॥ सूर स्याम ब्रज हूं मिलि नहि की रहु पारी ॥४
राग बिलावल ॥ करति हैं हरि चरित ब्रजनारि ॥ देखि अति ही
बिकल राधा यहें बुद्धि बिचारि ॥१॥ इक भई ग्वाल कों बपु इक
भई बन बारि ॥ इक भई गिरिधर न सम मरथ इक भई दें नारि ॥२
इक भई बे धेनु बछा इक भई नंदलाल ॥ इक भई जमुला
उधारन इक कालि अंगर माल ॥३॥ एक भई छबि राम मोहन क
हत राधा नारि ॥ इक कहति उठि मिलों भुज भरि सूर प्रभु की
प्यारि ॥४॥ राग बिलावल ॥ सुनि धुनि श्रवण उठी अकुलाइ ॥
जो देखें नंदनंदन नहि वे सखियन भेष बनाइ ॥१॥ कहां कप
ट करि मो छिरि खावत कहां स्यांम सुखदाई ॥ कृस्न कृस्न स
रनागति कहि कहि बहुरि गिरि भहराइ ॥२॥ पुनि टेरी ब्रज
बाल जहां तहां बन द्रुम सोर लगाइ ॥ सूरदास प्रभु अंतरजा
मी बिरहिनि लेहु जिवाइ ॥३॥ राग कान्हरो ॥ कृस्न सिंधु हरि छ
मा करों ॥ जनकानें हम गर्भ बढ़ायो सो अपनें जिन हरि ध
रों ॥१॥ सोरह सहस तिया सब एकें राधा जिय सब देह ॥ ऐसी
हि साट बिकल नामय प्रगटयो हृदय सनेह ॥२॥ गर्भ हत्यो जिन
ना विरह प्रकास्यों प्यारी व्याकुल जांनि ॥ सुनों सूर अब दर
सन दीजें चूक परी इहि मांनि ॥३॥ राग कल्यान ॥ न्यारे न तजी स्या

www.vallabhacharyakrupa.org

सू॰सा॰ मा॰गोपाल॥ योपरीक्षपाबहुतसुखदीनों तऊअबुद्धिब्रजवाल
॥२३५ ॥१॥ नैंकहुकपटसबकानतेंकीनों अपजसनेंनडरानी॥ हमइक
संगएकएकमतसबकोंनैंकनहींबिलगांनी॥२॥ हमयातें
कघनहूरिनेंरनेंदनबरषनिलगिहितकीनों॥ तुवमरदप्रब
लपवनसमसजनीप्रेमबीचदुखदीनों॥३॥ मांनीरीनदृषि
तसबसुषनिधिमोंहनबेंनबजायो॥ सूरस्यामनवदरस
परसकरिमिलिसंतापनसायो॥४॥ राग कल्यान॥ राधाभूलि
रहीअनुराग॥ तरुतरुरुदनकरतमुरझांनीढूंढिसकलबन
बाग॥१॥ कबरीअसनसिषिखंडीअहिभ्रमचरणसिलीमुख
लाग॥ बांनीमधुरजांनीपिकबोलतकदमकरारतकाग॥
२॥ करपल्लवकोमलकुसुमाकरजांनिपीयअसनभयेकीर
राकाचंदचकोरजांनिकेंपियतनेंनकोंनीर॥३॥ बिह्वलविक
लजांनिनंदनंदनप्रगटभएतिहिकाल॥ सूरदासप्रभुप्रेमअं
कुरतेंलईजायब्रजवाल॥४॥ राग मलार॥ प्रीतिबिनुलागतहेंब
नसूनों॥ छूटतिपिरतिसकलब्रजवनितादेतकामदुखदूनों॥
१॥ तजिसुतपतिसुनिश्रवणनि[illegible]मुरलीनादमृदुकीनों॥ या
पिमकरध्वजअतिआतुरमनमनोंमीनजलहीनों॥२॥ चित
वतचकृतचहुंदिसितेंमनमोहननहिलीनों॥ द्रुमवेली
पूछतिसबसुंदरिनवलजानिकहूंचीनों॥३॥ करदलीओटनि
चोवतिअंचलअधरसुधारसभीनों॥ सूरस्यामपियप्रेमउम
गिरसहंसिआलिंगनदीनों॥४॥ राग बिलावल॥ जबतेंतुमआ
टनंदनंदन॥ श्रीगोकुलवृंदावनब्रजसबसोभितअतिआ
नंदन॥१॥ लक्ष्मीहूंब्रजआयरहींहेंब्रजजनप्रांनअधार॥ छूं
ततुमहिबहुतश्रमपायोंगिरधरनंददुलार॥२॥ बिनामोलकी
दासीहमसबसुंदरवदनदिखावो॥ सूरदासप्रभुमिलहुक्रपा
करिअधरसुधारसप्यावो॥३॥ राग बिहागरो॥ देहूएकमलनें
नसुखदाई॥ हमसिचितोंनकरिहमेंनमारोंयामेंकहांबडाई॥१॥
विषजलतेंपुनिवातिहुतेंअघमुखतेंकैराखी॥ औरबहु
तदुखटारिहमारेअबकोंमारणभाखी॥२॥ नगरछांहिनअ
गटभएतुमअबसोविरहविसाह्यो॥ अपनेनकोंमारनमनकी
नोंतुमजनसबबिसरायों॥३॥ जगतेंटरीजोसरणनिहारीमनमें
करिचलिआवें॥ सोनिर्भैंहैयजायछिनकमेंहमचेरीदुखपावें॥४॥

www.vallabhacharyakrupa.org

श्रीधरकमल धरोंहूमेरेसिर तनमनदुखहिनसावो ॥ स्वामि
नपरइतनीनहिकीजेकमलबरनदूरमावो ॥ ५ ॥ पेहिवि
धिविनयकरतजेमगावतविरहविकलतनभारी ॥ सूरदा
सप्रभुकीप्यारीनवबोलीवचनउचारी ॥ ६ ॥ राग बिहागरो ॥ हे
हरियेकविनतीचितधरियें ॥ कियोएकसेवातमनोहर
सोसालतहियजरियें ॥ १ ॥ उरविसालजहांरमाविराजेतहंहर
मेंधरिलीनों ॥ सोसुमिरतहीयहोनविरीरनप्रतिहिविरह
दुखदीनों ॥ २ ॥ सुमरनकरि छिनुछिनुमोहिनंदके मिलतप्रा
सतनराख्यौं ॥ अबसोऊनहिसह्यौंजातयहसतावचनकोहि
भाख्यौं ॥ ३ ॥ जबतुमबनमेंगोचारनकोंजातमहादुखपावें
कोमलपदकंटकतृणअंकुरकांकरहिपोंजरावें ॥ ४ ॥ कु
चकठोरहूमेरेहेंतानेंचरणकमलनहिधारो ॥ बाकेवचन
कहोंप्यारीनेंसूरसुहियेंविचारों ॥ ५ ॥ राग बिहागरो ॥ गोपीगा
नकियोंगिरधरकों ॥ पाछेंकरीप्रलापप्यारीतनधीरजगायों
गहरकों ॥ १ ॥ करिसिरहृदयमाहिलेकेतथारिप्रतिविकला
हियहारी ॥ हायहायकरीस्वासलेतजनुप्रवलअगिनकी
भारी ॥ २ ॥ पुनिपुनिरुदनकरतमुदरमुरलीकस्मरदासरसआस
पसुपंछीद्रुमबोलिसुनतधुनिजमुनतरंगउदास ॥ ३ ॥ नव
पीतांबरओढिमनेहरिप्राणसुसकततनबहि ॥ देखतउठीप्रा
नपाएजनुसूरसुलपटीसबही ॥ ४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापु
राणेदशमस्कंधेरासकत्रिंशोध्यायः ३० ॥ ३१ ॥ अथ प्रगटहोनसमय
वर्ननं ॥ राग कान्हरो ॥ प्रगटभएनंदनआइ ॥ प्यारीनिरखि
विरहअतिव्याकुलधरनेलईउठाइ ॥ १ ॥ उभयभुजाभरिअं
कमलीनोंराखीकंठलगाइ ॥ प्रांनहूतेप्यारीतुममेरीयहक
हिदुखबिसरायो ॥ २ ॥ हसतभएअंतरहमतुमसोंसहजखेल
उपजाइ ॥ धरनीमुरझिपरीकान्हैनेकहांगईचतुराइ ॥ ३ ॥ राधा
सकुचिरहीमनजांन्योंकहोनकछुसुनाइ ॥ सूरदासप्रभु
मिलिसुखदीनोंदुखडारयोबिसराइ ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ नंदनं
दनउरलायलई ॥ नागरिप्रेमप्रगटतनव्याकुलतवकरुणा
करिहृदयभई ॥ १ ॥ देखिनगरिनरुततरिमुरझानीदेहदिसासब
भूलिगई ॥ प्रियाजांनिअंकमभरिलीनीकहिकहिहसीकांम
हई ॥ २ ॥ बदनविलोकिकंठउठिलगीकनककेबेलिआनंदजई

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा॰ सूरस्यांमसफलकृपाहृष्टिकरि अतिहीभईआनंदमई॥४॥रा
॥१३५ गसूहोविलावल॥अंतरतेहरिप्रगटभए॥रहतप्रेमकेबस
जुकन्हाईजुवतिनकोंमिलिहरखहए॥१॥वैसोईसुखसब
कोंफिरिदीनोंहृदेंभावसतमांनिलियो॥पहुंचांनतिहरि
संगतवहीतेववहैंसुद्धिसवचहेंहियो॥२॥वहेंरासमंडलरस
जांनतवीचगोपीविचस्यांमधनी॥सूरस्यांमस्यामामधि
नायकवहेंपरस्परश्रीनिवनी॥४॥रागसारंग॥वहुरिस्यांम
सुखरासकियो॥भुजभुजजोरिजुरीव्रजवालावैसेंईरसउ
मगिहियो॥१॥वैसोईमुरलीनादप्रकास्योवैसीयगतिजुनप
वनथक्यो॥वैसेंईनिर्तनरंगावरस्योवैसेंईमारगभूलिगयो
॥२॥वैसेंईनिसावैसेमनजुवतीवैसेंईहरिकोंसवेंभजी॥सू
रस्यामवैसेमनमोंहनवैसेंईप्यारीनिरखिलसी॥३॥रागवि
हागरो॥स्यांमछविनिरषिनागरीनारि॥प्यारीछविनिरखत
मनमोंहनसककनननेंनपसारि॥१॥पियसंकुचतनहि दृष्टि
मिलावतसनमुखहोतलजात॥श्रीराधिकानिडरअवलोक
तअतिहिंहियेंहरखात॥२॥प्रगटपरसमोहनमोहनीमिलि
संगगोपीगोपाल॥सूरस्यांमप्रभुसवगुणलायकहृषनके
उरमाल॥३॥अथदुतीपावला॥रागसोरठ॥व्रजरसरासस्यां
मसुजांन प्रथममुरलीनादकरिहरि ह्व्योंसवकोंज्ञांन॥१॥
व्रजवधूमनकांमपूरणकियोपुरुषस्यनार॥सवनिउलटी
रीतिकीनीहोनरसुरआरि॥२॥सहजसुखनिजधारसोंषत
होतछेषटमांस॥होतजुवतीसुखवढावनिकियोपूरनरास
॥३॥मोटिअंतरधांनकोंदुखवहैंराख्योभाव॥सूरप्रभुमहिमा
अगोचरनिगमअंततनपाव॥४॥रागनट॥मोहनरच्योअद्भुत
रास॥संगमिलिवृषभांनतनयागोपिकाचहूंपास॥१॥एक
हीसुरसकलमोहेवेंनुसुधाप्रकास॥जीवजलथलथाकित
रहेमतिनमनहिउदास॥२॥थाकितभयोसमीरसुनिकेंजमुन
उलटीधार॥सूरप्रभुव्रजनारिमिलवननिसाकरतविहार॥
३॥रागनट॥विहरतरासरंगगुपाल॥नवलस्यामासंगसोहत
तिनवलसवव्रजवाल॥१॥सरदनिसिअतिउजलतामेंनव
लतावनधांम॥परमनिर्मलपवनजमुनाकल्पतरुविश्रांम॥२
कोमलाद्वादशरासपरमितरच्योंनंदकुमार॥सूरप्रभुसुखदियो

निसि रमि काम कौसिक हार ॥३॥ राग देवगंधार ॥ द्रवौं हरि जू रा
स रच्यौं ॥ नहि कहूं सुन्यौं नाहि अवलोक्यौं यह रस अवलोक
ह्यौं सच्यौं ॥१॥ प्रथम हि रीझि समाजि साजि सजि लें लोचन म
नउ ह्यौं कच्यौं ॥ एक हि सुर समारभए थिर चर कौ समुझें जो अभै
रनच्यौं ॥२॥ गति गुन मद न अभिमान दोस दुख सव मोहे एकौ
न वच्यौं ॥ सुक सारद नारद सिव कहत एह मएते रिन का है
पच्यौं ॥३॥ निरखि नेंन रसरीति रजनी मुख काम कटक मिलि
हैमम च्यौं ॥ सूरदास प्रभु धीरज न रह्यौं छिन उलटि अनंग नच्यौं
॥४॥ राग विहागरौ ॥ गिरधर प्रगट है दुनक प्रांण ॥ कोऊ कर कं
मल गहि ल्यो नाही छिन कोऊ हरि भुज लपटाए ॥१॥ अपुने कंठ
मेलि हरि के भुज तन की तपति बुझाए ॥ किनहूं पान उगार
हेत मुख हरि के मुख हि लगाए ॥२॥ कोऊ एक चरण कमल पि
य के लें कुच कलस हि परसाए ॥ हीय ताप सी तल कीने तब हीं उ
र आनंद बढाए ॥३॥ एक प्रेम सों क्रोध ठांनि कैं लीनो भौंह चढा
ई ॥ हेर चाबि कैं नेंन कटाछ पिय कों मारति भाई ॥४॥ कोऊ एक
चितवत एक टक ठाढी कछु न रही सुधि नाई ॥ हरि मुख कमल अ
मृत पीवन कों नें कुन त्रषा बुझाई ॥५॥ कोऊ एक मूरति हियें आ
नि कें ध्यांन कियौ मन मांही ॥ नेंनन खोलत यह डर मन में ही
य तें निकस न जाहीं ॥६॥ या विधि सव ही प्रति आनंद सों वि
रह ताप तन मेंट्यो ॥ निकट हि प्रांन पियारे पायो सव सुख हिय
भेंट्यो ॥७॥ जमुना पुलिन आय कें वैठे अपने चीर विछाए ॥
सव के मध्य सव ही के मन मुख गोपी प्रति सुख पाए ॥८॥
श्री मुख कह्यो रिनी में तुम सों प्रति उपकार न होई ॥ दृढ ग्रह
वंधन तजी छिन कमें तुम सी और न कोई ॥९॥ सुनत वचन
निज प्रांन पिया के लीनो हृदय लगाई ॥ सूरदास रस रास कि
यों तव व्रजजन के सुखदाई ॥१०॥ इति श्री भागवते महापुराणे
दसम स्कंधे द्वात्रिंशो ध्यायः ॥३२॥ अथ जल विहार वर्णनं ॥ रा
ग रामकली ॥ संग व्रजनारि रस रास कीनौं ॥ सवन की आस
पूरन करी मिले त्रियन पीय हेत सुख मानि लीनौ ॥१॥ मेटि
कुल कांनि मर्याद विधि वेद की त्यागि ग्रह नेह सुनि वेनु धा
ई ॥ फल जें जें करी मन ही सव जे धरी संका हू न करी आय
भाई ॥२॥ ज्यों महामत्त गज जूथ करनी लियें कूल सर फोरि

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा दुरकाहूनमांन्यों ॥ सूरप्रभुनंदसुतनिरषि निसिसुखकियो
॥३६ नाना नरलोकसुरसवेंजांन्यों ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ रासरसश्र
मितभई ब्रजबाला ॥ निसिसुखदेंजमुनाजललेंगएभोर
भयोंतिहुकाला ॥ १ ॥ मनकांमनाभई परिपूरनरहीनएकों
साध ॥ षोडससहस्रनारिसंगमोहनकीनोंसुखअगाध ॥ २
जमुनाजलविहरतनंदनंदनसंगमिलीसकुमारि ॥ सू
रधन्यधन्यलीलांरसबनरचितनयासुखकारि ॥ ३ ॥ राग गौरी
मलार ॥ रेंनिरमरासमुखकरतवीती ॥ भोरभयेंगयेपावन
जमुनापुलिनन्हातसुखकरतप्रतिबढीप्रीती ॥ १ ॥ एकएक
मिलतिहंसिएकईहरिसंगरसइकजलमध्यइकतीरठा
ढी ॥ इकइकेंदृगनिएकसंगमिलिकेंचलतएकमुखकर
तइकनेहबाढी ॥ २ ॥ कबहूंनहिडरतिजलथलहिंक्रीडाकर
तहरतमननिडरज्योंकेंतनारी ॥ सूरप्रभुसंगस्यामा संग
गोपिकामिटीतनसाधिभएमगनभारी ॥ ३ ॥ राग जैत श्री
जमुनाजलक्रीडतनंदनंदन ॥ गोपीवृंदमनोहरचहुंदिस
मध्यअरिष्टनिकंदन ॥ १ ॥ सोभितपानिपरस्परछिरकत सि
थलहोतननचंदन ॥ ज्योंजलतीपूजतिअहिपतिकोंलगपों
अंगपेंचंदन ॥ २ ॥ कबरीकुटिलसुदेसअंबुकनबुंवतअ
ग्रगतिमंदन ॥ जनुमधुपकमलरसभरिभरिडारतअलि
अनंदन ॥ ३ ॥ इहिविधिचलतअगाधअंकभरिज्योंलुबधकषग
फंदन ॥ सूरदासस्वामी श्रीपतिकेगुनगावतश्रुतिबंदन ॥ ४
राग सारंग ॥ स्यामास्यामसुभगजमुनाजलविभ्रमकरतविह
र ॥ सेतकमलइंदीवरपरमनुभोरभएनिहार ॥ १ ॥ श्रीराधाक
र अंबुजभरिभरिछिरकतबारंबार ॥ कनकलतामकरंद
सघनपरश्रवतचित्रपरकार ॥ २ ॥ पतितीकुसमकलेवरबं
दनिप्रतिबिंबतजतुनार ॥ ज्योंनिसिचक्रगगनमेंडोलतस
सिसवकरतविचार ॥ ३ ॥ धायगहनवृषभांनसुताहरिमो
हतसकलसिंगार ॥ तडितजलदसूत्रनसिंधुमिलिकेंवर
षतअमृतधार ॥ ४ ॥ राग कल्यान ॥ राधेछिरकत छीटछबीली
उचकुचकंपभईछूटेवंदलटकिरहीलटगीली ॥ १ ॥ बंदनवं
दनाटंककनककेरतनजटितमनिलीनी ॥ गतिगयंदमगरा
जवकीपरसोहतितनकिंकिनढीली ॥ २ ॥ मच्योखेलजमुनाज

www.vallabhacharyakrupa.org

लअंतर प्रेम सुदित रसभीली ॥ नंदसुवन भुजग्रीव विराजत
भाग सुहाग भरीली ॥३॥ वरषत कुसुम देव अंबर तें दुंदुभी
सरलवजी सौ ॥ सूरदास स्वामी के विहरत जमुना तरंग था
कीली ॥४॥ राग सारंग ॥ देषौ री सुभग पों सुरक आजु ॥ जलविहा
र विनोद मन सुख रुचि रमन कों साजु ॥१॥ भीजि पट लपटों
सुभग उर देह के सरि वेंन ॥ सुरस परस सुभाव मानों जगे नि-
सि के नैंन ॥२॥ कछुक उपजत के समानों सरस सोभा भेव ॥
सुभग राजत कों मदन कों मनों अंकुर नेव ॥३॥ जुवतीगन स
कजूथ जितवकि तरति अंजुली नीर ॥ सूर सुभग गुपाल तन
रुचि सुखद स्यांम सरीर ॥४॥ राग कांन्हरो ॥ विहरत हैं जमुना ज
ल स्यांम ॥ राजत हैं दोऊ वांह जोरी दंपति अरु व्रजवांम ॥१॥
कोऊ ठाढी जल जानु जंघलों कोऊ कटि हिरदें ग्रीवा ॥ यह सु
ख वरनि सकें ऐसो को सुंदरता की सीवा ॥२॥ स्यांम अंग चंद
न की आभा नागरि केसर अंग ॥ मलयज पंक कुंकुमा मिलि
कें जल जमुना इक रंग ॥३॥ निसि स्रम मिट्यों मिट्यों आलस
तन परसि जमुन जल पावन ॥ सूर स्यांम जल मधि जुवती
गन जन जन के मन भावन ॥४॥ राग कांन्हरो ॥ जलक्रीडा सु
ख अति उपजायों ॥ एस तरुनि मन तें न हि भूलत वहें भेद मन भा
यों ॥१॥ जुवती करि करि जोरि मंडली स्यांमा नागरि वीच ॥ चंद
न अंग कुमकुमा छूटत जल मिलि करि भई कीच ॥२॥ जो सु
ख स्यांम करत जुवती संग सो सुख तिहूं पुर नाहीं ॥ सूर स्यांम
देखत नारिन कों रीझि रीझि फिल पटाहीं ॥३॥ राग विलावल ॥ वि
हरति नारि हसति नंदनंदन ॥ निर्मल देह छुटत तन चंदन
॥१॥ अंकम भरि भरि लेति अनंदन ॥ आति सोभा त्रिभुवन जग
वंदन ॥२॥ कंचन पत्र नारि आनि सोभा ॥ वेउन कों वेउन कों-
लोभा ॥३॥ कवहूं अंकभरि चलत अगाध ॥ परसि परसि मे
टति तन साध ॥४॥ कोउ भाजें कोऊ पाछें धावें ॥ जुवतिन सों ग
हि ताहि न भावें ॥५॥ ताकों गहि अगाध जल डारें ॥ मुख व्याकु
लता रूप निहारें ॥६॥ कंठ लगाइ लेत पुनि ताही ॥ देत अलिं
गन रीझे जांही ॥७॥ सूर स्यांम व्रज जुवतिन भोगी ॥ जाकों ध्याव
त सिव मुनि जोगी ॥८॥ राग टोडी ॥ ऐसे स्यांम वस राधा के ॥ ना
म लेत पावन आधा के ॥१॥ पिया स्यांम मन अंजुल डारें ॥ वा

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा.॥ छबिकोंचितलाइनिहारें ॥२॥ मनोंजलदजलडारतधारें ॥ मन
॥१३१॥ मनहीं तनमनधनवारें ॥३॥ निरखिरूपनहिंधीरसभारें ॥ सूरस्यां
मकेअंकमधारें ॥४॥ राग रामकली ॥ रीझिस्यामस्यामारूप ॥ तैंसी
पलटखगरिपुरूपरअवतनीरअनूप ॥२॥ अवतजलकुच
परनिधारानहींउपमापार ॥ मनोंउग्रालतराहुअमृतकनक
गिरपरधार ॥२॥ कुचनिपरसनस्यामसुंदरनागरीमरमाइ
सूरप्रभुतनकामव्याकुलगएमनहिंसुहाइ ॥३॥ राग रामक
ली ॥ स्यामास्यामअंकमभरी ॥ उरजउरपरसाइभुजभरिजो
रिगाटेधरी ॥२॥ तुरतमनसुखमांनिलीयोंनारितिहिंगहरी
परस्परदोउकरतक्रीडाराधिकाअरुहरी ॥२॥ ऐसेईसुख
दियेंमोंहनसबेंआनंदभरी ॥ करतरंगहिलोरजमुनाप्रेमआ
नंदझरी ॥३॥ रासनिसिश्रमदूरिकीनोंधन्यधन्यपहघरी
सूरप्रभूतटनिकसिआएनारिसंगसबखरी ॥४॥ राग गौ
री ॥ ठाढेस्यामजमुनातीर ॥ धन्यपुलिनतापवेंगपावनजहां
गिरधरवीर ॥२॥ जुवतीवनिवनिआइठाढीओरपहरेंचीर
राधिकामुखस्यामदरपककनककंचनसरीर ॥२॥ लालचो
लीनीलडडियासंगजुवतिनभीर ॥ सूरप्रभूछबिनिरखिरी
झेमगनभएमुनिकीर ॥४॥ राग नट ॥ लखियनस्याममनल
लचात ॥ कहतहेंघरजाहुसुंदरिमुखनआवतबात ॥२॥ ष
टहेंसहससरसरोपवंस्पारेंनिभोगीरासि ॥ एकछिनभईकोउ
नन्यारीसबनपूरीआस ॥२॥ विहसिसबघरघरपठाईव्रजना
ईव्रजबाल ॥ सूरप्रभुनंदधामपहुंचेलख्योनकाहूंग्वाल ॥३॥
राग जैतश्री ॥ ब्रजबासीसबसोवतपाए ॥ नंदसुवनएसीमा
तिठानीघरलोगनउनजाइजगाए ॥२॥ उठेप्रातगातसुखभा
खतआतुरेंनिबिहांन ॥ ऐंडेनअंगजभातबदनभरिकहत
सबेंयहबांनि ॥२॥ जोजेसेंसोतेसेंलागोअपनेअपनेकाज
सूरस्यामकेचरितअगोचरराखीकुलकीलाज ॥३॥ राग जै
तश्री ॥ ब्रजजुवतीरसरासपगी ॥ कियोस्यामसबकोमनभा
योंनिसिरतिरंगजगी ॥२॥ पूरनब्रह्मअलखअविनासीसब
सखियनसुखदीनों ॥ जेतीनारिभेषभएतेतेभेसनकाहूंची
नों ॥२॥ वहसुखटरतनकाहूंमननेपातिहिंनसाधुपराई ॥
सूरस्यामदूलहसबदूलहनिनिसिभावरिदेंआई ॥३॥ राग

सोरुचि॥ साधन नहीं जुवतिन मन राखी॥ मनवांछित सबहूनि
फलपायो वेदउपनिषद साखी॥२॥ भुजभरि मिले कठिन कु
चचापे अधरसुधारस चाखे॥ हावभाव नेंन नसेंन नरेंवच
नरचन मुखभाखे॥२॥ शुकमुनि प्रगट करि गायो कछु
न रह्यो विधा राखी॥ सूरस्याम ब्रजनारि संग हरि पागरहि तन
कों राखी॥३॥ राग अडानो॥ धनि सुकमुनि भागौत बखान्यो॥
गुरु की कृपा भई जब पूरन तब रसना करि गायो॥२॥ धन्य
स्याम वृंदावन कों सुख संतन या तें जान्यो॥ सुर नर मुनि मो
हित सब कीने शिव हूं समाधि भुलान्यो॥२॥ जो रस रास रंग
हरि कीनो वेद न हूं ठहरान्यो॥ सूरदास तहां नेंन बसाए प्रे
रन कहूं पत्यान्यो॥३॥ राग केदारो॥ मैं कैसें रस रासहिं गाऊं
श्री राधिका स्याम की प्यारी तुमरी कृपा वास ब्रज पाऊं॥२
औंन देव सुपनें नहिं जान्यो दंपति को सिर नाऊं॥ भजन
प्रताप सरन महिमा तें गुरु की कृपा दिखाऊं॥२॥ नवलकुंज
बन धाम निकट एक आनंद कुटी रचाऊं॥ सूर कहूं बिन
ती करि बिनवें जन्म जन्म पद ध्याऊं॥३॥ आसावरी॥ तुमही
मोकों दीठ कियो॥ नेंनन सरास हरें ननि नतर राखो सुख देखन नेंन
दियो॥२॥ प्रभु मेरी तुम सकल बड़ाई जोई जोई मांगत पेलि॥ मा
नों चरण सरण वृंदावन जहां करत हरि केलि॥२॥ यह बानी
जु भुजंग श्रवण बिन सुनत बेंदु नसरमानो॥ श्री वृषभान सु
ता पति मोहि तन ते जगत भरमानो॥३॥ राग बिलावल॥ रास
रसलीला गाय सुनाऊं॥ यह जस कहें सुनें मुख श्रवणनि
तिहि चरणन सिर नाऊं॥२॥ कहा कहूं बकता श्रोता सुख इक
रसना क्यों गाऊं॥ अष्ट सिद्धि नव निधि सुख संपति लघुता
कों दरसाऊं॥२॥ जो परतीति होय हिरदे में जगत मोह या छिन
देखें॥ हरि जन बर रस हरि हें सम सरेखें अंतर कपट न लेखें॥३॥
धनि बकता धनि श्रोता तेई स्याम निकट हें ताके॥ सूर धन्य
तिहिं के पितु माता भाव भजन हें जाके॥४॥ राग बिलावल॥ वृं
दावन हरि रास उपायो॥ अद्भुत मुरली नाद सुनायो॥१॥ जुव
ती सुनत तन रिस गावायो॥ मिलि धाई मन को फल पायो
॥२॥ जगमग बलें चलत ठहरायो॥ उलटी जमुना धार बहायो
॥३॥ धुनि सुनि चंचल धार थकायो॥ सुर नर मुनि कों ध्यान भु

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा. लायो ॥४॥ वंसरागानमारगाविसरायो । रूप देखि मन काम लजा
॥१३८ यो ॥५॥ रसमें अंतर परस जनायो ॥ जुवतिन के तन विरह वढा
यो ॥६॥ वहुरि मिले हित प्रतीत उपजायो । फिरि रास मंडली वना
यो ॥७॥ हाव भाव करी सवन रिझायो ॥ कल्प रेंनि सव देनउ पा
यो ॥८॥ प्रात समें जमुना तट आयो ॥ नपिन कों निसिश्रम हि मि
टायो ॥९॥ जुवतिन प्रति प्रियरूप वनायो ॥ सिवनारद सारद
यह गायो ॥१०॥ ध्यान टरयो चित वहां चलायो ॥ स्याके तजा सु
ख कों ध्यायो ॥११॥ सो सुखकंद सुवन वज आयो ॥ सूरदास क
छु कहि कहि गायो ॥१२॥ राग गोंड मलार ॥ रासरसरीति नहि व
रनि आवें ॥ कहां वेसी बुद्धि कहां वह मन लहों कहां यह चित
जिय भ्रम सुलावें ॥१॥ जो कहों कोंन मानें निगम आगम जो विन
कृपा नहि पार सहि पावें ॥ भाव सों भजें विन भाव में वें नहीं भाव
ही मांहि ध्यान नहि वसावें ॥२॥ यहै निज मंत्र यह ज्ञान यह ध्यान
है दरस दंपति भजन सार गाऊं ॥ यह मांगों वार वार प्रभु सूर के
नैन दोऊ रहें नर देह पाऊं ॥३॥ राग जैतश्री ॥ गोपी पद रज महिमा वि
धि भृगु सों कही ॥ वरष सहस्र तप कियो तऊ में ना लही ॥१॥ यह
सुनि कें भृगु कह्यो नारद्यारि भृलो ॥ मांगों तिनकी चरण रेण नों
यह सुनो ॥२॥ सो निज गोपी चरण रज वंछत हों तुम देव ॥ मेरे म
न शंसय भयो कह्यों वाक्य भेव ॥३॥ रूप सुंदरी नहि नारि वा
श्रुत की सव आही ॥ में अरु शिव पुनि शेष लक्ष्मी तिहि सम ना
ही ॥४॥ अरु प्रभु कहे तिनकी कृपा कहें सु में अवगाहीं ॥ याहि सुनें
जो प्रीति करि सो हरि पद रहि समाइ ॥५॥ प्रकृति पुरुष लें भई ज
गत सव प्रकृति समाया ॥ रह्यो एक वैकुंठ लोक जहां त्रिभु
वनराया ॥६॥ अक्षर अक्षुन निरंकार अविगति हें जोई ॥ आदि
अंत नहि जाहि आदि अंत नहि प्रभु सोई ॥७॥ श्रुतनि विनय करि
कह्यो सरव तुम ही देखा ॥ दूरि निरंतर तुम हि तुमहि जानन निज
भेवा ॥८॥ या विधि वहु विधि अस्तुति कपि भई गिरा आकास ॥ मां
गो वर मन भावतो पूरो सो तुम आस ॥९॥ श्रुति तिन कह्यों करजो
रि सचिदानंद देखे तुम ॥ जो नारायण आदि रूप तु सरो सुल
छ्यो हम ॥१०॥ निर्गुन रहत जु निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव
मन वानी जे अगम अगोचर दिखरावहु सो भेव ॥११॥ वृंदावन
निजधाम कृपा करि तहां दिखायो ॥ सव दिन जहां वसंत क

www.vallabhacharyakrupa.org

रूपन्ह स्नानि सों छयों ॥१२॥ कुंज सुभग रमनीक तहां बेली सुभ
गरहे छाइ ॥ गिरि गोवर्द्धन धातुमय रू रनाकर तसुभाइ ॥१३॥
कालिंदी जल अमृत प्रफुल्लित कमल सुहायो ॥ नगनज
टित दोऊ कूलहू समसर सतहां छायो ॥१४॥ क्रीडत स्यांम कि
सोर तहां लिये गोपिका साथ ॥ निरखि सु छबि सब पाकि र
हे तब बोले जदुनाथ ॥१५॥ जो मन इछा होय कहों सो मोहि
कृपा करि ॥ पूरन करों सु कांम दियों में यह तुम कूं बर ॥१६॥
श्रुतिन कह्यो हैं गोपिका केलि करें तुव संग ॥ एवमस्तु नि
ज मुख कह्यो ॥१७॥ कल्प सारस्वत जब साज सब सृष्टि उपावें
श्रुतिन्ह लोक निर्वाण आश्रम धर्म चलावें ॥१८॥ बहुरि अ
धर्मी होइ तब जग अधर्म बढि जाइ ॥ तब बिधि पृथ्वी सुर स
कल बिनय करन मोहि आइ ॥१९॥ मथुरा में हुं भरतखंड
निज धाम हमारो ॥ धारों तहां में गोप भेष सो श्रुति नें निहारों ॥२०॥
तब तुम हूं के करि गोपिका करों हों मो सों नेह ॥ करों केलि तुम
सों सदा सत्य बचन मम येह ॥२१॥ श्रुति मुनि के यह बचन भा
गि अपनों बहु मांन्यों ॥ चितवन लागे समय रिषि मन सो जांनन
जांन्यों ॥२२॥ भार भयों जब पृथ्वी पर तब हरि लीयो अवतार
वे रिचा हैं गोपिका हरि सों कियो बिहार ॥२३॥ जो कोछु भर
ता भाव हृदय धरि इहि पर धावें ॥ नारि पुरुष कोऊ होइ सोई
श्रुतिन्ह चगति पावें ॥२४॥ तिनकी पदरज जो कोऊ बृंदावन भु
व मांहि ॥ परसे सोऊ गोपिका गति लहें संसय नांहि ॥२५॥ भ
गुतानें में चरणरेंनु गोपिन की चाहत ॥ श्रुति मन तबो रंबार
हृदय अपने अवगाहत ॥२६॥ यह पद महिमा गोपिका वि
धि ही रई सुनाइ ॥ नव भृगु आदिक रिषि सकल रहे हृदै प
रचि नलाइ ॥२७॥ सर्व सास्त्र को सार सार इतिहास सबें जो ॥ स
र्व पुरान को सार सार श्रुतिन को सार जो ॥२८॥ बेदन बिधि
सों यों कह्यो बिधि दियो रिषिन बजाइ ॥ ब्यास कह्यो वामन पु
रान में सोई सूर कह्यो गाइ ॥२९॥ राग ॥ बिलावल ॥ जमुना जल
गिरधर करत बिहार ॥ आसपास जुवती मिलि छिरकत हसि
कें मिलि सुखचार ॥१॥ काहू की कंचुकी बंद छूटे काहू की टूटी हा
र ॥ काहू के बसन पलटि लये मोहन काहू न अंग सम्हार ॥२॥
काहू की खुभी काहू की नकबेसरि काहू के बिथुरे बार ॥ सूरदा

सू.सा. सप्रभु कह्यो लों बरनों लीला अगम अपार ॥३॥ राग रामकली
२३८ तिहारो दास सो मोहि भावें श्रीजमुना ॥ श्रीगोकुल के निकट ब
सनि हों लहरिन की छबि पावें ॥१॥ सुख देनी दुख हरनी श्री
जमुना जे जन प्रात नहि न्हावें ॥ मदनमोहन जू की खरी पियारी
पटरानी जु कहावें ॥२॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली
बजावें ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को वेद विमल जस गा
वें ॥३॥ राग रामकली ॥ श्रीजमुना पतित पावन करयो ॥ प्रथ
म ही जब परयो दरसन सकल पाप निस्तरयो ॥१॥ जल तरंग
नि परसि के पय पान सों मुख भरयो ॥ नाम सुमिरत गई दुर्म
ति कृष्ण रस विस्तरयो ॥२॥ गोपकन्या कियो मंजन लाल गि
रधर वरयो ॥ सूर श्रीगोपाल सुमिरत सकल कारज सरयो ॥
३॥ राग रामकली ॥ श्रीयमुना जू पतित पावन करन ॥ प्रथम
ही जाको दरस पायो कोटि कलिमल हरन ॥१॥ पैठत ही ज
ल तरंग परसत मिटत जिय की जरन ॥ नाम उचरत सुधा
वाची बुद्धि पोषन भरन ॥२॥ उपजे भव वैराग जाको खेवि ला
वत सरन ॥ सूर हरि की भक्ति दाता विश्व तपन न रन ॥३॥ राग
भैरों ॥ यहि विधि रैनि रास सुख कीनो ॥ श्रमित भई अंग अंग प
सीना उर अंचल सब भीनो ॥१॥ नाय जमुन जल क्रीडा मोह
न संग लिये हूं जन तानो ॥ जनु गजराज सुंड करि सींचत जांनि
आपुनी करनी ॥२॥ कोऊ गोपी जल भीतर धसि के हरि पद सं
क जले हैं ही ॥ कोऊ गहि रे भय पाय धाय के हरि भुज कर धरि ले
ही ॥३॥ कोऊ प्रति प्रेम विवस के हरि को हियें लगाय नवली
नों ॥ कोऊ जल छीटत हँसत परस्पर हरि मुख चुंबन कीनों
॥४॥ बहु विधि जल विहार करि निकसी नंद कीत पाति बुका
यो ॥ हरि कह्यो घर अब जाहु तुरत ही यह रस कोऊ न पायो ॥५
तुरपो जिनि कोऊ जांनें नाही प्रेम विवस यह आई ॥ सबही
सोवत पाए तब ही मन की डर हि मिटाई ॥६॥ यह रस रास
प्रति ही दुर्लभ जे हि वेद नेति कहि गावें ॥ सूरदास ब्रजजन
पद रज सों कछु कृपा ते पावें ॥७॥ इति श्री दशम स्कंधे त्रय त्रिं
शतमो ध्यायः ॥३३॥ अथ पविद्या धरि शाप मोचन ॥ राग विलावल
नंद सब गोपी ग्वार समेत ॥ गये सुरसुति के तट इक दिन शिव
अंबिका पूजा हेत ॥१॥ पूजा करत सकल दिन बीत्यो कें आई त

हूसांझ॥ व्रजवासी सब श्रमित होइकें सोइ गये वन मांझ॥२॥
अर्द्ध निसा इक उरग आयकें। लिपटि गयो नंद पाइ॥ चौंकि उ
ठ्यो दुख पाय सु कह्यो हा हा कृष्ण छुडाइ॥३॥ ग्वारन मिलि श्री
कृष्ण जगायो पग अहि दीनो छोडि॥ विद्याधर को रूप धा
रि कह्यो नाथ करें को तुमरी होड॥४॥ रिषि अंगिरा श्राप मोहि दी
नो भयो अनुग्रह सोइ॥ सब देवन के देवत मही में देख्यो अब
तुमको जोइ॥५॥ हरि आज्ञा को पाइ नाय सिर गयो आपने लो
क॥ सूरदास हरि के गुन गावत व्रज आए व्रज लोक॥६॥ वृंदा
वन विहार॥ राग॥ बिलावल॥ मोरचंद्रिका माथे दीने राजत रुचि
र सुदेस री॥ बदन कमल ऊपर आलिंगन मनि घूंघरवारे के
सरी॥१॥ भौंह धनुष दृग पवन सखी अति भाल तिलक मनु वा
नरी॥ भौर ह्वै न अति अंधकार में कियो अरुन संधानरी॥२॥
मनिमय जटित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोलरी॥ का
लिंदी में रवि प्रतिबिंबत चंचल पवन झकोलरी॥३॥ सुभग
नासिका मुक्ता राजत फूल मलान धरे विद्रुम नरी॥ मृगसुत मा
नो विमल स्याम घन बीच कियो उडुगानरी॥४॥ अरुन अधर रस
सि मुख मृदु बोलन ईषद कछु मुसिकानरी॥ मनो सुपक्क चि
तवें सजनी रस अनुराग सुधानरी॥५॥ दसन दमक दामिनि निम
नु चमकत सोभा कहत न आवेंरी॥ याही तें दाडिमी उर फाट
त तिनकी सरन हि पावेंरी॥६॥ चिबुक चारु मरकत मनि दु
ति सखि त्रिवली राजति ग्रीवारी॥ मानों सुधा सरोवर कोट
कर क्रीडत जुग कल हंसरी॥७॥ भुजविसाल चंदन सो चरचत
कर गहि मृदु वंसीरी॥ मनो सप्त तीनि रेखा करि कांम रूप की
सी वारी॥८॥ कंचन वरन पीत उपरना सोभित सांवल अंगरी
मनु आवत दोऊ आगें पाछें निसवासर इक संगरी॥९॥ उन्न
त विसाल हृदें राजत हें तापर मुक्ता मालरी॥ मानों नील गि
रि वर ने सिरिता अथ आवत दें धारी॥१०॥ नाभि गंभीर सुधा स
रसी जनु त्रिवली सीढी वनाईरी॥ व्रज जुवतीन मगी आतुर कें
अति प्यारी छिम आईरी॥११॥ कटि प्रदेस सुंदर सुदेस सखी ता
पर किंकिनी राजतरी॥ अति नितंब जंघन अति सोभा देखत नग
गरी लाजतरी॥१२॥ पीन पिंडुरी नवल माधुरी चरणांबुज नख
लालरी॥ मंद मंद गति वे आवत हें दुरद मत की चालिरी॥१३॥ सूर

॥ सू.सा. दासहियवसोनिरंतरमनमोहनअभिरामरी ॥ वृंदावनमेंवि
॥ २४५. हरतदोऊ स्यामप्रियास्यांमाप्यारी ॥ २५ ॥ रागकान्हरो ॥ विहरत
कुंजनकुंजबिहारी ॥ पिकसुकविहंगपवनथकिथिररह्यो
आलापतजबगिरवरधारी ॥ १ ॥ सरिताथकितथकितद्रु
मवेलीअधरधरतजबमुरलीप्यारी ॥ रविससिदेखिदोऊचो
रनिसंकगहीजबबरनउप्यारी ॥ २ ॥ आभूषणसबसाजिआ
पनेथाकितभईब्रजकीकुलनारी ॥ सूरदासस्वामीकीलीला
अबजोवेद्यखभांनदुलारी ॥ ३ ॥ शंखचूडवधवर्णनं ॥ रागवि
लावल ॥ संखचूडनिसिंहिओसरआयो ॥ गोपीहुतीप्रेमरसपा
गीतिनतावोंकछुसोधनपायो ॥ १ ॥ चल्योपराइसकतलेंगो
पीदृरिभयोतबउहिसुधिआई ॥ कोयहलखेंजानकहांहम
कोंकृष्णकृष्णकहिकहिगुहराई ॥ २ ॥ गोपीदेरसुनतदृरि
पोंहोंचेदानवदेखिडुरायो ॥ मूकामारिगिरायदियोंनिहिंगो
पीनहरखबढायो ॥ ३ ॥ मनिअमोलतासिरपाइदईहलध
रहिंआइ ॥ सूरचलेवननतेंग्रहकोंहरिविहसतमिलिसमुदा
इ ॥ ४ ॥ रागविहागरो ॥ इकनिसरासकृष्णवनजाय ॥ सुंदरसो
भादेखिरमणकीअतिहिंसुधानंदपाय ॥ १ ॥ वेणुबजायकृ
ष्णतबगोपीसबकोंबहुरिबुलाई ॥ मर्यादाअतिसोंबलदेव
हिपुषिकृष्णढिगआई ॥ २ ॥ तहांप्रेमसोंदोऊजनविहरतमन
हरिलीनोंसोई ॥ गांनतांनमांनसुरसोंचेतननसुधिरहीनकोई
३ ॥ भूषनवसनसिंगारसकलअंगावदनलेपकियें ॥ सीतलमंद
सुगंधबहेंतहांमनासिजउदितहियें ॥ ४ ॥ निर्मलसरदचांदनीसो
हतसरसिजमल्लीसोहें ॥ कुरबककुमुदबहुतद्रुमफूलेनिरख
तमन्मथमोहें ॥ ५ ॥ भवरमत्तव्हेंगांनकरेंतहांअरुमुरलीधुनिबा
जें ॥ श्रीबलदेवकृष्णतहांराजें देखिपुरंदरलाजें ॥ ६ ॥ नित्तम
तभईसबब्रजतियमणिमालाउरटूटी ॥ सिथलभयेआभूष
णसबहीवेणीहूंसिरछूटी ॥ ७ ॥ येहिविधिक्रीडतअतिसुखपा
योंघनदामिनिछविछाजें ॥ सूरदासहरिकेगुणगावतभव
दुखसबहीभाजे ॥ ८ ॥ रागविहागरो ॥ रामस्यांमदोउवनमेंगये
सुंदरनिसातियनसंगक्रीडतरसमेंमत्तभये ॥ १ ॥ शंखचूडअ
नुचरकुवेरकोंरामतियालेंनास्यों ॥ तियडरकूकिपुकारयोंह
रिकोंधायदोऊमिलिपास्यो ॥ २ ॥ तियकोंछोडिभज्योंतिहिंश्रो

www.vallabhacharyakrupa.org

सरहरिनेहीमुकीमारी॥ माणिसमेतसिरहूटोंतवहीप्राणमा
निलेंधारी॥३॥ मामाहरिदियौंल्यायमणिनवहीतिथदेसनसु
खपायौं॥ सूरदासयेहिविधिव्रजकीउनसुमिरिसुमिरिगुण
गायौं॥४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेचतुस्त्रिंशति
मोध्यायः॥३४॥ रागबिलावल॥ कौंनपरीमेरेलालनकोंवांनि
प्रातसमेंजागनकीबिरियांपोंढिरहेपीतांबरतांनि॥१॥ संगस
खाव्रजबालखरेसवमधुवनधेनुचरावनजांन॥ मातजसो
दाकबकीठाढीदधिओदनभोजनलियेंपांन॥२॥ तुममोहन
नजीवनधनमेरेमुरलीटेरसुनावोकांन॥ सूरदासधनिधनि
निवेप्रांनीगोविंदगुनलीनेजिनिमांन॥३॥ रागबिलावल
जागियेंगोपाललालग्वालद्वारठाढे॥ रैंनिअंधकारगयों
चंद्रमामलिनभयौंतारागनदेखियतनहिंकिरनितरनि
काढे॥१॥ मुकलितभएकमलजालगुंजकरतभृंगमालप्र
फुलितवनपहुपजालकुमुदिनिकुमिलांनी॥ गंधर्वगुना
गांनकरतस्नानदांननेंमधरमहरतसकलपापवदत
विप्रवेदवांनी॥२॥ बोलतसखाबारबारमुखदेखेंतुम्हकु
मारगायनभईबडीबारवृंदावनजेबे॥ जननीकहतिउ
ठोस्यांमजांनजियरजनीतांमसूरदासप्रभुकृपालतुम
कोंकछुषेबें॥३॥ भोजनवर्णनं॥ रागबिलावल॥ भोजनभ
योंभावतेमोहन॥ तातौंजेबोंजागोहोपावन॥१॥ खीरखांडखि
चरीसवारी॥ मधुरमहेरीगोपिनप्यारी॥२॥ राजभोगलियोंभा
तपसाई॥ मूंगअरहरीहींगलगाई॥३॥ सदमाखनतुलछीदे
तायौं॥ घिरतसुवासकचोरानिनायौं॥४॥ पापरखरीअचार
परोसुचि॥ अदरककोंअरुनिंबूवनिकेहेंरुचि॥५॥ सूरनतरिस
रसतरीतोरी॥ सेमसांगरीछोंकीकोरी॥६॥ भरताभटाखटा
ईदीनी॥ भाजीभलीभांतिदसकीनी॥७॥ सांगचनासंगसाग
बोलाई॥ सोवाअरुसरस्योंसरसाई॥८॥ वथुवाभलीभांति
रुचिराध्यौं॥ हींगलगायलईदधिसाध्यौं॥९॥ पोरापरवरभां
तिभलीचुनी॥ टैंटीदधिदेछोंकिलईपुनि॥१०॥ कुंदरूअरुक
कोडककोरे॥ कचरीचारुचचेडासोरे॥११॥ भलेकनाईकेला
कीने॥ लोंनलगायतुरततरिलीने॥१२॥ खीरारामतोरईतामें
रच्योअगूररुचिरजियजामें॥१३॥ फूलेफूलसुहिंजनाछोंके

www.vallabhacharyakrupa.org

॥स्.सा॥ मनरुचि ह्वोइ नाज के ओके ॥१४॥ फूलकरील कली पाक रन
॥१४२॥ रम ॥ फली अमास्त करी अमृत सम ॥१५॥ अरु बहु अमली दई ख
टाई ॥ जेंवत खटरस जात कन्हाई ॥१६॥ पेठा बहुत प्रकारन की
नों ॥ तिनतों सवें स्वार दूरि लीनों ॥१७॥ सुंदर रूप रतालू रानों
लीनों तरि कें आति ही तानों ॥१८॥ ककरी कचरा और कुंवारू
सरस निमनि स्वाद सभारू ॥१९॥ किती क भांति के लाक
रि लीनों ॥ वडे करों राहू रद रंग भीनों ॥२०॥ वरी विमल अरु
वरा बहुत विधि ॥ खारे खाटे मीठे में माधि ॥२१॥ पचरा अरु राइ
तो पकोरी ॥ दुभकोरी मगोरी सुठसोरी ॥२२॥ अमृत एंडर हूं र
स सागर ॥ बेसन पालक अधिक के नागर ॥२३॥ खाटी कढ़ी वि
चित्र बनाई ॥ वहुत बार जेंवत रुचि आई ॥२४॥ रोटी रुचिर क
नक बेसन करि ॥ अजवाइनि सेंधो में ल्याकहिं ॥२५॥ अव
हि आंगाकरि तुरत बनाए ॥ जो भजि भजि खात न संग घाए
॥२६॥ माडे माउ दूहूं और चोपरे ॥ बहु घन नपरे अवहि अवतरे
॥२७॥ पूरी पूरि कें चोरी कोरी ॥ सरल ललउज्जल सुंदर सोरी ॥२८॥
लुचई ललित खापसी सोहें ॥ खार सुवास सहज मन मोहें
॥२९॥ माल पुवा माखन मधि लीने ॥ ग्राहू यसन रविस मंरंग
लीने ॥३०॥ लाय ची लाडू लागतनी के ॥ सेव सुहारी घेवर घी के
॥३१॥ गूंझा बूंदी माल मसूरी ॥ मेवा मिले कपूरन पूरी ॥३२॥ ससि
मम सुंदर सरस आरस ॥ रूप रकनी अमृत जनु वरसे ॥३३॥
वहुत जलेबी जलेबी बोरी ॥ नाही वरु वसुधा सों घोरी ॥३४॥
देखत हूं रवहो तहूं समी ॥ मनों खुरखुरा उपजे अमी ॥३५॥ फें
नी घुरम समिली दूध संग ॥ मिसरी मिश्रत भई एक रंग ॥३६॥
बांध्यों दह्यों अधिक सुखदाई ॥ ता ऊपर पुनि मधुर मलाई
॥३७॥ खोवा खुरखुर ओटि हूं राख्यो ॥ सो हू मम मधुर मीठो रस चाख्यों
॥३८॥ बासो धी सिखरन अति सोंधी ॥ मेलि मिरच में टनच क
चोंधी ॥३९॥ छांछि छवीली हीं गधुवारी ॥ फरहें उठन फारकी
न्यारी ॥४०॥ एते विंजन जसोदा कीने ॥ नव मोहन बालक संग
दीने ॥४१॥ बैठे आय हू सतर दोउ भैया ॥ प्रेम सुरित परो सन हूं मै
या ॥४२॥ प्यार करो राजतन जरित के ॥ भगिस व सालन विवि
धि जतन के ॥४३॥ पहले धन वारों पर साध्यों ॥ नंव आपुन कर
को उठायो ॥४४॥ जेंवन रुचि अधिकों आधि केया ॥ भोजन हूं

www.vallabhacharyakrupa.org

विसरत नाहिं गैया ॥४५॥ सीतलजल कपूर रस रच्यौं ॥ सो मोह
न अति रुचि करि अचयौं ॥४६॥ महा सुरति अति लाड लडावें
ते सुख कहां देवकी पावें ॥४७॥ तब ही धोइ गडुवा जल ल्याई ॥ भ
री चरू षरि कालें आई ॥४८॥ पीरे पान पुरातन बीरा ॥ षात भ
ई दूतिदंतनि हीरा ॥४९॥ मृगमद कुंकुम कपूर करि लीनौं
बौटि बांटि ग्वालन कों दीनौं ॥५०॥ वंदन औरु अरगजा आनौं
अपने कर खल के अंग बांनौं ॥५१॥ उबह्यो बहुत सब निपुनि
पायौं ॥ ता पाछें आपुन हूं लायौं ॥५२॥ यह जो नारि सुनें अरु
गावें ॥ सो निज भक्ति अभय पद पावें ॥५३॥ सूरदास देष्यौ गिर
धारी ॥ बोलि दई हसि रुकमनि प्यारी ॥५४॥ श्री राधिका जू कौ
विवाह राग बिलावल ॥ नरन धरें धरि देवी पूजी ॥ ता के मन
अभिलाष न दूजी ॥१॥ देवी नंद पूत पति मेरे ॥ तो पूजा होइ अनु
ग्रह तेरे ॥२॥ कष्टि अनुग्रह वर दीयौं ॥ जबें वर्ष भरि लौं तप की
यौं ॥३॥ त्रैलोक भूषन पुरुष सुंदर रस कलपन नाहि न वियौ ॥
३॥ डबरि देवो रिसिंगार सखियन कुंज की री आनंदई ॥ निज तप
कीयौं बरष भरि लौं घरी विधि नव्यानंदई ॥४॥ मोर सुकर रचि
मुकट बनाए ॥ माथें धरि कें ढरि आए ॥५॥ तन साबल पीत दुकू
ला ॥ देखत ही दामिनी घन भूला ॥६॥ छंद ॥ दामिनी घन कोटि
बारों जवनि हारों बासरी ॥ कुंडल विराजत गंड मंडल नाहि सो
भा समिखें ॥७॥ और कौन समान त्रिभुवन रूप गुन जा मा हूं हो
मोर नाच तमंत सुंदर लालत मुकट की परछाहूं ही ॥८॥ बंसी की धु
नि बेगि पठाई ॥ गोपी सब मिलि न्योते आई ॥९॥ नव सब हूं नि
मिलि मंगल गावा ॥ अरु बहु फूलन मंडफ छावा ॥१०॥ छंद ॥
छाए सु फूलनि कुंज मंडफ पुलिन में वेदी रची ॥ बैठे जु स्यां
मा स्याम वर त्रैलोक की सोभा मची ॥११॥ नित विहार अपा
र नारद सनक मुनि जन गावहीं ॥ जे जेतकार उदार मोखिय
न अंत रध्यान कराव ही ॥१२॥ रासमंडल भुज जोरी ॥ दूलह वर
स्यामा गोरी ॥१३॥ पानिग्रहन जब ही हरि कीनौं ॥ मंडल भरित
ब भाव रि दीनौं ॥१४॥ छंद ॥ दीनौं जु भाव र रासमंडल प्रीति मां
छि हृदय षुली ॥ नंदसुत वृषभान तनया रास में जोरी मिली ॥१५
इत ही कोकिल करी कुलाहल दृगहि सब ब्रजनागरियां ॥
आए जनेती दुहूं दिस नेदे त आनंद गारियां ॥१६॥ मन मम पामे

www.vallabhacharyakrupa.org

॥मृ.सा. नवशती द्रुमफूलेआननभांती॥४॥ वरखंडीजननसगावा
॥२५२ मघवाघननिसानवजावा॥५॥ वाजेसुवाजेसुरजुनभतेषु
षाअंजुलवरषही॥ देवतानिविमानदंपतिसवकंरिकरि
हरखही॥६॥ इनमुरदासहिभयोआनंदपूजीमनकीसाध
जू॥ श्रीमदनमोहनलालदूलह दूलहिनीश्रीराधेजू॥१०॥
वृंदावनगांवनसमय॥ रागबिलावल॥ देषिसखीव्रजनेंव
निजात॥ रोहिनीसुतजसुमतिसुतकी छविगोरस्यांमहेगिर
लधरगात॥१॥ नीलांवरपीतांवरओरें यहसोभाकछुकही
नजात॥ जुगलजलदजुगतजितमनोमिलिअरसपरसजो
रतहेंनात॥२॥ सीसमुकटमकराकृतकुंडलझलकतबिंब
कपोल॥ इहिभांतिमनोंजलदजुगपसजुगलरविनापरा
इंद्रधनुषकीकांति॥३॥ कटिकछनीकरलकुटमनोहर
गोचारनचलेअनुमांनि॥ ग्वालसखाविचश्रीनंदनंदनवो
लतवचनमधुरमुसिकांनि॥४॥ चितेंरहीव्रजकीजुवतीस
वआपुसहीमेंकरतविचार॥ गोवर्धनधरलियेंसूरजप्रभु
वृंदावनगायेकरतविहार॥५॥ रागमालिनीवचनश्रीकृष्णप्र
ति॥ रागनट॥ छबीलेलालचतुरलीनेंकबजावहु॥ वालिवलिगई
गोपाललालकीधरिकेंअधरसुधारसप्यावहु॥१॥ कवतुम
गोपभेषव्रजधामहोंहोहोंग्वालनसाथ॥ कवतुमछीनिछाक
षावहुगेहोत्रिभुवनकेनाथ॥२॥ दुर्लभजन्मदुर्लभवृंदावनदु
र्लभप्रेमतरंग॥ नाजांनियेंवहुरिकवदेंहेंस्यांमतुम्हारोसंग
॥३॥ अपनीअपनीकोंधवकोंमरीदांनीसबवनविछाइ॥ सोहरि
वाइनंदवावाकीरहेसकलगहिपाइ॥४॥ विनतीकरतसुव
लश्रीदांमासुनोंस्यांमदैकांन॥ पारसकोंमनकारिमहामुनि
तजतअमरसबध्यांन॥५॥ हरिसुनिदीनवचनमुरलीतनचि
तयेमुसिमुसिकाय॥ गुनगंभीरगोपाललालपियहसिकरि
लईउठाय॥६॥ धरिकरअधरखेंचुमनमोहनकियोंमधुरधुनि
गांन॥ सरवसहरियोगुपालगोपिकनुमुनिवारेतनप्रान॥७॥
चलतअधरभ्रकुटीकरपल्लवनासापुटजुगनेंन॥ मांनों
नि[illegible]वरिखावतगतिकीयेनायकमेंन॥८॥ गुंजासहित
चंद्रिकामाथेंकुंचितअलकविसाल॥ मांनोंकोसकमलचों
रनकोंउठिआएअलिवाल॥९॥ कुंडललोलकपोलनकेत

www.vallabhacharyakrupa.org

र ऐसी सोभा देत ॥ मानों अमी सरोवर क्रीडत मकर लरनि के
हेत ॥ ५ ॥ कलमलानि भृगुपद की रेखा सुभग सांवरे गात ॥ मानों
सटविधु दुकरथचे छुटों किमों अधिरात ॥ ६ ॥ लरकनि वेजंती
चरननि पर स्वासा पवन भकोर ॥ मानों सुरसुरी पगा छें आई ब्र
ह्म के मंडल फोर ॥ ७ ॥ तुलतिन लता में रमा सु नग गति मोहे कोटि
अनंग ॥ मोहे सकल जीव जल थल के भई जमुन गति पंग ॥ ८
वा के चरण नैंन भुज वां के अवलोकनि जु अनूप ॥ मानों कम
ल सरोवर विरवा पोहेमी रच्यौ सुर भूप ॥ ९ ॥ जितनतिन थकि
त सकल मुनिजन जाइ परि फुलि नहु मडारि ॥ सूरदास चरण
नि के वालि वलि तनमन धन वलि हारि ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ रीझ
नि वाधिरि झावत स्याम ॥ वेनु वजावत सखीन वुलावत सुव
ल सुदामा लें लें नाम ॥ १ ॥ हसन सखा कर नारी दें दें नाम हमारे
मुरली लेंत ॥ स्याम कहत अब तुम हूं बुलावहुं अपने करते मा
लिनि देत ॥ २ ॥ मुरली लै लै सवे वजावति कोहू पे नहि आवत
रूप ॥ सूर स्याम तुम्हरे मुख वानति वैसो रागो राग अनूप ॥ ३ ॥ रा
ग नट ॥ मुरली विद्या ॥ मुरली सुनत देह गति भूली ॥ गोपी प्रेम हि
डोरनि झूली ॥ १ ॥ कबहूं चक्रत हे सयानी ॥ विरह चलें ररखे जैसें
पांनी ॥ २ ॥ धीरज धरि इक डगरी सुनावें ॥ यह कहि कहि आपु ही वि
सरावें ॥ ३ ॥ कबहूं सुधि कबहूं सुधि नाही ॥ कबहूं मुरली नाद समा
ही ॥ ४ ॥ कबहूं चलें कबहूं फिरि आवें ॥ कबहूं लाज तजि लाज ल
जावें ॥ ५ ॥ मुरली स्याम सुहागिनि भारी ॥ सूरदास प्रभु की वलि
हारी ॥ ६ ॥ राग विहागरो ॥ अधर धरी मुरली स्याम वजावत ॥ सारं
ग गोरी नार कनट कमि पूर्वी सिरी सुनावत ॥ १ ॥ आप भए रस व
स तन्हीं के औरन वस करवावत ॥ ऐसो को त्रिभुवन जल थल
में जो सिर नहीं धुनावत ॥ २ ॥ सुभग मुकर कुंडल मणि श्रवण
नि देखत नारि लुभावत ॥ सूरदास प्रभु गिरधर नागर मुरली
धरन कहावत ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ अधर रस मुरली लूटन लागी
जा रस कों षटरितु तप कीनों सो रस पियत सभागी ॥ १ ॥ चक्रत
कहां भई व्रजवासिनि यह तो भली न आई ॥ सांवधान क्यों हो
त नहीं तुम उपजी बुरी वलाइ ॥ २ ॥ कहां यह रही कहां ते आई कों
नें याहि बुलाई ॥ सूरदास प्रभु हम पर ताकों कीनी सौति वजाइ
३ ॥ राग कल्यान ॥ मुरली मोंहनी भई ॥ की जु करनी देखे वन की

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू०सा सोव्रजफेरिठई॥२॥उहिपयनिधि व्रजसागरमथिपोयतनपियूष
॥५४३ नई॥अधरसुधाहरिवदन इंदुतेइनछविछीनिलई॥२॥आप
अचेंअचवाइसमसुरकीनीरिंगाविजई॥एकहिपुटउतअम
तसूरइतमदिरामदनमई॥३॥राग केदारो॥सखीरीमाधवरो
षनदीजे॥जोईजोईकरोंसोईसोई सखीरीयामुरलीकोकीजें
॥१॥वारवारवनबोलिमधुरधुनिअतिप्रतीतिउपजाई॥मि
लिश्रवणनिमनमोहिमहारसतनकीसुधिविसराई॥२॥
मुखमृदुवचनकपटउरअंतरपहहमकछुनजांनी॥लोक
वेदकुलकांनिछांडिकेंजोउनकहीसोमांनी॥३॥अजहूलों
यहएकअकृतिरसलुवधकसंगजुमाधी॥सूरदासस्वामी
करुणामयपरतनहीअपराधी॥४॥राग केदारो॥मुरलीअध
रविंवरमी॥नोतिसरवसजुवतिजनकोंवदनवदनअमी
॥१॥पियप्यारीगारवकारीवरनिनहीनमी॥तोलसवसुसम
मुरमिलिनागसुरगनिरमी॥२॥महाकठिनकठोरमाईवास
वंसजमी॥सूरश्रीमुखपरमपूरनकेकहूनसमी॥३॥राग सारं
ग॥वंसीवैरपरीजुहमारे॥अधरपियूषअंससवहुनिकोंइ
नपियोंसवदिननिजप्यारे॥१॥इकधुनिहरिमनहरतहमारें
दूजेवचनरहतअनियारे॥वांसवांसहियविविधिमहारसछ
अपनेछिद्रनजानतगारे॥२॥सोप्योसुपतिजांनिव्रजकोंवन
सोअपनाम्यलियोरसवारे॥सवदिनसहीअनीतिसूरप्रभुश्री
गोपाललियेअपनेधारे॥३॥राग मलार॥जवजवमुरलीवेनु
रसलागत॥तवतवस्यांमकमललोचननखसिखतेरसपा
गत॥१॥वानतनकहतरहतटेढेंव्हैपहआलिंगनमागत॥फर
कतअधरविंवनासापुटसधोंचितवनिलागत॥२॥भोंहें
धनुषनेंनअनियारेमनोंमदनसरसाधत॥जाहिलगेसोई
पुनिजांनेंसंगलेनवलवांधत॥३॥पलइकमांहिपलटसोली
जतप्रगटतप्रीतिअनमागत॥सूरदासस्वामीकरुणामयमुर
ल्योंनिमनवनजागत॥४॥राग विहागरो॥अवहीतेहमसवेवि
सारी॥ऐसीतस्नाभईवांकेंजातनारिसाविचारी॥१॥कवहू
कहृदयधरतवनकबहूंअधरनधारी॥कवहूंलगायपलेन
छिद्रनमेंनेंककरततनाहिविसारी॥२॥स्यांमसुजांनकियेवसअ
पनेजोकहियतगिरिधारी॥सूरदासप्रभुकेतनमनधनव

www.vallabhacharyakrupa.org

सोवासुरीप्यारी ॥३॥ राग रामकली ॥ मुरलीभईस्यांमतनमनधन
अवतुमवाकोंदूरिकरावनवसन्नु ॥ कियेनंदनंदन ॥१॥ कवहूं
अधरकवहूंराखतकरकवहूंगावतहेंहरिरेंधारि ॥ कवहूंव
जायमगनअपुनकेंआपुनलटकिरहतमुखपेंधारि ॥२॥ ए
सेपांगिरहतहेंजासोंनाहिकरनकेमेकेंप्यारी ॥ सूरस्यांमहम
सवेंविसारीयहकेमेंअवजानिविसारी ॥३॥ राग विलावल ॥
मुरलीहरिकोंभावेरी ॥ सदारहतिमुखहीमोंलागीनानारंग
वजावेरी ॥१॥ छहोंरागअरुतीसरागिनीइकइकनीकेंगावेरी
जैसेंमनिरखतहरिजूकोतैसीयभांतिरिझावेरी ॥२॥ अधरनि
कोंअमृतपुनिअववनहरिकेमनहिचुरावेरी ॥ गिरधरकों
अपनेवसकीनोंरंगभरिवचनसुनावेरी ॥३॥ सूरजस्यांम
गहेंढिगवाकोंएसोंकोंनटरावेरी ॥ उनकोंमनअपनेवस
कीनोंनानानाचनचावेरी ॥४॥ राग भेरों ॥ मुरलीहरितेछूट
तिहें ॥ वाकेंरीवसभएनिरंतरवहअधरनिरसलूटतिहें
॥१॥ तुमतेंनिठुरभएवेवोलतितिनकोंनउचटावतिहें ॥ आप
जपंथकुलकोंनिमिटावतिहमकोंनिलजकरावतिहें ॥
२ ॥ निठुररहतडरकरतिनकाहूमुहपायेंवहुफूलतिहें ॥ अ
ववहहरिनेहोतनन्यारीनूकाहूकोभूलतिहें ॥३॥ रोमरोम
नखसिखअनुरागीसपागीहरिप्यारीहें ॥ सूरस्यांमवाके
रसलुवधेजानेंसोनिहमपीहें ॥४॥ राग विहागरो ॥ मुरलीह
मकोंसोतिभई ॥ नेंकनहोतअधरतेंन्यारीजैसेंनषारहीं ॥१
कवहूंअववनकवहूंडारतलेंलेंजलथलतेंजुपई ॥ पुनिपु
निलेतसकुचनहिमाननकेसीभईदई ॥२॥ जारसकोंव्रजक
रितपगाह्योकीनीरईरई ॥ कहांधर्योवावासवेंसमें आस
त्रासगई ॥३॥ एसीकहूंभईनहिदेखीजैसीभईनई ॥ सूरवचन
वाकेटोनासेसुनतमनोजजई ॥४॥ राग विहागरो ॥ मुरलीस्या
मअधरनहिटारत ॥ वारंवारवजावनमोहनउरतेंनहींवि
सारत ॥१॥ यहतोंअतिप्यारीहेंहरिकोंकहतनिपरस्परनारी ॥
याकेवसहीरहतहेंएसेगिरिगोवर्द्धनधारी ॥२॥ लयकिरह
तिमुरलीपरठाढेरास्वतग्रीवनवाउ ॥ सूरस्यांमवसताकेउ
लनपलकनहींविसराइ ॥३॥ राग रामकली ॥ मुरलीकेवस
स्यांममुरारी ॥ अधरनितेंनहिकरनहेंन्यारीवाकेरंगराएरी ॥१॥

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा रहत सदा तन सुधि बिसराई कहां करत धों चाहत ॥ देखि भई
॥२५४ न मुनी अब लौं बाम बंसुरिया दाहत ॥ २ ॥ स्यामा हूं निदरि नि
दरि हम हूं कों अब ही तें रोरूप ॥ सुनौ सूर हरि को मुख पायो बो
लत बचन अनूप ॥ ३ ॥ राग जैतश्री ॥ मुरली स्याम कहां धों पाई
करि नवही अधरन ते प्यारी कहां ठगौरी लाई ॥ १ ॥ ऐसी ढीठ
मिलन नहीं ढिंग गई उनही केम न भाई ॥ हम देखत वह पियत सु
धारस देखौरी अधिकाई ॥ २ ॥ कहूं भयो मुह लागी हरि के बच
न लियो रिझाइ ॥ सूर स्याम कों बिबस करावत कहां सो निसि
आई ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मुरली हरि करायें बनि है ॥ अब ही ते ऐसे
गुन या के वहु रूप का हियहु गिनिहै ॥ १ ॥ नामी यह कर पल्लव बैं
छत दिन दिन बाढति जाति ॥ अब हीं ते तुम सुचित कहें रहियें सु
कहति अकुलाति ॥ २ ॥ या हज में नंहि भेद खात जिन देखो हृद
य बिचारि ॥ सूर स्याम या ही के ढिंग ये सब ब्रज नारि बिसारि
३ ॥ राग सोरठ ॥ जब हरि मुरली अंधर धरी ॥ गृह ब्यौहार बिसा
रि अरजपथ संक न मिं संक करी ॥ १ ॥ पदरिपु पट अटके अलि
व्याकुल उलटि जु पलटि खरी ॥ सिव सुत वाहन पिवजु मिले
विच मन बुधि बुद्धि हरी ॥ २ ॥ ध्यानक कीर कपोत मधुप पिक
सारंग सुधि बिसरी ॥ लाजित बिंब बंधूक चं परि तु उडपति ला
जमरी ॥ ३ ॥ हंस सुता के केलि करत हैं आनंद उमगि टरी ॥ सूर
दास प्रभु वहसि रस्यार प्रेम प्रवाह भरी ॥ ४ ॥ राग गुजरी ॥ स्याम
मुरली के संग टरे ॥ वारंवार अधर रस पावन उपजावत अ
नुराग ॥ कर पल्लव ताकों बैठावत आपुन रहति षराग ॥ १
बन में रहति हरि को जानें किन आनी धों जाइ ॥ सूरदास प्रभु
बडी सुहागनि दुपनी सौति बलाइ ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ मुरली
नाम गुन बिपरीति ॥ कहें मुरली गहें मुर अरि रहें निस दिन
प्रीति ॥ १ ॥ कहत बंसी छुटु परगट हृदय छोडे संग ॥ बदति
जगत हरि अधर पीवत करत मन सापंग ॥ २ ॥ चलत ने सब अ
चल कीने अचल चलत न गेस ॥ अमर आने मृत्यु लोक हि
चलत भुवपर शेष ॥ ३ ॥ तीनि हूं गुन मगन ऐसो काल कवन
प्रतीति ॥ सूर तें सो एक कीने रीति त्रिगुण अतीति ॥ ४ ॥ राग के
दारो ॥ बासुरी बिधि ने अबल प्रवीन ॥ कहियें का हि आहि को
ऐसो कियो जगत आधीन ॥ १ ॥ बिपुल बिभूति लहि चतुरान

www.vallabhacharyakrupa.org

न एक कमल कपिष्यांन॥ हरिकर कमल जुगल परि वैठी वा
ज्योंयह अभिमांन॥ २॥ वापि वदन उपदेस विधाता पापी पिख
दनीति॥ आठ वदन गरजत गरबीली कोंचलियेंयहरीति॥
३॥ एकवार श्रीपति के सिखए उहि आयो गुनज्ञान॥ पावेंनो
नंदलाल लाडिलो लग्योरहन दिन कोंन॥ ४॥ एकमरालबै
ठि आरोहन विधि भयो परम प्रसंस॥ इतनो सकल विमान॥
कियेगोपीजन मानस हंस॥ ५॥ श्रीवैकुंठनाथ उरवास निजा
चनजापरेंनु॥ ताके सुख सुख में सिंहासन करि वैठी यहए
नु॥ ६॥ अधराम्रत पियकुल छनटारत तिन्हीं सिखानहिमाग
नरूपि सूरशानंद सुवनकों पाही सो अनुराग॥ ७॥ राग केदारो॥
मनमोहन मुरली अधर धरी॥ कुंजनिवन में रचति रूपनिधि
गिरवरधरन वरी॥ १॥ अधर तान संधान समसुर के द्वारा रास
उमगि भरी॥ श्रतिक रखत चितवित जुवतिन कों नग रवगप
सुविपरीति करी॥ २॥ पियमुख सुधा विलासविलासनि श्रुति
संगीत समुद्र तरी॥ सूरदास त्रैलोक विजय करि दरपमें नप
तिगर्व हरी॥ ३॥ राग सारंग॥ नवमेरो मन चोरयो जब कर मुरली
लई॥ वाजत राग रागिनी बहुरस उपजत तान तरंग नई॥ १॥
देहदसा विनुसुधि भई सजनी अंग अंग प्रति रई॥ तन मन
प्रान त्रांन गुन मेरो सबसु सोंमहि अरपि दई॥ २॥ हरिमुख
वन भुजा परलोचन इकटक चितहरई॥ सूरस्यांम प्रभु तुम
रेहरस कों करिहारी सी विनमोल लई॥ ३॥ राग केदारो॥ मुरली
भई आजु अनूप॥ अधर विंव वजाइ गिरधर मोहे त्रिभुवन
रूप॥ १॥ देखि गोपी ग्वाल गाइन देखि वन ग्रह कूप॥ देखि मु
निजन नाग चंचल देखि सुंदर रूप॥ २॥ देखि धरनि अकास सु
रनर देखि सीतल धूप॥ देखि सूर अगाध महिमा भए दादुर
कूप॥ ३॥ राग विलावल॥ अधर मधुरक हतहमरारवी॥ संजित
रही किएँ सबरा धेजु साकिनि सकुचनि चारवी॥ १॥ साहि साहि सीत
जाय जमुना जल दीन वचन वहुत दिन भारवी॥ नव अतिही
ए नहिन हरि मुख सखि मन ही मन अभिलारवी॥ २॥ अवय
हु भ्रमत पियानि सखि मुरली सवाहिनि के सिरनांखी॥ नयों
छिनायनिदरि सुनि सूरज धेंनुदूरि आंसी॥ ३॥ राग केदारो॥
मुरली स्रवनि कों मनु हरखो॥ प्रथम ही व्रजनारियनु के प्रानि

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा. गिरिधरचह्यौ॥५॥तबनरह्यौगयोंहमपेंसरजुश्रवणनिपख्यौं
॥२५५ पतिसुतपिताबिसारिअंबरचलीपहूंनतजिभख्यौं॥२॥सिद्धचा
रणगुनीगंध्रबमुनतसवबिसख्यौं॥मगनमुनिमारुतनकौ
लतसिथलससिनरह्यौं॥३॥सटकसर्पदूरतधुनिसुनिक
छजुबंसीकह्यौं॥अनतोपरिकेंचनिपुंजसुरभीसदनरेंनरह्यौं
॥४॥चपलचितदेंरह्योकोकिलकीरनेंकुनमुख्यौं॥ध्यानसोंध
रिरहेद्रुमसबनारदुरमेंअस्यौं॥५॥मगमोरमधुपचकोर
सलिताएनमतोंकह्यौं॥आपनोंभसुछांडिबांनीजोगजप
ब्रतधह्यौ॥६॥चकेथिरचरसुरअसुरनरलियेंगहनभख्यौं
सूरमुरलीअधरधारीप्रभुकामनाकोंलख्यौ॥७॥रागनट॥
मुनिकेंकुंजकाननिबेंन॥ब्रजबनितानजोबिसारिअंबरचली
गहनतजिबेंन॥१॥सपटयेहिबिधिभयोंमोहनपूजिओरपरें
न॥सूरस्यांमसुरसिकनागरसुभटसुरतरेंन॥२॥रागरामक
ली॥मुरलीदिनदिनभलीभई॥बनकीसुनिनहीअबयामें
मधुहिपागिगई॥१॥अमतसमांनकहतिहेंबांनीनीकेंजांनि
लई॥जैसीसंगतिबुद्धितैसीपाईसुधामई॥२॥जबआईत
कओरेंलागीसोनिठुरईहई॥सूरस्यांमअधरनिकेपरसेंसो
भाभईनई॥३॥रागगोडमलार॥भलीअनभलीकरतजेसग
तिहुतेंबांसबनकोकीभईमुरली॥कहांतबनहतहीनिठु
रआईजबहिबचनअमतकहतिसुरनिमुरली॥१॥सुधाअध
रनिसंगाभईआपुहीसुधाकहांअबप्रीतिमेंईगिनगांवो॥सू
रप्रभुमिलेअरुहमनिमिलीधायकेंइतेपरधन्यबहुजुगकहें
वों॥२॥रागगोडमलार॥धनिमुरलीधनितपुतुसारो॥धनिमा
ताधनिभ्राताधनिधनिपिताधन्यतुवभगानिसारो॥१॥धन्य
बहुबांसधनिधन्यजहतेंरही॥धन्यबनझारतोतेंबडाई॥ध
न्यतपुकियोंघटहितुरही॥एकपगडुलीनाहिधन्यमनकीडि
ढाई॥२॥कटतहूंमुरीनहिरंध्रहूंजरीनाहिनेमतेंटरीनएतहीं
जानें॥तैसेहीमिलेप्रभुसूरतोकोंतुरतसींचिअमतअधरमां
नें॥३॥रागहमीर॥आजुबजाईहेमुरलीमनोहरसुधिनरहीक
छुमेंतनमनमें॥मेंजमुनातटसहजजातिकोंनहठाढेहेवृंदा
वनमें॥१॥नानारागरागिनीगावतधरेंअमतअधरनिमें॥सूर
निरखिहरिअंगत्रिभंगीबाछबिमेंगईभरिमें॥२॥रागपूरबी

भरे ते भए नरेस ॥४॥ देन सकनि माछन मिलि रस हु दिस रहाई
सूर श्री गोपाल लाल बंसी बस माई ॥५॥ राग जैतश्री ॥ सुनि कें
हो धुनि ध्यान सुधारस मुरली बाजें ॥ स्याम अधर पर बैठि वि
राजति सप्त सुरनि साजें ॥१॥ बिसरी सुधि बुधि गति सब ही नकी
सुनि बेनु मधुर कल गान ॥ मन गति पंग भई जुवती गंध्र
व मोहे ज्ञान ॥२॥ खग मृग थके फलनि तृन तजि कें बछरा पि
वें न छीर ॥ सिद्धि समाधि थपकी चतुरानन लोचन बहें सबनी
र ॥३॥ महदेव की तारी छूटी अति निकें रहें अचेत ॥ ध्यान रह्यो धु
नि सों मन लाग्यो सुर मुनि भए अचेत ॥४॥ जमुना सलिल बही अ
ति व्याकुल मीन भए बलहीन ॥ पशु पच्छी सब थाकित भए हैं
रहे एक रस लौ लीन ॥५॥ इंद्रादिक सनकादिक नारद सारद
मुनि आवेश ॥ घोष नारि ए आतुर हें धाई तजि पति पुत्र अरेस
॥६॥ श्री वृंदावन कुंज कुंज प्रति अति विसाल आनंद ॥ अनुरागी
पिय प्यारी के संग रस बस सूर चेसानंद ॥७॥ त्रिहू भुवन भरि नाद
प्रकास्यो गगन धरनि पाताल ॥ थकित भए तारागन सुनि कें
चंद्र भयो बेहाल ॥८॥ नटवर भेष धरें नंद नंदन निरखि बस्या
भयो काम ॥ उर बनमाल चरन पंकज लों नील जलद तन स्याम
॥९॥ नटिन जराव मकरकुंडल छवि पीत बसन सोभाय ॥ वृंदाव
न रस रास माधुरी निरखि सूर बलि जाइ ॥१०॥ राग काफी ॥ बजा
ई बांसुरी ब्रजराज मोहे ब्रजराज ॥ सुनि श्रवण त्रिभुवन नारि
सब की मन नहि सूझत गृह काज ॥१॥ मात पिता सुत बंधु की तजि
इन नेंनन निलाज ॥ हूं मेरे द्रुम रूरे हें भए वृंदावन वे काज ॥२॥
गैया गोप गोउ गृह अरु के ह सुता भई भीर ॥ गान गंधर्व स
व थकित भए हैं बलत न त्रिविधि समीर ॥३॥ सुनि सुनि सक
ल ब्रज वधू धाई विकल बावरी बेस ॥ रही न सम्हार हार उर
अंचल छूटे कंचुकी केस ॥४॥ शिव विरंचि विसरि शेष सारद
मघवा मगन भए ॥ रविरथ रोकि रहे सुर लोक हूं बाजे बाज
जो गए ॥५॥ सुरनर मुनि अस्थावर जंगम सब ही भए मन पंग
तजि धन धाम बाम गृह अरु की सूरस्याम के संग ॥६॥ राग म
हों ॥ मेरे सांवरे जब मुरली अधर धरी ॥ सुनि धुनि सिद्धि समा
धि टरी ॥१॥ सुनि थाके देव विमान ॥ सुर वधू चित्र समान ॥२॥ ग
ह नक्षत्र तजत न रासि ॥ बांहन बंधे धुनि फांसि ॥ सुनि आनंद

॥ सू.सा उमगिभरे ॥ चलथकिरहे अचलचले ॥४॥ चलअचलगतिविपरी
॥ २५८ ति सुनिवेंतुकल्पितगीत ॥५॥ फरनाफरेंपाषान गंधर्वमोहेगां
न ॥६॥ सुनिचंचलपवनथक्यो ॥ सलिताजलसैंचलिनसक्यो
७ ॥ सुनिथाकितभयोसमीर ॥ उलट्योजुयमुनानीर ॥८॥ धुनिसु
निचलीव्रजनारि ॥ सुनदेहगेहविसारि ॥९॥ सुनिखगमृगमौ
नधरी ॥ फलत्रिनदूंकीसुधिनकरी ॥१०॥ मृगधेनुचकतरहे ॥ त्र
णदंततहूनिगहे ॥११॥ बछरानपीवेंछीर ॥ पक्षीमनोमुनिधीर
१२ ॥ द्रुमवेलीचपलभई ॥ नवपल्लवपलटिनई ॥१३॥ जेविटपचं
चलपात ॥ तेनिकटकोंअकुलात ॥१४॥ अंकुरितपुलकितगा
त ॥ अनुरागनेंनचुचात ॥१५॥ मनमोह्योमदनगोपाल ॥ तन
स्यामलनयनविसाल ॥१६॥ नवनीलतनघनस्याम ॥ नवपी
तपटअभिराम ॥१७॥ नवमुकटनवबनदाम ॥ लावण्यकोटि
ककाम ॥१८॥ मनमोहनरूपधर्यो ॥ नवकामकोगर्वहर्यो
१९ ॥ श्रीमदनमोहनलाल ॥ नवनागरीसोंबाल ॥२०॥ नवकुं
जजमुनाकूल ॥ देखतसरदसहितफूल ॥२२॥ राग बिहाग ॥
तोपरवारीहोनंदलाल ॥ सरदचांदनीरजनीसोहैं वृंदावन
श्रीकुंज ॥ प्रफुलितसुमनविविधिरंगजहांतहांकुंजनको
किलपुंज ॥१॥ जमुनापुलिनस्यामघनसुंदर अद्भुतरासउपा
यो ॥ सप्तसुरनिबंधानसहिततहांहरिमुरलीटेरसुनायो ॥२॥
पवथक्योपवनसुरथाकितनभएसुनिधरनिउमगिवरकांप्यो ॥
खगमृगमीनजीवजलथलकेसवतनसुरतिविसार्यो ॥३॥
सूखेद्रुमपल्लवफललागेनवनवसाखाडारी ॥ सुनिव्रजवधू
तज्योंआरजपथसुनपतिनेहनकारी ॥४॥ एकजेवनारिकर
तहीछांडीएकजेंवतपतिन्यागयो ॥ एकबालकपेपीवतसु
तवाखतिप्रेमविवसतनुजाग्यो ॥५॥ जोजैसेतैसेंउठिधाईतन
मनसुरतिविसारी ॥ मुरलिनादकरिटेरिलईहरिव्रजनवतरु
णिकुमारी ॥६॥ अंजननेंनअधरदइहुकेविवसारंगासुतनह
लाग्यो ॥ मांनोंअलिचेठेवंधुपपरपियतसुमनरसपाग्यो ॥७॥
करिकंचुकीउरजलहंगाकसिचरननिहारसवाध्यो ॥ उल
टेभूषणअंगनिसानेफेरिनकाहुनिहार्यो ॥८॥ चलीसवैति
यआधीरतियांजहांनंदकुंजविहारी ॥ आनिहजूरभईकाननन
मेंतहांस्यामसुखकारी ॥९॥ देखिसवैंव्रजनारिस्यामघनवि

www.vallabhacharyakrupa.org

मुरलीवाजेंराजेंहेमुखमोहनकेसुनिरीझिरहींरसतानानि॥
आनिद्रपरहीरसधुनिसंगआईरीभईमगानिहिकानानि॥१॥त
बतेंऔरकछुनहिंभावतिबहुछविवितानानि॥सूरदासप्रभुन
वलछवीलेरहेतनवलनारिनेंजानानि॥२॥रागकाफी॥माई
मोहनाकीमुरलीमेंमोहनीवसतुहें॥जवतेंसुनिश्रवणर
ह्योंनपरेंभवनदेहतेंमनहुप्राणअवनिकसतुहें॥१॥कहां
करोंमेरीआलीवांसुरीकीधुनिसालीमातपितापतिवंधु
अनिहीत्रसतुहें॥महाअगिनिअरुविरहकीज्वालाजाहिजे
सेंजलहीनमीननटहिडसतुहें॥२॥अतिहितपानिछानीला
गतिहेंप्रेमवांतीफूलनिकीमालामनोंव्यालडेंरसतुहें॥सू
रस्यांममिलनकोंआतुरव्रजकीवांमएकएकपलजुगसम
ज्योंवितनुहें॥३॥रागकाफी॥मोंहनमनुमोहिलियोंललितवें
नुवजाईरी॥मुरलीधुनिश्रवणसुनतविवसभईमाईरी॥१
लोकलाजकुलकीमरजादाविसराईरी॥घरघरउपहासमु
नतनेंकहूनलजाईरी॥२॥औरजपतपवरपुरानवेदवेंन
सुहाईरी॥सूरदासप्रभुकीलीलाअगमनेतिगाईरी॥३॥रा
गकाफी॥सुनिआधीसीरातिमोहनमुरलीवजावें॥नीरदृष्ट
हिगईमनमुरझान्योंप्राणपिऔरनभावें॥१॥मनहरिलियों
देहगतिभूलीगहआवनननसुहावें॥सूरदासप्रभुमुरलीना
ननिदेहदसाविसरावें॥२॥अथरामलीला॥रागकेदारों॥आ
जुवनवेंनुवजावतस्यांम॥यहकहिकाहवछरूनभईगोपीसु
नतमधुरसुरकाम॥१॥कोउजेंवनारिकरतिकोउवेंठीकोउ
काढीहीधांम॥कोउजेंवतिकोउपतिहिजिवावतिकोउसि
गारमेंवांम॥२॥मांनोंचित्रकीसीलिखिकाढीसुनतपरस्प
रनांम॥सूरसुनतमुरलीभईवोरीमदनकियोंतननांम॥३॥
रागकेदारों॥जवहरिमुरलीअधरधरी॥सांमलतनमेंरचीरू
पनिधिगिरिवरधरनवरी॥१॥उघटततांनवंधानसप्तसुरसु
निरसउमगिभरी॥आकरष्योंचितावितजुवतिनकोंगतिविप
रीतिकरी॥२॥पियमुखसुधाविसालसुरतिपतिसंगीतसमुद्र
तरी॥सूरदासत्रैलोकविजेरतिपतिमानदर्पहरी॥३॥रागके
दारों॥मुरलीअधरसजीवलवीर॥नादसुनिवनितानिमोही
वीसरेउरचीर॥१॥षगनेंनमूंदिसमाधिराषेनेंननिमिलेनप

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू॰सा॰ धीर॥डुलतिनहिंद्रुमपत्रवेलीचकितमंदसमीर॥४॥मृगधेनु
॥२५६ तजिरहेमुखवछरानपीवतछीर॥सूरमोहनरागसुनिसुनिथ
कितजमुनानीर॥७॥राग विहागरो॥वंशीरीवनकांन्हबजावत॥
आनिसुनहुश्रवणमधुरेसुरनादमध्यलेंनामचलावत॥१॥
सुरश्रुतितांनबंधानमधितअतिअतितअनागतल्यावत
जुरीजुगभुजासिरसेलछेखमध्यिवरदनपयोधिअमृतउपजा
वत॥२॥मनमोहनीभेषधरीवेंमनमोहतमनोंमधुपानक
रावत॥खगमृगमीनवसुप्रभएनादूरसमरदनहुतेमरदनहि
जगाज्ञावत॥३॥औरकहांलगिकहोंसूरप्रियरघरमोहेकोइन
पारनपावत॥मांनहुमूंकमिठाईकोगुनकहिनसकतसुख
सीसडुलावत॥४॥राग सारंग॥मुरलीधुनिश्रवणसुनतभव
नरहोनपरई॥ऐसीकोचतुरनारिधीरजोमनधरई॥१॥सुर
रमुनिसुनतसुधिनसिवसमाधिटरई॥अपनीगतितजिपव
नसलितानहिढरई॥२॥मोहनमुखमुरलीमनमोहनवसकर
ई॥सूरदासससमसुरनिसुधामाधुरई॥७॥राग केदारो॥मोहन
मुरलीअधरधरी॥आनप्रणविसरोंआतुरह्वेंतनहूकी
सुधिनकरी॥१॥पट्रिपुपरटरकोंनमस्कारतिइललटिलेंपल
टिखरी॥कवहुकमिसवाहनरावकिमिलितामनहूकि
बुद्धिहरी॥२॥हूगिरिगकीरकपोतमधुपपिकसारंगसुधिनक
री॥उडुपतिविद्रुमविंवलजानोंदामिनिआधिकरी॥३॥मिलि
हींस्यामहिंसमुतानरआनंदउमगिभरी॥सूरस्यामकोंमि
लीपरस्परप्रेमप्रवाहपरी॥४॥राग केदारो॥मुरलीअतिगर्वका
हूवरतिनाहिनआनु॥हरिकोंमुखकमलदेसपायोंसुखराजु
॥१॥बेंठतिकरपीठिढीठिअधरछत्रछांहि॥राजतअतिचवरचि
कुरसरसभांमांह॥२॥जमुनाकेजलहिनाहिजलधिजानति
देति॥थावरचरजंगमजडकहतजोनिजेजि॥३॥विधिकीविधि
मेंटिकरतिअपनीनईरीति॥वंसीवससकलसूरसुरनरमुनि
जीति॥४॥राग विहागरो॥वंशीवनराजआजुआईरनजीतें॥मे
रतिहेंअपनेवलसवहिनकीरीतें॥१॥विदुरेगजजूथसेंलसें
ननुरनभाजी॥घूंघटपटकवचटूटिछूटेसवलाजी॥२॥काहूं
आनिगेहतजेकाहूंतनप्रांन॥काहूंमुखसरनलयोंसुनतसुज
सगांन॥३॥कोउपरस्परसिगएअपनेमनदेस॥कोऊरसरंग

www.vallabhacharyakrupa.org

नएबुद्धिसबरी||कैसेंआईवृंदावनभीनारतुमसबपियकी
प्यारी||१०||तुमकुलबधूभवनह्वीनीकीरैनिकहांसबआई||
अपनेअपनेघरतेपतिजनसोंकेसेंनिकसनपाई||११||वेनु
सबदश्रवणनिमगुंहेंउरपेंठिहमहिलेंआयो||आसतुमा
रीजांनिचपलचितचंचलतुरतचलायो||१२||अपनोंपुरुष
छांडिजोकांमिनिअन्यपुरुषमनलावें||अपजसुहोयजग
तजीवनभरिबहुरिअधमगतिपावें||१३||अबहूंजाहुसबघो
षतरुणिफिरितुमनोंभलीनकीनी||रैनिविपिननहिंवासकी
जियेंअबलनिकोंनाहिलीनी||१४||घरकैसेंफिरिजायस्यां
मनुननईरुईसबत्यागें||तुमतेकहेंकौनयांप्रीतमजासंग
मिलिअनुरागें||१५||हमअनाथब्रजनाथतुमारेचरनसरन
तकिआई||निठुरवचनजिनिकहोपीयतुमजांनतपीरपराई
१६||दीनवचनसुनिश्रवणक्रृपानिधिलोचनजलबरखाये
धन्यधन्यकहिकेंकहिनंदनंदनहरषितकंठलगाए||१७||हम
कीनोंअपमांनतुमारोंतुमनाहिंमनकछुआन्यों||सलिता
जैसेंसिंधुभजेंढरितैसेंतुममोहिजान्यों||१८||रासकोसरा
सपरमितभईताकोंकहाबखानों||बोलिलईब्रजबंधुविह
सिसबतुममंडलविधिमानों||१९||पांनिपांनिसोंजोहिजुव
तिदहुदहूंविचस्यांमविराजें||कंचनखंभखचितमरकतम
नियहुउपमाकहुछाजे||२०||अंगअंगप्रतिकोटिकामछबिलजि
तमाधिनायकगिरिधारी||निर्तकरतरसबसभयेदोऊश्रीरा
धामोहनप्यारी||२१||ब्रजबनितामंडलीबनायेंसोभाअधिक
विराजें||नूपुरकटिकिंकिनीचलतगतिआसपरसपरबाजें
२२||मोरचंद्रिकासिरपरसोंहेंनवहरिनतुकुनाच्यो||अंगअंग
प्रतिओरओरगतिकोटिमदनछबिराच्यो||२३||जमुनाजलत
लरीबहिधाराचंदरथनचलावें||बानिकअतिहिंबनेबन
मोहनमनेमप्यपकरिनचावें||२४||निर्तकरतराकेंमनमोह
नराधाकंठलगाई||रासविलासकरतसुखउपज्योंसबबस
कियेकन्हाई||२५||अंतरध्यांनकरनदुखवाढ्यौंराधावरसुख
कारी||सूरदासप्रभुभक्तबछलताप्रगटकरीगिरिधारी||२६
रागसोरठ||सरदनिसाकीरैनिसुहाईहो||वृंदावनघनमें
जरुपनिराईहो||सप्तसुरनिविधिसोंमुरलिवजाईहो||सुनि

www.vallabhacharyakrupa.org

॥सू.सा. धुनि नारि चली व्रजनतजि आई हो ॥ धुनि सुनत व्याकुल भई सुव
॥१५८ नी मदन तन आतुर करी ॥ विवस भई तन मन भुलानी भवन
काज परिहरी ॥ लटे आभूषन सव वनाए अंग की सुधि
बीसरी ॥ नंदसुत चित वित चुराये आय भई सव हाजिरी ॥ २
हाजिर आय गई जहां वनवारी हो ॥ निसि कहां धाय चली व्र
ज घोष कुमारी हो ॥ वचन सुनाए हो मोहन नागर की ॥ पतिग
ह त्यागी क्यों गुरजन वागर की ॥ गृहपुत पति क्यों त्यागि आई
नाहिनें तुम भली करी ॥ पाप पुन्य न सोच कीनो कहां तुम जिय
पह धरी ॥ अजहुं घर फिरि जाहु कांमिनि करहु सो जो हम कह्यो
लोक वेद ना विरित गाय्यो पर पुरुष नाहिं धनि लह्यो ॥ २ ॥ निठु
र वचन सुनि कें ग्वालिनि निठुर भई ॥ अति मुरझाय रही सुधि
बुधि सवें गई ॥ विनें वचन कहि कें ग्वालिनि सुनाई हो ॥ तुव व
लनि मन रें सव विसराई हो ॥ तुव दरस की आस पिय व्रत नें
मरद्यार हें धह्यो ॥ कौन सुत को मात पति को न त्रिय को
किन कह्यो ॥ कहा एक वचन नाहिं काहू कह्यो कहा मानिहें ॥ इ
हं वरु हम प्रान त्यागें आई जहां सो जांनिहें ॥ ३ ॥ हों रहसि वो
लें धनि सें जनारी ॥ में वहुत कसी तुम व्रत धारी ॥ मुरल कछु अं
तर तु महिम्ही ॥ जव जव देह धरी तव तहां तुम संग रही ॥ क
हां कसि कोउ तुम हि विवेक न एक वार हवां निहें ॥ मेरें तो तुम ही
प्राए जांन हू औरमन नहिं आंनिहें ॥ तव हि हिलि मिलि रास
कीनो जु वंसी वहु मंडलि जुरी ॥ कनक मरकत जपेंचि रची विच
कां न्हा वि चवि वनमारी ॥ ४ ॥ अद्भुत रास रच्यो गिरधर लाडिले
श्री वृषभान सुता सों हरि चांडिले ॥ अति आनंद वढ्यों गोपी
हरष भई ॥ निर्तत करि फेंहें भुज भरि स्यामल ई ॥ जल थल पवन
थंक्यो ॥ खग मृग तरु विथ्यक्यो ॥ देखत मदन जक्यो ॥ वरननि
सरनि तक्यो ॥ जीव सव निहूं भुवन मोहे अमर न भा विथ्य कि
त भए ॥ चंद्रमा रथ मध्य थाक्यो रास वस मोहन भए ॥ और न
रु फल औ फूल लागे और भए पल्लव कली ॥ श्री स्याम स्यामा
रास नायक गोपिका गन मंडली ॥ रास रंग रस अति वढ्यों भ
न गर्वित सुकुमारि ॥ ले हुं कंध प्रभु सों कहों अंतर भए दें प्या
रि ॥ अंतर भए दें प्यारी ॥ श्री राधा संग नें डारी ॥ प्रभु संतनि के सु
ख कारी ॥ दुष्ट मन गर्व प्रहारी ॥ भक्त वछल वपु धारी ॥ धरनिउ

धारनकारी ॥ बहुरि दृष्टि चितवत नवरङ्ग नंदकुँवर संग स्यामकहूं नाहि
आकुल व्है ली द्रिष्टि कें मुरझि परी धरमांहि ॥ ४ ॥ धरमुराछिप
तन महि जांनी ॥ सुख समार मांझ समांनी ॥ हां कृष्ण कृष्ण रटला
गी ॥ हरि अधरपांन अनुरागी ॥ ललिता गहि बांह जगाई ॥ तब
चौंकि उठी अकुलाई ॥ उहि कहति उठी हरि आए ॥ ज्यौं मनो र
गनिधि पाए ॥ सावधान जो हिन्हि ए भई नैंनार उघारि ॥ लालि
ता कौं मुख देखि कें भई विरह तन भारि ॥ ५ ॥ अति विकल भई बे
हाला ॥ कहु देखे हैं मदनगोपाला ॥ मोहि त्यागि भए नंदला
ला ॥ तनका तमदन जंजाला ॥ मुख सुंदर वचन रसाला ॥ वर
लोचन कमल विसाला ॥ मिलि करहु न मोहि निहाला ॥ ढूंढ
त वन वीथनि ताला ॥ चित ओर भए हैं कृपाला ॥ तुम देखे हूं दीन
दयाला ॥ जहां तहां खोजत फिरी चरणचिन्ह कहुं पाय ॥ बारबा
र अवलोकि कें नैंन चले ढहराय ॥ ६ ॥ वनवेली कुंजत जाई ॥ क
हु नाहि न मिले कन्हाई ॥ अंबक कुल वर खौ तन विरह विथा
हि पसूर्के ॥ खोजे वन वार वारा ॥ कहि कित सुख नंदकुमारा ॥ मोहि
नंदनंदन कयों त्यागी ॥ में अति ही परम अभागी ॥ नंदनंदन वसमे
मके प्रगट भए तेहि काल ॥ प्यारी कों मिलि सुख दियों मेटि विर
ह दुख जाल ॥ ७ ॥ मिलि मोहन व्रजबाला ॥ फिरि आय हि भए कृ
पाला ॥ पुनि रासमंडल विधि ठान्यों ॥ सबकों मद दूर खकान्यों
सुर असुर नागन साहे ॥ एहि रस रास विलास सबपोहै ॥ दिवि
दुंदुभि देव बजाए ॥ सुरनारि सुमन वरषाई ॥ जै जै धुनि लोक नि
गाए ॥ नसकिहुं भुवन भरि छाए ॥ रसरास सरसिक गुण भारी
श्रीराधा मोहन प्यारी ॥ सहसानन कहत न आवे ॥ जोहि निग
म नेति नित गावे ॥ सुख आनंद पुंज वढायों ॥ कोंजान सूरदे
गायों ॥ १ ॥ अथ श्री ठाकुर ठकुराइनि कौ विवाह राग मल्हार ॥ व्रजध
रि खौ पूजी ॥ जाके मन अभिलाष न दूजी ॥ दधि जे नंदपूतपति मे
रे ॥ जो पैंहोय अनुग्रह जेरे ॥ तकअनुग्रह करि वर दिवों जब वर्ष
भरि लों तप कियो ॥ त्रैलोक सुंदर पुरुषभूषण रूप गुन नाहि
न बियों ॥ २ ॥ तऊ व्रत टेरि बीरि सिंगारि सखियन कुंवरि बैठी आनी
जाहि ता कै एव्रत नेम संजम सो धरी विधि लाकनी ॥ ३ ॥ मुकुर
चिमेरे वनायों ॥ माथे धरि हरि वरु आयो ॥ तब स्यामपीन रक्कू
ले ॥ देखन दामिनी घनभूले ॥ दामिनी घन कों विचारो जब नि

॥सू॰सा॰ हरेंगो मुख छबी॥ कुंडल विराजत गंड मंडल नहीं सोभा ससि रवी॥
॥९५८ और कों न समान त्रिभुवन सकल गुन जा मांही॥ मनों मोरनि
र्तन संग डोलन मुकट की परछांहीं॥२॥ गोपी सब न्योतें आई
मुरली धुनि पों ठि बुलाई॥ विधि आनंद मंगल गाए॥ नव फूलनि
मंडप छाए॥ छाए जु फूलनि कुंज मंडप पुलिन में वेदी रची॥ बै
ठे जु स्यामा स्याम वर त्रैलोक की सोभा सची॥ उत कोकिला गान
करें कुलाहल इत सकल व्रज नारी॥ आई जु न्योतें ढूंढि सनेह रि
ति आनंद गारी॥३॥ रास मंडल भुज जोरी॥ स्याम सांवरे राधा गोरी॥
पानिग्रहन विधि कीनी॥ नव मंडप भ्रमि भांवरि दीनी॥ दीनी जो
भांवरि कुंज मंडप प्रीति गांठि हिरदें परी॥ सरद निसि पून्यों विमल
ससि निरखि दंपति सुभ घरी॥ गाए जु गीत पुनीत बहु विधि वे
द रुचि सुंदर धुनी॥ नंद सुत वृषभान तनया रास में जोरी बनी॥
४॥ भए मनमथ सेंन बराती॥ द्रुम फूले नाना भांती॥ सुख देत जन
जस गाए॥ तहां मधवा जे त्र बजाए॥ बाजे जि बाजन सकल नभ
सुर पुहुप अंजुलि बरसहीं॥ देवनारी बिमान बैठे जे जे सबद
करि हरखहीं॥ सूरदास सहि भयो आनंद पूजी मन की साधा॥ म
दन मोहन लाल दूलह दुलहिनि श्री राधा॥५॥ राग सारंग॥ कों
न तुम्हारी माय महा वे लो सब जग आप वस कीनो है॥ नेंक चितें
मुसिकाय कें उन सबनि कों मन हरि लीनो है॥१॥ कछु कुल क
र्म न जांन्यों या के रूप सबें रंग राचे है॥ बिनु देखें सम्मुख सुनें ज
गत न कोउ बचे है॥२॥ इनि बाननि लाज निमरियें कोउ पुरुष
न बांचन पावें है॥ जो कोउ सोवे सुख में नेह सो बतनाय जगा
वे है॥३॥ पहिरें राजीव के बकी सिर सेत उपरना सोहे है॥ कटि नीलों
लहंगा कसे सो कोजो निरखि न मोहे है॥४॥ चोली चतुरानन
ठगों सब अमर उपरनार तें है॥ अंजन रेख अवलोकि कें सब अ
सुर महामद माते है॥५॥ एक निरंतर रसन ठगे निमिष एक निले
संग सोवे है॥ एक निलें मंदिर खे ठें रचि एक नि बिरचि बिगोवे है
६॥ अकूपक पावा की सबें कछू कहें तो कहि यन जाहीं है॥ छबी
लनि के संग यों फिरें जैसे तन परछांहीं है॥७॥ सुनि ताकी सब अ
पतर सुक सनकादिक मुनि जागे है॥ लोक लाज सब छांडि कें उ
ठि धाय चले संग लागे है॥८॥ जोग जुगति बिसरी सबें उर कांम
क्रोध मद जागे है॥ नेंक दृष्टि पथ परगाई संकर समिरटों ना लागे है ९

www.vallabhacharyakrupa.org

ओरकहांलगिवरनियेंभूरिजलथलजीवजेतेहो॥ चतुरसि
रोमनिस्यामसुनोंगनिकहोंकहांलगिकेतेहो॥ ५॥ गहिलाज
नमरियेंसराजबसबकोउकहततुमहारीहो॥ सूरदासप्रभुब
रजिकेंकिनिमेंटहुकुलकीगारीहो॥ २॥ रा गा वि हू गा रो॥ नहिछू
टेंमोहनडोरनाहो॥ प्रथमव्याहविधिहेंरहोहेकंगनचारावि
चारि॥ रचिरचिपचिपचिगुथ्योबनायोनवलनिपुनवृजनारि
॥ १॥ वडेहोहुतवछोपिवहुसुनियेंगोकुलकेराय॥ केंकरजोरि
करोंविनतीछुवहुश्रीराधाजीकेपाय॥ २॥ यहनहोयगिरिकों
धरिवोहोसुनहुकुंवरगोपीनाथ॥ आपुनकोंतुमवडेकहावत
कांपनलागेहोहेरउहाथ॥ ३॥ वहुरिसमेंटिवृजसुंदरीमिलिरी
नीमांछिछुराइ॥ छोरहुवेगिकिआनहुअपनीजसुमतिमाय
बुलाइ॥ ४॥ पचिहारेकेसेंहनछूटतवंधीप्रेमकीडोरी॥ देखि
सखीयहरीतिदूंनकीमुरिनहसीमुखमोरी॥ ५॥ अवजिनिक
रहुसहायसखीरीछांडहुसकलसयांनप॥ सूलहिनिछोरिदूल
हकोंकंगनवोलिवचनहसभांन॥ ६॥ कमलकमलकरिनिए
हेपानिपियाकेलाल॥ अवककिमाबेसेलगेंरोमकटीलेना
ल॥ ७॥ नीलारासगोपालकीलेरिरसिकवरवांन॥ सदारहेंयह
अविचलजोरीवलिवलिसूरसमांन॥ ८॥ राग मारू॥ तुमसों
गारिकहांकहिदीजेहोसांरांनेरने॥ गुणवापनामकोंनकोलीजें
होजारवनेरने॥ गुणवापजाकोंनामकहियेंसातिगोतनजा
नियें॥ विनुरूपविनुअनुहारिकेसेंकेंविसारववांनियें॥ २॥
सबसोधिरहेनसोधिपायोविनुसुनेंकहांकीजियें॥ वालिजा
उंजारेरायतुमकोंगारिकहांकहिदीजियें॥ ३॥ तुम्हरीमातस
बकुलखोएहोजारेनेरने॥ सोकेंजोवलुनविगोएहोजारव
नेरने॥ ४॥ सोकेजुवलुवरिमोलिगोवेंफिरनिनिसिवासरव
नी॥ सिरसेनकरिपटलालरहगानीलचोलीविनतनी॥ ५
वलीमंदमुसिक्यायसुरनरनागमुजभीनरालिए॥ वालिजाउ
जारवनाथतुम्हरीमायकुलविनतुमकिए॥ ६॥ वेतोभूलिरहे
सवभोगीहेजारवनेरने॥ वसकिएवालनजोगीहोजारव
नेरने॥ वसकियेवालवहुतजोगीछत्रपतिकेतेकहें॥ ओर
अगजगजीवजलथलवनकेवुधिनहिसुधिलहें॥ ७॥ अति
खरेआतुरकांमकातरदेखिनितकेतुकनरा॥ अकुलायविसर

www.vallabhacharyakrupa.org

॥ सू॰सा नसंगताके फिरत भ्रम भूले भए ॥ ९ ॥ कछु कहि न जाय गति ताकी हो
॥ १५॰ जादवनंदने ॥ वह फिरति मदन मद छाकी हो जादवनंदने ॥ १० ॥
फिरति मेमत्त मदन छाकी । निलज कुचढ़ी कैं नहीं ॥ नित निरखि
निरखि जु खेल सोभा विकल ह्वै धावैं तहीं ॥ ११ ॥ एके गिरत परत
अचेत उरझत हो हू मद मन मागहो ॥ मुख वरनि कथा अनेक
ताकी कहूं न कहूं न वनें कही ॥ १२ ॥ वह नौ नित नौतन रति जोरें हो जा
दवनंदने ॥ चितवनि में चित चोरें हो जादवनंदने ॥ १३ ॥ चालनि
नि चित चुरावें चलन धर धीरन धरें ॥ फिरि चमकि चौप लगाय
चंचल तनहि तनक अंतर करें ॥ १४ ॥ एक भौंह की छबि निरखि यें सो
कोन जो न तन ते टरें ॥ इहि भांति परम सुजान सुंदरि नित नौतन
रति करें ॥ १५ ॥ अति ही कहि गुन परम सयाने हो जादवनंदने ॥
हें ठाकुर सब जग जाने हो जादवनंदने ॥ १६ ॥ सब ही के ठाकुर हें
कृपानिधि सुजस सब जग गाइयें ॥ अब लोक को उपहास आपु
नव रजि गारि गिया इयें ॥ १७ ॥ कहूं कहें ... पमाधव ओस्र
तन मूरई ॥ सूर प्रभु चतुर सुजान ... अवन ऐसी कूरई
१८ ॥ राग विहागरो ॥ फूल हेर खों गी ... जाइ ॥ उन रेसं केतवरवे
हि मिसु रेखन पाउ ॥ फूल गूंथि ... ले मालिनि ह्वै जाउ ॥ १ ॥
... नि स्यारे को ... तंबोलिनि ह्वै जाउ निरखिवें
नन सुख दें उ ॥ २ ॥ चंदन ... भूषन गढ़ि लेउ ॥ सुनारिनि
ह्वै जाउ निरखिवे नैंननि सुख दें उ ॥ ३ ॥ चंदन अरगजा सुगंध केसरि
धरि लेउ ॥ गंधिनि ह्वै जाय निरखिवे नैंननि सुख दें उ ॥ ४ ॥ मनिका
रि कनारद मुनि सिव विरंचि जंभनें ॥ नारद संग ह्वै दुंदुभी वाजे वरनि
मानें ॥ ५ ॥ तोरत जनन प्राण हरि कीने उछाह ॥ ब्रज की सब रीति भ
ई ब्रह्मा के आहु ॥ ६ ॥ डोरन के र छोरन को आई सकल वधाइ ॥
फूली फिरें सहचरी उर आनंद न माइ ॥ ७ ॥ गजवर गति आवन प
गु धार नगनि पाउ ॥ लटकन सिर सेहरो मनो सिखी सु खंड सुभा
उ ॥ ८ ॥ मोहन संग नागरि अंग सवें छवि विराजें ॥ गज रथ वाजी व्या
र वर छत्र साजें ॥ ९ ॥ दूलह हि निरखि वृषभान सुता अंग अंग भ्राजत
सूरदास प्रभु दूलह दूलह देखो व्रजराजत ॥ १० ॥ राग विहागरो ॥ वृषभा
ननंदनी अति छवि वनी ॥ श्रीवृंदावन चंद राधा निर्मल चांदनी ॥
१ ॥ स्याम अलक विच मोती दुति मंगा ॥ मन हूं कमल नसि व सीस
मंगा ॥ २ ॥ श्रवण ता टंक सो है चिबुक की कोति ॥ उनहारि चल्यो हैरा

www.vallabhacharyakrupa.org

हुव चक्र की भ्रांति ॥३॥ गोरे लिलाट सोहें सेंदूर कों विंदु ॥ मानिकी उप
मा देत कवि कों होय निंदु ॥४॥ चपल उनीदें नेंना लागत सुहाए ॥ ना
सिका चंप कलकली कों ढिंग अलि धाए ॥५॥ वदन मंजन नें अंजन
गारें दूरी ॥ कलंक रहित ससि पुनि कलापूरी ॥६॥ गिरि तें लता म
ई यह दूलम सुनी ॥ कंचन लता तें के गिरि भए सुनी ॥७॥ कंचन से
तन सोहें नीलांबर सारी ॥ कहूं निसा मध्य मनों दामिनि उजि
यारी ॥८॥ नखसिख सोभा मो पर वरनि न जाई ॥ तुम सी तुमही
राधा स्यांम मन भाई ॥९॥ यह छबि सूरदास सारद कें वांनी ॥ नें
दनंदन राजाधिराज राधिका देइरांनी ॥१०॥ राग देवगंधार ॥ रे
ऊ राजत स्यांमा स्यांम ॥ ब्रजजुवती मंडली विराजत देखत सुर
नर वांम ॥१॥ धन्य धन्य वृंदावन कों सुख सुरपुर कोनें कांम
धनि वृषभांन सुता मन मोहन धनि गोपनि कों गांम ॥२॥ इनकी
कों दासी सरि देहें धन्य पमर दकी जांम ॥ केसें हूं सुरजन मनुजा
पावें यह सुख नहिं जिहूं धांम ॥३॥ राग केदारो ॥ विराजत मोहन मं
डलरास ॥ स्यांमा स्यांम सुधा सरमानु कीडत विमल विलास
॥१॥ ब्रजवनिता सत जूथ मंडली मिलि कर परसकरी ॥ भुज मृना
ल भूषण भुज तनो रतन कंचन ढभरवरी ॥२॥ मृदु पद न्यास मंद म
लयानिल विगलित सीस निचोल ॥ पीत प्रसून सित सेत भुजा
चल सीन समीर रूकोल ॥३॥ गिरत कुसुम कवरी सी सनितें छू
ते हें उरहार ॥ सरद विंदु सिसु वरषि चली मनों जहां तहां जलधा
र ॥४॥ श्रानि कुंडल धर गिरत नन जानत हें श्रम जल भरे ॥ चरन पर
सतें चलत चहूं दिस मांनहु मीन न तरे ॥५॥ दसन कुंद दाडिम द्
ति दामिनि प्रगटित अहद तिजान ॥ अधर बिंब मधुर अमीक
न पीनम वदन समान ॥६॥ सुंदर वदन विलोल विलोचन अति
अति रंग रंगे ॥ प्रफुलकर पुंडरीक परमानहु खंजन जुगल खगे
॥७॥ विपुल पुलक कंचुकि वंद टूटे छूटें आनंद भए ॥ कुचजुग चक्र
वाक करुणा मिसि अंतर रेंनि गए ॥८॥ पृथु नितंब करभ वरक
मल पद नख मनि चंद्र अनूप ॥ मन हूं लुब्ध भयो वारिजल दते
इंदु किए दस रूप ॥९॥ चरन रुनित नूपुर वटि किंकिनि कंगन
कर जलनाल ॥ तरुनत नय समेत सहस सुलमुखरित मधुर
मराल ॥१०॥ ताल मरंगावासुरी उपजत तालत रंग ॥ निकट विरप
दुन कूलकुलित मनों पेंवल वटत अनंग ॥११॥ सूरश्वि कोरस

॥कृ०ना हितसुरललनामोहेखगनरनाग। विथक्योंउडपतिव्योमविंब
॥१५२ गनिश्रीगोपालअनुराग॥५॥ रागमल्हार॥ रासरसिकगोपाल
लालव्रजबालसंगविहरतवृंदावन॥ सरदसुरनिसुरलीकाज
तिराजतअधरनिधुनिसुनिमोहेसुरनरगंधर्वगन॥१॥ तरुन
कोंनूतनरुतमालवेंनटतरुणगोपिकानृत्यनिकटपटपी
तांबरनीलांबरतननतन॥ निर्तेकरतउघटतसंगीतपरत्ता।
थेईथेईताथकहतसरअभुनिरखिपरस्पररीझतमनमन॥२
रागमलार॥ मानोंमाईघनघनअंतरदामिनि॥ घनअंतर
सोभितहरिभांमिनि॥१॥ जमुनापुलिनमालिकामनोहरसर
दसुहाईजामिनि॥ सुंदरससिगुनरूपरागनिधिआनंदमन
विश्रामिनि॥२॥ रचिरासमिलिरसिकरायसोंभेरभईबरबामि
नि॥ रूपनिधानस्यामघनसुंदरअंगअंगअभिरामिनि॥३
खंजनमीनमयूरविहंससिषिकभेरभईगजगामिनि॥ कोगा
तिगिनेंसूरनामरसंगकोंमविमोहेदासामिनि॥४॥ रागविह
गरो॥ आजुनिसिसोभितसरदसुहाई॥ सीतलमंदसुगंधपव
नहेंरोमरोमसुखदाई॥१॥ जमुनापरमपुनीतपुलिनरुचिर
चिमंडलीवनाई॥ राधावामअंगपरकरधरिमध्यहिकुंवर
कन्हाई॥२॥ कुंडलसंगताटंकएकभएजुगलकपोलनिझाई
एकउरगमानोंगिरिऊपरकेंससिउदेंकराई॥३॥ चारिखकोर
परेमानोंफंदचंचलतहेंचंचलताई॥ उडपंगनितनिरखेनिर
खिलजिसरदासबलिजाई॥४॥ रागकेदारो॥ आजुहरिऐसोंरा
सरच्यो॥ श्रवतसुन्योंनकबहूंअबलोंयोंयहसुखकहूंमच्यो
॥१॥ अयमहिसबसमाजसाजसुरसबमोहेकोउनवच्यो॥ एक
हिसुरसुमारगवरस्वरकोजानेंकोकवाहिनच्यो॥२॥ गनगुण
मदअभिमानअधिकरुचिलेलोचनमनतहंरसच्यो॥ सिव
नारदसारदाकहतयोंहमइतनेदिनवादिपच्यो॥३॥ निरखिनें
नरसखीनिरजनरुचिकामकटकफिरिकलहमच्यो॥ सूध
नुकधीरजनरह्योंनबउलटिअनंगनच्यो॥४॥ रागकेदारो
आजुहरिअद्भुतरासउपायो॥ एकहिसुरसबमोहिनकीने
मुरलीनादसुनायो॥१॥ अचलचलेचलथकितभएसबमु
निजनध्यानभुलायो॥ चंचलपवनपच्योंनहिडोलतजमु
नाउलटिबहायो॥२॥ थकितभयोचंद्रमासहितमृगसुधास

www.vallabhacharyakrupa.org

मुहुंवजायो ॥ सूरस्यांम गोपिनु सुख दायक नायक रस सिखा
यो ॥ ३ ॥ राग सोरठ ॥ मोहन पट्ट सुख कहां धरयो ॥ जो सुख रास में
निउपजायो त्रिभुवन मन हरि रयो ॥ १ ॥ मुरली सबद सुनत अैसो
को जो व्रतनतें न टरयो ॥ वर्व्हेंनको उमोहितसब कीन्हे प्रेम उद्द
त करयो ॥ २ ॥ उलटिकंम तन कांम प्रकास्यो अगुन रूप धरयो
सुरहरसमिवनारद सारद कहत न कह्यो परयो ॥ ३ ॥ राग विहा
गरो ॥ आजु निसि रास रंग हरि कीन्हो ॥ ब्रज वनिता विच स्यांम
मंडली मिलि सबको सुख दीनो ॥ १ ॥ सुर ललना सुर सहित विवि
मोहे रह्यो मधुर सुरगांन ॥ निर्तेक रतउ घटत नाना विधि सु
नि धुनि विसरयो ध्यांन ॥ २ ॥ मुरली सुनत भए सब व्याकुल न
भ धरनी पाताल ॥ सूरस्यांम सिनको न किए वस रचि रचि रा
स विलास ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ रास रस मुरली ही तें जान्यो ॥ स्यांम
अधर पर वैठि नाद कियो मारग चंद्र भुलान्यो ॥ १ ॥ धरनी जी
व जल थल के मोहे नभ मंडल सुर थाके ॥ त्रिण द्रुम सलिल प
वन गति भूले श्रवण शब्द परयो जाके ॥ २ ॥ वच्यो नहीं पाताल
रसातल कितिक उदै लों भान ॥ नारद सारद सिव यह भाखत क
छु तन रह्यो न सयांन ॥ ३ ॥ यह अपार रस रास उपायो सुन्यो न देख्यो
नैंन ॥ वन मृग धुनि सुनि लुलित वल्यो स्यांम अधर सुनि वैन ॥ क
हत रमा सों सुनि सुनि प्यारी विहरत रह्यो वन स्यांम ॥ सूर कहां
हम कों अैसो सुख जो विलसत ब्रज बांम ॥ ५ ॥ राग केदारो ॥ जी
ती जीती है रन वंसी ॥ मधुकर सूत वदत वंदी पिक मागध म
दन प्रसंसी ॥ १ ॥ मथ्यो मांन वल दर्प महीपति जुवति जूथ गहि
आन्यो ॥ वन कों दंड ब्रह्मंड भेद करि सुरसन्मुख सर तान्यो ॥ २
ब्रह्मादिक सिव सनक सनंदन वोलत जै जै वाने ॥ राधापति
सर्वस अपने दें हितनांहि पविकांने ॥ ३ ॥ खग मृग मीन सुमा
रकि एसव जड जंगम जित भेष ॥ छाजत छत मदमोह कव
च कटित जतन नि नैंन निमेष ॥ ४ ॥ अपनी अपनी ठकुराइ निकी
काढत हैं भुव रेख ॥ वैठि पीठि पान गरजत हैं देखि सब निअ
वसेष ॥ ५ ॥ रवि कों रथ लें रह्यो सोम कों रसकला समेत
रह्यो जन्त्र रस रास राजसं हंरा विपनि मेंकेत ॥ ६ ॥ दास मांन
पर आंन प्रेम रस वढ्यो माधुरी हेत ॥ अधिक रसो गोपाल तहां
हें सूर सब निसुख देत ॥ ७ ॥ श्री रास विलास श्री गोपाल कुं जा ॥

www.vallabhacharyakrupa.org